हिन्दी

व्याकरण एवं रचना

Teachers' Manual

कक्षा 6 से 8

हिन्दी व्याकरण कक्षा – 6

अध्याय-1 भाषा, लिपि एवं व्याकरण

● *पुस्तक से*

1. (क) भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मनोभावों एवं विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा दूसरों के मनोभाव एवं विचार सरलता से हम तक पहुँचते हैं।

(ख) भाषा के दो रूप हैं– (1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा। एक तीसरा रूप सांकेतिक भाषा को भी माना गया है।

(ग) **राजभाषा**—यह सरकारी कार्यालयों की कामकाजी भाषा है। हिन्दी के अलावा अंग्रेजी तथा उर्दू हमारी राजभाषा है।

मातृभाषा—बालक द्वारा अपने घर-परिवार में सीखी गई भाषा अथवा मातृभूमि की भाषा मातृभाषा कहलाती है।

(घ) 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। क्योंकि 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया था।

● *आस-पास से*

2. मैं पश्चिमी राजस्थान का निवासी हूँ। मेरी मातृभाषा मारवाड़ी है।
3. नेपाल की मुख्य भाषा नेपाली है। इसकी लिपि देवनागरी है।
4. मेरी अंग्रेजी की शिक्षिका की मातृभाषा हाड़ौती है।
5. (क) ✗, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✗, (ङ) ✓, (च) ✗
6. (क) देवनागरी, (ख) शुद्ध, (ग) 14 सितम्बर, (घ) मातृभाषा, (ङ) लिखित।

● *देखिए और लिखिए*

भाषा का लिखित रूप– ई-मेल, पत्र, पुस्तक।

भाषा का मौखिक – भाषण, वार्तालाप, मोबाइल फोन पर बात करना।

भाषा का संकेतिक रूप – बच्चे का रोना, पक्षियों की चहचहाअट, पुलिस द्वारा ट्रैफिक नियंत्रण।

● *खोजिए*

1. (क) संस्कृत (ख) प्राकृत
2. (क) पद्मनाभ कवि कृत कान्हडदेप्रबंध (ख) बेलि क्रिसन रुकमणी री

● *स्वयं करिए*

1. पश्चिमी राजस्थान – मारवाड़ी
2. उत्तर-पूर्वी राजस्थान – मेवाती, अहीरवाटी
3. मध्य-पूर्वी राजस्थान – ढूँढाडी, हाडौती
4. दक्षिण-पूर्वी राजस्थान – मालवी
5. दक्षिणी राजस्थान – निमाड़ी

एक अन्य स्वतंत्र भाषा बंजारा है।

अध्याय-2 वर्ण-विचार

● *पुस्तक से*

1. भाषा की सबसे छोटी व अखंड इकाई अथवा ध्वनि 'वर्ण' कहलाती है।
2. **ह्रस्व स्वर—** जिन स्वरों के उच्चारण में कम से कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहा जाता है। इनकी संख्या चार है— अ, इ, उ तथा ऋ।
   दीर्घ स्वर— जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा अधिक समय लगे तो उन स्वरों को दीर्घ स्वर कहते हैं। ये सात हैं— आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
3. हिन्दी में कुछ वर्ण न तो स्वर ही होते हैं और न ही व्यंजन। वे अयोगवाह कहलाते हैं। जैसे— अं, अः।
4. **स्पर्श व्यंजन—**इसका उच्चारण करते समय जीभ मुख के विभिन्न भागों जैसे—कंठ, तालु मूर्धा, दन्त अथवा होठ में से किसी एक का स्पर्श करती है। उदाहरण— क, च, ट, त, प आदि ।
5. **व्यंजन के भेद—**उच्चारण के आधार पर व्यंजन के तीन भेद हैं— 1. स्पर्श व्यंजन, 2. अंत:स्थ व्यंजन, 3. ऊष्म व्यंजन।

● *आस-पास से*

*	**बंगाली रूप**	**दक्षिणी रूप**
	रसगुल्ला	गुलाब जामुन
	भारत	भारत
	महक	सुगंध
	भोजन	आहार
	बहुत अच्छा	बहुत अच्छा

* इतिहास — इ + त् + इ + ह् + आ + स् + अ
पंजाबी — प् + अं + ज् + आ + ब + ई
स्थान — स् + थ् + आ + न् + अ
आशीर्वाद — आ + श् + ई + र् + व् + आ + द् + अ
उच्चारण — उ + च् + च् + आ + र् + ण् + अ।
रेखाचित्र — र् + ए + ख् + आ + च् + इ + त् + र् + अ
संस्कृति — स् + अं + स् + क् + र् + अ + त + इ

* (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✗, (घ) ✓, (ङ) ✗

● *स्वयं करिए*

*		
	(क) फण (साँप का)	कला-कौशल
	(ख) दंड	सुंदर
	(ग) राज्य	रहस्य
	(घ) खोदा गया	ईश्वर
	(ङ) भोजन करना	घर, मकान
	(च) थोड़ा-सा	बुढ़ापा

*	सन्यासी	[✗]	संन्यासी	[✓]
	बिमारी	[✗]	बीमारी	[✓]
	वधू	[✗]	वधु	[✓]

धुआँ	[✓]	धुँआ	[✗]
मेंढक	[✓]	मेढक	[✗]
त्योहार	[✓]	त्यौहार	[✗]

*

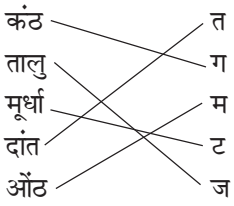

कंठ	त
तालु	ग
मूर्धा	म
दांत	ट
ओंठ	ज

* द्वित्व व्यंजन– पत्ता, बच्चा, कच्चा, अम्मा, टप्पा।
संयुक्त व्यंजन– क्षत्रिय, कक्षा, त्रिशूल, ज्ञानी, श्रवण।
वर्ण संयोग या संयुक्ताक्षर– विद्या, नित्य, सस्ता, अच्छा, प्रत्येक।

अध्याय–3 शब्द–विचार

● *पुस्तक से*

1. **शब्द**–वर्णों या अक्षरों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।
2. **शब्द के भेद**–शब्द के चार भेद हैं– 1. उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर 2. अर्थ के आधार पर 3. व्युत्पत्ति या रचना के आधार पर 4. प्रयोग के आधार ।
3. **यौगिक शब्द**–वे शब्द जो अनेक सार्थक शब्दों के मेल से बनते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं। जैसे–पुस्तकालय, जलयान।
   योगरूढ़ शब्द–वे शब्द जो यौगिक तो होते हैं किन्तु सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते है। जैसे– महात्मा, हिमालय।
4. **अंतर**–जो शब्द लिंग, वचन व कारक के अनुसार परिवर्तित हो जाते है, वे विकारी शब्द कहलाते है। जो शब्द लिंग, वचन व कारक के अनुसार नहीं बदलते, वे अविकारी शब्द होते हैं।

*

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
कंटक	**काँटा**	जिह्वा	**जीभ**
कूप	**कुँआ**	अश्रु	**आँसू**
स्वर्ण	**सोना**	अस्थि	**हड्डी**
नासिका	**नाक**	दुग्ध	**दूध**
हस्त	**हाथ**	कर्ण	**कान**
पुष्प	**पुहुप**		

* (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✓

*

हिमालय	**योगरूढ़ शब्द**	फल	**रूढ़ शब्द**
विद्यालय	**यौगिक शब्द**	वायुयान	**यौगिक शब्द**
त्रिनेत्र	**योगरूढ़ शब्द**	गजानन	**योगरूढ़ शब्द**
समुद्र	**रूढ़ शब्द**	प्रधानमंत्री	**योगरूढ़ शब्द**

*

अफसोस	**खेद**	हवा	**वायु**
पैंट	**पतलून**	जेल	**कारागार**

खबर	**समाचार**	इज़्जत	**सम्मान**
खत	**पत्र**	शर्ट	**कमीज**
डॉक्टर	**चिकित्सक**	ऑफिस	**कार्यालय**

*	**विकारी शब्द**	**अविकारी शब्द**
	घोड़ा	अथवा
	चूहा	जोर

● *खेल-खेल में*

अंग्रेजी शब्द	**टेबिल स्टेशन**	अरबी शब्द	**नकल,**	**किताब, साबुन**
देशज शब्द	**डिबिया**	पुर्तगाली शब्द	**सुरंग**	
तत्सम शब्द	पत्र **अश्रु, दिन**	तद्भव शब्द	**खेत**	
फारसी शब्द	आलू **जूता, सरदार, जमीन**	तुर्की शब्द	**कुली**	

● *स्वयं करिए*

प्ले स्टोर, मेसेंजर, फाइल मैनेजर, फोल्डर, टूल्स, गैलरी, मैसेज, गूगल, मेल, ड्राइव, यू ट्यूब, क्रोम आदि।

अध्याय–4 संधि

● *पुस्तक से*

1. निकटवर्ती वर्णों अथवा स्वरों के मेल से होने वाले सार्थक परिवर्तन को संधि कहते हैं।
2. संधि तीन प्रकार की होती हैं।

   1. **स्वर संधि—** दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते है। उदाहरण— गिरि + ईश (ई + ई = ई) गिरीश।

   2. **व्यंजन संधि—** जब किसी व्यंजन का किसी स्वर अथवा व्यंजन से मेल होकर सार्वग परिवर्तन हो जाए तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं। उदाहरण— दिक् + गज = दिग्गज।

   3. **विसर्ग संधि —** विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से होने वाले सार्थक परिवर्तन को विसर्ग संधि कहते हैं। उदाहरण— अध: + गति = अधोगति।
3. **स्वर संधि के उदाहरण—** दीप् + अवली = दीपावली। राजा + इंद्र = राजेंद्र।
   व्यंजन संधि के उदाहरण— जगत् + ईश = जगदीश। दिक् + अंबर = दिगंबर।

● *आसपास से*

*	महा	+ आत्मा	= महात्मा	दीर्घ संधि	
	सूर्य	+ उदय	= सूर्योदय	गुण संधि	
	ने	+ अन	= नयन	अयादि संधि	
	विद्या	+ आलय	= विद्यालय	दीर्घ संधि	

*	दीर्घ संधि	पर	+ आधीन	= पराधीन।	स्व	+ अर्थ	=	स्वार्थ।
	गुणसंधि	हित	+ उपदेश	= हितोपदेश।	राजा	+ इन्द्र	=	राजेन्द्र।
	वृद्धि संधि	एक	+ एक	= एकैक ।	पुत्र	+ ऐषणा	=	पुत्रैषणा।
	यण संधि	यदि	+ अपि	= यद्यपि ।	अति	+ अधिक	=	अत्यधिक।
	अयादि संधि	ने	+ अन	= नयन ।	पौ	+ अन	=	पवन।

❋ **संधि विच्छेद**

दु : + बल, नि: + रोगी, जगत् + ईश, पुस्तक + आलय, यो + इत्र = पवित्र महा + उत्सव

❋ सद्गति, जगन्नाथ, निराहार, महोषध, सदैव, गायक, उज्ज्वल, रजनीश।

● ***खेल-खेल में***

❋ सदैव, उज्ज्वल, जगन्नाथ, कवीन्द्र, पवन, सप्तर्षि

❋ सत्	+	मार्ग	=	सत्मार्ग	[ ]	सन्मार्ग	[✓]	सच्चा मार्ग	[ ]
नि:	+	रोग	=	नि: रोग	[ ]	निरोग	[ ]	नीरोग	[✓]
नर	+	ईश	=	नरेश	[✓]	नारीश	[ ]	नरीश	[ ]
पितृ	+	आज्ञा	=	पितृाज्ञा	[ ]	पित्राज्ञा	[✓]	पितृज्ञा	[ ]

● ***स्वयं कीजिए***

1. स्वागत — सभी अतिथियों का स्वागत करें।
2. वातावरण — आज मोहक वातावरण है।
3. सदैव — सदैव सत्य की विजय होती है।
4. उल्लास — वसंत का उल्लास चारों ओर छा रहा है।
5. निश्चय — मैंने जयपुर जाने का निश्चय कर लिया।
6. पवित्र — पुष्कर एक पवित्र तीर्थ है।
7. शिवालय — सोमवार को शिवालय में भक्तों की भीड़ रहती है।
8. विद्यार्थी — सभी विद्यार्थी कक्षा में बैठे थे।
9. विद्यालय — आज विद्यालय की छुट्टी है।
10. पर्यटन — कोरोना के कारण पर्यटन व्यवसाय ठप हो गया ।

अध्याय-5 शब्द भेद

● ***पुस्तक से***

1. समान अर्थ देने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। जैसे— नदी, सरिता, वाहिनी, तटिनी।

2. **नभ—**व्योम, आकाश, गगन।

पवन—वायु, समीर, गंधवह, मारुत

❋ आग	पावक	पुत्र	बेटा
घोड़ा	अश्व	गाय	धेनु
रात	रात्रि	चंद्रमा	मयंक
पक्षी	खग	हाथ	कर
देवता	सुर	गंगा	देवनदी

❋ तलवार-खड्ग, असि — सरस्वती-वीणाधारिणी, शारदा

नेत्र-नयन, चक्षु — कमल-नीरज, जलज

घर- सदन, आवास — घोड़ा-अश्व, तुरग

सर्प- विषधर, भुजंग — नदी-सरिता, वाहिनी

❋ 1. बेटा — पुत्र, तनय 2. बेटी — पुत्री, सुता 3. माँ — माता, जननी 4. राजा — नृप, नरेश

5. उपवन— बाग, उद्यान 6. सवेरे — सुबह, प्रात: 7. तात — पिता, जनक

* पृथ्वी	[ ]	अवनि	[ ]	दिनकर	[✓]	वसुधा	[ ]
नदी	[ ]	सलिला	[ ]	तटिनी	[ ]	नदीश	[✓]
कमल	[ ]	देवेश	[✓]	जलज	[ ]	राजीव	[ ]
आम	[ ]	रसाल	[ ]	नग	[✓]	आम्र	[ ]
सूर्य	[ ]	रश्मि	[✓]	रवि	[ ]	भास्कर	[ ]
बहन	[ ]	सुत	[✓]	भगिनी	[ ]	सहोदरा	[ ]

* रात	– रात्रि	आँख	– नयन	नदी	– तटिनी		
सूर्य	– भास्कर	जल	– वारि	पृथ्वी	– धरती		
अमृत	– सुधा	पादप	– पेड़	पुष्प	– सुमन		
अँधेरा	– तप	शेर	– वनराज	असुर	– दैत्य		
माता	– जननी	घर	– आवास				

नोट– छात्र उपर्युक्त पर्यायवाची शब्द–युग्मों की विभिन्न रंगों से रँगे।

विलोम (विपरीतार्थक) शब्द

● *पुस्तक से*

1. किसी शब्द का विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाला शब्द विलोम शब्द कहलाता है। जैसे– राजा–रंक।

● *आस-पास से*

सूची एवं विलोम शब्द

छत	फर्श	शीतल	गर्म	उजला	धुँधला
प्रिय	अप्रिय	भीतर	बाहर	सैकड़ों	दो–चार
महँगा	सस्ता	पिता	माता	चतुर	मूर्ख
भाई	बहिन	बड़ा	छोटा	पति	पत्नी
शुद्ध	अशुद्ध	मालिक	नौकर	स्वच्छ	गंदा
भूखा	तृप्त, भरपेट	दिन	रात	सबेरे	शाम को
सोता	जागता	विक्रेता	ग्राहक		

2. (क) पक्के (ख) सँकरी (ग) खट्टे (घ) मृत्यु (ङ) सभ्य (च) अनुचित

3.

हिंसा	**अहिंसा**	स्वाधीन	**पराधीन**
प्रत्यक्ष	**अप्रत्यक्ष**	उत्कृष्ट	**निकृष्ट**
सौभाग्य	**दुर्भाग्य**	आस्तिक	**नास्तिक**
आयात	**निर्यात**	अनुकूल	**प्रतिकूल**
उत्तीर्ण	**अनुत्तीर्ण**	अतिवृष्टि	**अनावृष्टि**

4.

शत्रु – मित्र	आदमी – औरत	प्रात:काल – सायंकाल	धरती – आकाश
देव – असुर	राजा – रंक	श्रमिक – अधिकारी	वर्षा – सूखा

5. (क) विक्रय (ख) नास्तिक (ग) अपयश (घ) अहिंसा (ङ) दुर्गम (च) अन्याय

● *स्वयं करें–*

	विलोम शब्द	**वाक्य प्रयोग**
1.	अमीर–गरीब	भगवान की नजर में सभी अमीर–गरीब बराबर होते हैं।
2.	अच्छा–बुरा	हर किसी को अपने कर्मों से ही अच्छा–बुरा परिणाम मिलता है।

3. उचित-अनुचित — किसी कार्य को करने से पहले उचित-अनुचित का विचार कर लेना चाहिए।
4. जन्म-मृत्यु — प्रत्येक जीवधारी के जन्म-मृत्यु का समय पूर्व निर्धारित होता है।
5. दंड-पुरस्कार — हमें अपने कर्तव्य का पालन बिना किसी दंड या पुरस्कार के कारण करना चाहिए।
6. स्वर्ग-नरक — कर्मों के अनुसार पृथ्वी पर ही प्राणी को स्वर्ग-नरक भोगना पड़ता है।
7. यश-अपयश — अच्छे कामों से यश तथा बुरे कामों से अपयश मिलता है।
8. शत्रु-मित्र — शत्रु-मित्र व्यक्ति अपने व्यवहार से बनाता है।
9. सुख-दुख — सुख-दुख जीवन में एक सिक्के के दो पहलू के समान हैं।
10. लिखित-मौखिक — भाषा के दो रूप हैं— लिखित और मौखिक।

वाक्यांश के लिए एक शब्द

● *पुस्तक से*

* सत्याग्रही — सत्य के प्रति आग्रह रखने वाला।
  शिक्षक — शिक्षा देने वाला
  सत्यवादी — जो हमेशा सत्य बोलता हो
  नभचर — आकाश में विचरण करने वाला
  वक्ता — बोलने वाला
  पौराणिक — पुराण से संबंधित
  अजातशत्रु — जिसका कोई शत्रु न हो।

* जो आँखों के सामने न हो — अप्रत्यक्ष
  पर्वत में रहने वाला — पर्वतीय
  जल-थल दोनों में रहने वाला — उभयचर
  जो बहुत बोलता है — वाचाल
  कविता रचने वाला — कवि
  जिसका कोई शत्रु न हो — अजातशत्रु
  नभ में विचरने वाला — नभचर

* (क) पौराणिक (ख) माँसाहारी (ग) दर्शनीय (घ) मितभाषी (ङ) आस्तिक (च) अजर-अमर

* 1. दुर्गम 2. सर्वज्ञ 4. नीरस 5. साकार 8. ग्रामीण
  7. अजात शत्रु 10. सदाचारी 6. निकम्मा 3. पठनीय 9 अजर

● *स्वयं कीजिए*

भाषा में आकर्षण उत्पन्न करने के लिए तथा कथन को संक्षिप्त रूप में व्यक्त करने के लिए वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण—इस पर्वत की चोटियाँ आकाश को छू रही हैं = इस पर्वत की चोटियाँ गगनचुम्बी हैं।

श्रुतिसम या समरूप भिन्नार्थक शब्द

● *पुस्तक से*

1. (क) सुनने में समान परंतु बनावट व अर्थ में भिन्न शब्द श्रुतिसम या समरूप भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं। जैसे—
   ग्रह- गृह = नक्षत्र - घर।
   (ख) मात्र — थोड़ा-सा, केवल
   मातृ — माँ, माता।

2.

	शब्द	अर्थ	वाक्य
(क)	ग्रह	नक्षत्र	हमारे सौरमंडल में नौ ग्रह पाए जाते हैं।
	गृह	घर	रमेश का गृह दो मंजिला है।
(ख)	अवधि	समय	रामजी के वनवास की अवधि चौदह वर्ष थी।
	अवधी	बोली	रामचरितमानस अवधी भाषा में लिखा है।
(ग)	आदि	आरंभ	आदिकाल में मानव जंगलों में रहता था।
	आदी	अभ्यस्त	सौरभ दूध पीने का आदी है।
(घ)	दीन	गरीब	दीन व्यक्ति भिक्षा माँग रहा है।
	दिन	दिवस	लगातार चार दिन से अविराम बारिश हो रही है।

3.

(क)	अर्जुन ने (धेनु) में बाण चढ़ाया।	अर्जुन ने धनु में बाण चढ़ाया।
(ख)	महाराणा प्रताप अत्यंत (सूरवीर) थे।	महाराणा प्रताप अत्यंत शूरवीर थे।
(ग)	माँ ने (शील) में सब्जी का मसाला पीसा।	माँ ने शिल में सब्जी का मसाला पीसा।
(घ)	राम, श्याम (ओर) घनश्याम फुटबॉल खेल रहे हैं।	राम, श्याम और घनश्याम फुटबॉल खेल रहे हैं।
(ङ)	गोलकुंडा का (कीला) अत्यंत मजबूत है।	गोलकुंडा का किला अत्यंत मजबूत है।

4. कोश कोष, चालक, अनल, अन्न।

अनेकार्थक शब्द

● *पुस्तक से*

1.

कुल	– जोड़, वंश, (झंडा)	योग		नग	– पर्वत, (बादल,) (सर्प)	वृक्ष, नगीना
मित्र	– दोस्त, (सेना,) सखा	मीत		घन	– हथौड़ा, (विष्णु,) बादल	घना
पद	– चरण, (देह,) ओहदा	शब्द		पानी	– जल, सम्मान, (धतूरा)	कांति
घट	– (घाट,) कम, हृदय	घड़ा		कर	– हाथ, सूँड, (कसम)	किरन
वर	– (ईश्वर,) वरदान, दूल्हा	श्रेष्ठ		हरि	– बंदर, (हाथी,) विष्णु	सूर्य

2.

पत्र	पत्ता	कनक	धतूरा
फल	नतीजा	चपला	लक्ष्मी
गुरु	हथौड़ा	घट	कम
गुण	स्वभाव	अज	बकरा

3.

	शब्द	अर्थ	वाक्य
(क)	अक्षर	वर्ण	अन्वी सुन्दर अक्षर लिखती है।
		ब्रह्म	परमात्मा को अक्षर भी कहते हैं।
(ख)	पत्र	पत्ता	पेड़ से पत्र गिर रहे हैं।
		चिट्ठी	राहुल ने कक्षाध्यापक को प्रार्थना–पत्र लिखा।
(ग)	मंगल	शुभ	प्रात:काल ईश्वर–स्मरण मंगलदायक है।
		सप्ताह का दिन	कल मंगलवार को मैं जयपुर जाऊँगा।
(घ)	कुल	वंश	महाराणा प्रताप वीर कुल में पैदा हुए थे।
		जोड़	हिसाब कुल कितना हुआ ?

4. घट नाग सुर तीर

● *खेल-खेल में*

सुधा – दूध, अमृत । दल – सेना, भाग । बल – शक्ति । गुरु – शिक्षक

अध्याय-6 वाक्य

● *पुस्तक से*

1. दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।
2. प्रयोग के आधार पर वाक्य के दो प्रमुख भेद हैं–

(1) अर्थ के आधार पर—विधानवाचक वाक्य, निषेधवाचक वाक्य या नकारात्मक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, इच्छावाचक वाक्य, संकेतवाचक वाक्य, संदेहवाचक वाक्य, आज्ञावाचक वाक्य, विस्मयवाचक वाक्य।

(2) संरचना या बनावट के आधार पर—सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य।

3. **संयुक्त वाक्य**—वह वाक्य जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य योजकों (और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, किन्तु, परन्तु, तो, नहीं, लेकिन, पर इत्यादि) द्वारा जुड़े हों, संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।

मिश्र वाक्य—वह वाक्य जिसमें एक वाक्य प्रधान और दूसरा वाक्य आश्रित या गौण हो, मिश्र वाक्य कहलाता है।

4. जिस वाक्य में कार्य पूर्ण होने में संदेह या संभावना व्यक्त की जाती है, वह संदेहवाचक वाक्य कहलाता है। जैसे– शायद कल सभी कक्षा में उपस्थित रहें। अब आप जा सकते है।

* (क) सुहैल ने आज शतक मारा।
कर्त्ता– सुहैल कर्म – शतक
क्रिया – मारा पूरक – ने
विस्तारक – आज

(ख) ईशमंत रोजाना गुरुद्वारा जाती है।
कर्त्ता– ईशमंत कर्म – गुरुद्वारा
क्रिया – जाती है पूरक –
विस्तारक – रोजाना

(ग) मोहन हर व्यक्ति की मदद करता है।
कर्त्ता– मोहन कर्म – व्यक्ति
क्रिया – करता है। पूरक – मदद
विस्तारक – हर

(घ) मैंने सुबह-सुबह नाश्ता कर लिया था।
कर्त्ता– मैंने कर्म – नाश्ता
क्रिया – कर लिया था पूरक – ही
विस्तारक – सुबह-सुबह

* (क) विस्मयवाचक – अहा ! कितना सुंदर दृश्य है।
हाय ! मैं लुट गया।

(ख) इच्छावाचक – मैं चाहता हूँ, सब खुश रहें ।
ईश्वर तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करे।

(ग) प्रश्नवाचक – आपको किससे काम है?
कार अचानक कहाँ गायब हो गई ?

(घ) निषेधवाचक – महाराणा प्रताप ने अकबर से हार नहीं मानी।
कृपया फूल न तोड़ें।

(ङ) आज्ञावाचक – कल सभी छात्र कक्षा में उपस्थित हों।
अब आप जा सकते हो।

* (क) उद्देश्य – आदिमानव विधेय – अपनी रक्षा के लिए गुफाओं में रहते थे।
(ख) उद्देश्य – राम विधेय – भला रावण से हार मानने वाले थे।
(ग) उद्देश्य – पत्रकार के विधेय – प्रश्न का क्या आपके पास कोई जवाब नहीं है?

(घ) उद्देश्य – हामिद ने विधेय – चिमटा लिया और कंधे पर रख लिया।

* (क) तथा (ख) या (ग) अथवा (घ) परंतु

* (क) सोहन क्या खा रहा था ? (ख) आज बारिश होगी।
(ग) शायद फसल लहलहा रही हो। (घ) क्या आप उठ जाएँगे ?
(ङ) वाह ! कश्मीर सुंदर है। (च) यदि मोहन मेहनत करेगा तो कक्षा में अब्बल आएगा।

* (क) मेरे लिए पुस्तक लेकर सोहन मेरे घर आया।
(ख) चिड़िया उड़ी और पेड़ पर बैठ गई।
(ग) मेरे घर के पास ही एक पार्क है जो सुंदर और बड़ा है।

अध्याय-7 उपसर्ग, प्रत्यय एवं समास

उपसर्ग

● *पुस्तक से*

1. जो शब्दांश किसी शब्द के पूर्व जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन करके कुछ विशेषता लाते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।
2. हिन्दी में चार प्रकार के उपसर्ग होते हैं– 1. संस्कृत उपसर्ग, 2. उर्दू उपसर्ग, 3. हिन्दी उपसर्ग, 4. संस्कृत के अव्यय।
3. हिन्दी उपसर्ग– 1. अध – (आधा) अध पका, अध कच्चा। 2. पर – (दूसरा,) परलोक, परदेशी।
संस्कृत उपसर्ग– 1. अ – अभाव, अविश्वास, अधर्म। 2. आ – (सहित, तक) आसक्त, आकण्ठ, आसमुद्र।

*

*	**शब्द**	**उपसर्ग**	**नया शब्द**	**भेद (उपसर्ग)**
	देसी	पर	परदेसी	हिन्दी उपसर्ग
	पता	ला	लापता	उर्दू उपसर्ग
	होनी	अन	अनहोनी	हिन्दी उपसर्ग
	शासन	अनु	अनुशासन	हिन्दी उपसर्ग
	जय	परा	पराजय	हिन्दी उपसर्ग
	लोक	पर	परलोक	संस्कृत उपसर्ग

*	**शब्द**	**उपसर्ग**	**शब्द**	**उपसर्ग**
	निपुण	नि	अमान्य	अ
	अत्याचार	अति	अज्ञान	अ
	कमजोर	कम	प्रताप	प्र
	सहपाठी	सह	निबंध	नि
	बाइज्जत	बा	परिवहन	परि
	समुचित	सम	अवमानना	अव
	उऋण	उ	प्रतिक्षण	प्रति

*	नि	निहत्था	निडर	बिना	बिनव्याहा	बिन बोया
	अति	अत्याचार	अत्युत्तम	उप	उपवन	उपमंत्री
	अव	अवसान	अवनति	अन	अनपढ़	अनहोनी
	कम	कम अक्ल	कमजोर	अव	अवगुण	अवगति
	खुश	खुशदिल	खुशमिजाज	हम	हम शक्ल	हमजोली
	ला	लापता	लाजवाब	हर	हरदम	हरक्षण

*	नाजायज	ना	+	जायज	अनदेखा	अन	+	देखा
	प्रतिरोध	प्रति	+	रोध	अवगुण	अव	+	गुण
	निडर	नि	+	डर	भरपेट	भर	+	पेट
	स्वाधीन	स्व	+	अधीन	प्रभाव	प्र	+	भाव
	उनसठ	उन	+	सठ	निष्काम	निस्	+	काम्

● *स्वयं कीजिए*

	संस्कृत उपसर्ग	**वाक्य प्रयोग**
1.	पुरस्कार	वार्षिकोत्सव में मेधावी छात्रों को पुरस्कार मिले।
2.	चिरस्थायी	पन्नाधाय का त्याग इतिहास में चिरस्थायी रहेगा।
3.	स्वावलंबन	शिक्षा स्वावलंबन प्रदान करती है।
4.	स्वयंवर	सीता स्वयंवर में श्रीराम ने शिव-धनुष तोड़ा।
5.	सुकर्म	सुकर्म करने वाला हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।
	उर्दू उपसर्ग	**वाक्य प्रयोग**
1.	हमउम्र	वह हमउम्र बालकों के साथ खेल रहा है।
2.	बाकायदा	रोहन बाकायदा जिम्नास्टिक सीख रहा है।
3.	नामुराद	नामुराद मैदा पाचन पर विपरीत प्रभाव डालता है।
4.	दरअसल	राजेश दरअसल वही व्यक्ति है, जिसने स्वर्ण-पदक जीता था।
5.	बिना वजह	बिला वजह सबसे क्यों झगड़ते रहते हो?

प्रत्यय

● *पुस्तक से*

1. (क) **प्रत्यय—** वे शब्दांश जो शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

(ख) प्रत्यय के मुख्यत: दो भेद हैं— 1. कृत् प्रत्यय, 2. तद्धित प्रत्यय।

2.

शब्द	**प्रत्यय**	**मूल शब्द**	**शब्द**	**प्रत्यय**	**मूल शब्द**
भुलक्कड़	अक्कड़	भुल	कृपालु	आलु	कृपा
लड़ाका	आका	लड़	चढ़ावा	आवा	चढ़
लुटेरा	ऐरा	लूट	कृपालु	आलु	कृपा
बोली	ई	बोल	पालनहार	हार	पालन

3.

आलु	दयालु	कृपालु	आहट	घबराहट	खिलखिलाहट
हार	पालनहार	सृजनहार	एरा	सँपेरा	मछेरा
अना	पलना	गलना	इ	व्यक्ति	शक्ति

तम	निकटतम	दीर्घतम	आवट	लिखावट	दिखावट
अक	बैठक	बंधक	आन	कटान	लदान

4.

प्रत्यय	**शब्द**	**वाक्य**
ऊ	गऊ	हिन्दू धर्म में गऊ पूज्य है।
आई	बुराई	हमें किसी की बुराई नहीं करनी चाहिए।
पन	बचपन	बचपन में सभी शरारती होते हैं।
ईय	अनुकरणीय	महापुरुषों के कार्य अनुकरणीय होते हैं।

5.

दिख	+	आवट	=	दिखावट		अच्छा	+	ई	=	अच्छाई
हँस	+	ना	=	हँसना		लोहा	+	आर	=	लोहार
पढ़	+	आई	=	पढ़ाई		मोटा	+	पन	=	मोटापन
भूल	+	आ	=	भूला		चोर	+	ई	=	चोरी
फूल	+	दान	=	फूलदान		जार	+	ता	=	जारता

● *स्वयं कीजिए*

	उपसर्ग	**शब्द**	**प्रत्यय**		**उपसर्ग**	**शब्द**	**प्रत्यय**
वियोगी	वि	योग	ई	बेहिसाबी	बे	हिसाब	ई
कमजोरी	कम	जोर	ई	बेरहमी	वे	रहम	ई
अधिकारी	अधि	कार	ई				

समास

● *पुस्तक से*

1. (क) **समास—**दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से निर्मित सार्थक शब्द समास कहलाता है।

(ख) **कर्मधारय समास—**वह समास जिसका पूर्व पद विशेषण तथा उत्तर प्रद विशेष्य हो, कर्मधारय समास कहलाता है। जैसे— महाराजा = महान है जो राजा।

बहुव्रीहि समास—जिस समास में पूर्व पद एवं उत्तर पद दोनों ही गौण हों और उनके स्थान पर अन्य कोई पद प्रधान हो, वह बहुव्रीहि समास कहलाता है।

	पूर्व पद	उत्तर पद	समास-विग्रह
जैसे— लंबोदर =	लंबा	उदर	लंबा है उदर (पेट) जिसका अर्थात् गणेश।

(ग) **द्विगु समास—** जिस समास में पूर्व पद संख्यावाची हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। इसमें समूह का बोध होता है।

जैसे— दोपहर — दो + पहर दो पहरों का समूह

पंचमढ़ी — पाँच + मढ़ी पाँच मढ़ियों का समूह

2.

	समास	**समास-विग्रह**	**भेद**
(क)	करोड़पति	करोड़ों का पति	तत्पुरुष समास
(ख)	पंचतत्व	पंच + तत्व	द्विगु समास
(ग)	चतुर्भुज	चार हैं जिसकी भुजाएँ अर्थात् विष्णु	बहुव्रीहि समास
(घ)	दिन-रात	दिन और रात	द्वन्द्व समास
(ङ)	महादेव	महान है जो देव अर्थात् शिव	बहुव्रीहि समास
(च)	यथा शक्ति	शक्ति के अनुसार	अव्ययी भाव समास

3.

	समास विग्रह	समास	समास का भेद
(क)	शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति	अव्ययी भाव समास
(ख)	महान है जो आत्मा	महात्मा	बहुव्रीहि समास
(ग)	लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश	लंबोदर	बहुव्रीहि समास
(घ)	कमल के समान चरण	चरण कमल	कर्मधारय समास
(ङ)	गुण तथा दोष	गुण-दोष	द्वन्द्व समास
(च)	आठ खम्भों का समूह	अठखम्भा	द्विगु समास

4.

1.	कर्मधारय समास	कमलनयन	कमल के समान नयन
	बहुव्रीहि समास		कमल जैसे नयन है जिसके अर्थात् विष्णु
2.	कर्मधारय समास	घनश्याम	घन के समान श्याम (काला)
	बहुव्रीहि समास		घन के जैसा वर्ण है जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण

● *खेल-खेल में*

अव्ययीभाव—रातोंरात आजन्म।
तत्पुरुष—गृह प्रवेश, पंकज, घुड़दौड़।
कर्मधारय—महादेव।
द्विगु—त्रिनेत्र, दोपहर, त्रिभंगी, चतुर्मास, शताब्दी।
द्वंद्व—भाई-बहिन, रात-दिन।
बहुव्रीहि—महादेव, पुरुषोत्तम।

● *स्वयं कीजिए*

संधि—निकटवर्ती वर्णों अथवा स्वरों के मेल से होने वाले सार्थक परिवर्तन को संधि कहते हैं।
जैसे—विद्या + आलय = विद्यालय।
समास—दो या दो से अधिक शब्दों या शब्द समूह के मेल से निर्मित सार्थक शब्द समास कहलाता है।
जैसे—भरपेट, नीलगाय, दशानन आदि।

अध्याय-8 संज्ञा

● *पुस्तक से*

1. (क) **संज्ञा**—किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
   (ख) 'लड़का' जातिवाचक संज्ञा है।
   (ग) **समुदायवाचक संज्ञा**—वे शब्द, जिनसे किसी व्यक्ति या वस्तु के समूह विशेष का बोध हो, उन्हें समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—सेना, भक्त मंडली।
   जातिवाचक संज्ञा— वे शब्द जो किसी जाति, समूह या वर्ग का बोध कराते हैं, जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे— सब्जी, दाल आदि।
   (घ) बुढ़ापा और हँसी भाववाचक संज्ञा हैं।
2. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—भारत, पेट, सूर्योदय।
   जातिवाचक संज्ञा—किसान, कृषि, जनसंख्या, खेती, भारतवासियों, बैल, ऋतु।
   भाववाचक संज्ञा—मेहनत, गर्मी, सर्दी, बरसात।
3. (क) सिंचाई (ख) चौड़ाई (ग) हार (घ) पढ़ाई (ङ) मजदूरी
   (च) आपा (छ) कवित्व (ज) धीरता
4. [✗], [✓], [✓], [✓], [✓], [✓]

5.

	भाववाचक संज्ञा	वाक्य
शत्रु	शत्रुता	पाकिस्तान भारत से शत्रुतापूर्ण व्यवहार करता है।
चढ़ना	चढ़ाई	पर्वत पर चढ़ाई दुर्गम होती है।
भाई	भ्रातृत्व	राम-लक्ष्मण का भ्रातृत्व अप्रतिम है।
चतुर	चतुराई	सीनू हर काम को चतुराई से करती है।
सज्जन	सज्जनता	मनुष्य का आभूषण सज्जनता है।
चुनना	चुनाव	हमें अच्छी वस्तुओं का ही चुनाव करना चाहिए।
हरा	हरियाली	वर्षा ऋतु में चारों ओर हरियाली दिखाई देती है।
धोना	धुलाई	धोबी कपड़ों की धुलाई कर रहा है।

6. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**— कोलकाता, मोहित, प्रशांत, गंगा, अरुणाचल।
जातिवाचक संज्ञा—पहाड़, घर, मिठाई, नदी, सड़क, बहन, लेख, शहरी, देव।
भाववाचक संज्ञा—गहराई, योग्यता, पढ़ाई।

● *स्वयं कीजिए*

7. **समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा** — भारतीय सेना ने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए। भक्त मंडली कीर्तन कर रही है। 'सेना' एवं 'भक्तमंडली' दोनों ही किसी व्यक्ति विशेष का नहीं अपितु एक समुदाय या समूह का बोध करा रहे हैं। ये शब्द समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा हैं। अत: वे शब्द जिनसे किसी व्यक्ति या वस्तु के समूह विशेष का बोध हो, समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा कहलाता है।
द्रव्यवाचक संज्ञा— सोना-चाँदी, दूध-दही। 'सोना-चाँदी' एवं 'दूध-दही' क्रमश: धातु एवं पदार्थ का बोध करा रहे हैं। ये द्रव्यवाचक संज्ञा हैं। अत: वे शब्द जिनसे किसी धातु, पदार्थ या द्रव्य का बोध हो, द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

8. महात्मा गाँधी (व्यक्तिवाचक संज्ञा), गुलाब का फूल (व्यक्तिवाचक संज्ञा), देशी घी (जातिवाचक संज्ञा), कुतुबमीनार (व्यक्तिवाचक संज्ञा), गुलाब जामुन (व्यक्तिवाचक संज्ञा)।

● *खेल-खेल में*

* 1. ह्वेल 2. ललकार 3. हिमालय 4. गंगा 5. गायक
6. कमल 7. बुध 8. हिन्दी 9. छत्तीस 10. साहसी।

* विद्यालय, जयपुर, रोटी, खेल का मैदान, सब्जियाँ, पुस्तक, पेंसिल, पोस्ट-ऑफिस, कार्यालय, बनियान, नेकर, पेंट, शर्ट, जूता, चप्पल, चौपाल, चरागाह आदि।

अध्याय-9 सर्वनाम

● *पुस्तक से*

1. (क) **सर्वनाम**—संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे—सचिन तेंदुलकर एकमात्र बल्लेबाज हैं जिसने सौ शतक मारे हैं। 2. टिफिन में पराँठे रख दिए हैं, उन्हें खा लेना।

(ख) **निश्चयवाचक सर्वनाम**— यह मेरी पेंसिल है। वे मेरे दादा जी हैं। 'यह' तथा 'वे' शब्द किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत कर रहे हैं। अत: ये शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।
अत: वे सर्वनाम शब्द, जो किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करते हैं, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इन्हें संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं।
अनिश्चयवाचक सर्वनाम—कोई बाहर दरवाजे पर है। मेरी माँ किसी को भूखा नहीं सोने देती। 'कोई' तथा

'किसी' शब्द किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत कर रहे हैं। ये शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

अत: वे सर्वनाम शब्द जो किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करते हैं, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे—कुछ, कुछ-न-कुछ, कोई, किसी का, किसी को आदि।

(ग) कौन तथा किसको अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

वाक्य प्रयोग—1. बाहर दरवाजे पर कौन खड़ा है। 2. यह पुस्तक किसको देनी है।

(घ) **सर्वनाम के भेद**— हिन्दी में सर्वनाम के छ: प्रमुख भेद हैं—

सर्वनाम—1. पुरुषवाचक सर्वनाम, 2. निश्चयवाचक सर्वनाम, 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम, 4. संबंधवाचक सर्वनाम, 5. प्रश्नवाचक सर्वनाम, 6. निजवाचक सर्वनाम।

पुरुषवाचक सर्वनाम के भी तीन प्रकार हैं—उत्तम पुरुषबोधक, मध्यम पुरुषबोधक, अन्य पुरुषबोधक।

2.

सर्वनाम शब्द	**भेद**	**सर्वनाम शब्द**	**भेद**
(क) कौन	अनिश्चयवाचक	(ख) अपना	पुरुषवाचक
(ग) वह	संबंधवाचक	(घ) मेरा	पुरुषवाचक
(ङ) वह	पुरुषवाचक	(च) आप	पुरुषवाचक
(छ) उसके	पुरुषवाचक		

3. (क) उसकी, (ख) किसकी, (ग) हमने, (घ) जिनको, (ङ) तुममें, (च) किससे, (छ) उसको।

4. निश्चयवाचक— वह तो राम है।

पुरुषवाचक— राम पढ़ रहा है। वह अवश्य सफल होगा।

यह

निश्चयवाचक—यह मेरी घड़ी है।

पुरुषवाचक— पुस्तक अच्छी है। यह रोहन की है।

वे

निश्चयवाचक—वे आम खा रहे हैं।

पुरुषवाचक—आम रसीले हैं। ये पीले रंग के हैं।

5.

सर्वनाम शब्द	**भेद**
जो	संबंधवाचक
अपने-आप	निजवाचक
क्या	प्रश्नवाचक
बहुत कुछ	अनिश्चयवाचक
तुम्हारा	मध्यम पुरुष
वह	अन्य पुरुष वाचक

6.

(क)	तुम्हें	राजेश तुम्हें बुला रहा है।
(ख)	कोई	दरवाजे पर कोई खड़ा है।
(ग)	किसी को	राजू किसी को दान दे रहा है।
(घ)	जैसा-वैसा	जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
(ङ)	जिसने-उसे	जिसने पुस्तक दी उसने उसे पैसे दिए।
(च)	कुछ न कुछ	जीवन में कुछ-न-कुछ करते रहना चाहिए।

● *स्वयं कीजिए—*

प्रश्नवाचक—क्या, कौन, किसको आदि शब्दों के प्रयोग से वाक्य प्रश्नवाचक बन जाता है। अत: उक्त शब्दों से युक्त वाक्य प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं।

प्रश्नवाचक सर्वनाम—वे सर्वनाम शब्द जो व्यक्ति, वस्तु या स्थान के विषय में प्रश्न करते हैं, प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे—यह पुस्तक किसको देनी है? बच्चों ! यह क्या पड़ा है? जयपुर कौन जा रहा है?

अध्याय-10 संज्ञा-विकार

● *पुस्तक से*

1. (क) **लिंग**—वे शब्द रूप जो प्रयोग में पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध कराते हैं, लिंग कहलाते हैं।

(ख) **पुल्लिंग की पहचान**—जिन शब्दों में आ, आव, पा, न, क आदि प्रत्यय जुड़े हों वे सामान्यत: पुल्लिंग होते हैं। सभी पहाड़ों, वृक्षों, दिनों, ग्रहों के नाम सामान्यत: पुल्लिंग होते हैं। जैसे—हिमालय, आम, रविवार, शुक्र आदि।

अनाजों के नाम— गेहूँ, चना, चावल आदि।
सागर, महासागरों के नाम— काला सागर, हिन्द महासागर आदि।
रत्नों के नाम— मूँगा, हीरा आदि।
कुछ धातुओं का नाम— सोना, ताँबा आदि।
शरीर के कुछ अंग— मुँह, दाँत, कान आदि।

यदि शब्दों में खाना, वाला, दान तथा ऐरा आदि प्रत्यय का प्रयोग हो तो— जैसे—दवाखाना, पानवाला, पीकदान, चचेरा, फुफेरा आदि।

स्त्रीलिंग की पहचान—जिन शब्दों के अंत में इया, ई, आवट, आहट, ता, आई आदि प्रत्यय हों तो वे शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

जैसे— ई — खड़ी, हिन्दी, बिन्दी आवट — मिलावट, सजावट
आहट — मुस्कुराहट, गरमाहट ता — मित्रता, शत्रुता।
इया — बंदरिया, चुहिया आई — लड़ाई, सिलाई।
नदियों के नाम — गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र आदि।
भाषा एवं बोलियों के नाम — अवधी, खड़ी बोली, हिन्दी।
शरीर के कुछ अंग — नाक, आँख, जीभ आदि।
कुछ समूहवाचक शब्द — पुलिस, भक्त-मंडली, सेना, सभा आदि।

(ग) 'बनावट' स्त्रीलिंग शब्द है।

(घ) **स्त्रीलिंग के नियम**— 1. अकारान्त पुल्लिंग शब्दों को आकारान्त कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं। जैसे—छात्र-छात्रा। 2. अकारान्त एवं आकारान्त शब्दों को ईकारान्त कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं। जैसे—लड़का-लड़की, नर-नारी।

पुल्लिंग के नियम—1. जिन शब्दों के अन्त में आ, पा, या, पन रहता है, वे प्राय: पुल्लिंग होते हैं। जैसे— पाना, दाना। 2. सभी पहाड़ों, वृक्षों, दिनों, ग्रहों के नाम सामान्यत: पुल्लिंग होते हैं। जैसे— गेहूँ, सागर, सोना आदि।

2. सदैव पुल्लिंग—बाल, चित्र, हीरा, पीकदान।
सदैव स्त्रीलिंग—जीभ, लड़ाई, मेज, मंडली, कुर्सी, रबड़ी, गरमाट।

3. (क) अभिमानिनी औरत से कोई बात नहीं करना चाहता।
(ख) धोबिन ने आज कपड़े नहीं दिये थे।
(ग) वह अध्यक्षा पद की गरिमा के अनुकूल बात करती है।
(घ) गायिका का गायन कमाल का था।
(ङ) कवयित्री की तान से श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए।
(च) शेर जंगल में घूम रहा है।

4.

	शब्द	लिंगभेद	वाक्य
(क)	हवन	पुल्लिग	यज्ञशाला में हवन हो रहा है।
(ख)	चाय	स्त्रीलिंग	चाय पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
(ग)	बस्ता	पुल्लिग	मेरा बस्ता किधर रखा है।
(घ)	पुस्तक	स्त्रीलिंग	पुस्तक उधर रख दो।
(ङ)	कलम	स्त्रीलिंग	रमेश की कलम चोरी हो गई।
(च)	गिलास	पुल्लिग	एक गिलास दूध पी लो।
(छ)	सिनेमा	पुल्लिग	कोरोना के कारण आजकल सभी सिनेमा हाल बंद हैं।
(ज)	बस	स्त्रीलिंग	स्कूल की बस खराब हो गई।
(झ)	गृहकार्य	पुल्लिग	आज मैंने गृह कार्य पूरा कर लिया है।
(ञ)	सड़क	स्त्रीलिंग	यह सड़क जयपुर को जाती है।

5. (क) वीरांगना, (ख) कवयित्री, (ग) आचार्या, (घ) यशस्विनी, (ङ) रूपवती, (च) चिड़िया/चिड़ी, (छ) ऊँटनी, (ज) विदुषी, (झ) बेटी, (ञ) बिलौटा/नर बिल्ली, (ट) मादा भालू, (ठ) इंद्राणी।

6. [✓], [✗], [✗], [✓], [✓], [✗]

● *खेल-खेल में—*

पुल्लिग—व्यास, घी, आटा, लेन-देन, आम, कान, वट।
स्त्रीलिंग—मिठास, मार्च, बाला, दया, दीपा, भूख, कोयल, कारा, नदी।

● *स्वयं कीजिए—*

स्त्रीलिंग—लड़की, औरत, गाय, साइकिल, माता, बहिन, बिल्ली आदि।
पुल्लिग—लड़का, पुरुष, बैल, रिक्शा, पिता, भाई, कुत्ता आदि।

अध्याय-11 वचन

● *पुस्तक से*

1. (क) **वचन**— वे शब्द जो किसी वस्तु या प्राणी की संख्या का बोध कराते हैं, वचन कहलाते हैं।
(ख) वचन के मुख्यत: दो भेद हैं— 1. एकवचन, 2. बहुवचन।
1. एकवचन—आदमी ने टोपी पहन रखी है। पक्षी पेड़ पर बैठा है।
'आदमी, टोपी' तथा 'पक्षी, पेड़' शब्द किसी एक वस्तु या प्राणी की जानकारी दे रहे हैं। ऐसे शब्द एकवचन शब्द हैं। अत: वे शब्द जो किसी वस्तु या प्राणी का संख्या में एक होने का बोध कराते हैं, एकवचन कहलाते हैं।
2. बहुवचन—सभी आदमियों ने टोपियाँ पहन रखी हैं। पक्षियों का झुंड पेड़ पर बैठा है। 'आदमियों, टोपियाँ', 'पक्षियों' शब्द एक से अधिक होने की जानकारी दे रहे हैं । अत: ये शब्द अनेक अर्थात् बहुवचन हैं।

अत: वे शब्द जो किसी वस्तु, स्थान या व्यक्ति के संख्या में एक से अधिक होने का बोध कराते हैं, बहुवचन कहलाते हैं।

(ग) सैनिक — एकवचन
दल — बहुवचन

2. (क) एकवचन—झूमता हुआ हाथी आ रहा है।
बहुवचन—हाथियों का झुण्ड विचरण कर रहा है।
(ख) एकवचन—भेंस खेत में चर रही है।
बहुवचन—चरवाहा भैंसों को घर ला रहा है।
(ग) एकवचन—दिनकर एक प्रसिद्ध कवि थे।
बहुवचन—हिन्दी साहित्य में कवियों की एक शृंखला रही है।
(घ) एकवचन—डाकू मलखान सिंह का काम कौन नहीं जानता?
बहुवचन—डाकुओं के दल ने गाँव पर धावा बोल दिया।

3.

(क)	गौ	गौएँ	चिड़िया	चिड़ियाँ
(ख)	सभा	सभाएँ	भेड़	भेड़ें
(ग)	कुर्ता	कुर्ते	युवा	युवाओं
(घ)	पुस्तक	पुस्तकें	रोटी	रोटियाँ
(ङ)	जूता	जूतों	तिथि	तिथियाँ
(च)	रात	रातें	बहू	बहुएँ

4. (क) मेरी आँख में आँसू आ गए हैं। (ख) कई मोमबत्तियाँ कमरे में जल रही हैं।
(ग) कक्षा में सभी छात्र चुपचाप सुन रहे हैं। (घ) सोने के दाम चढ़ रहे हैं।
(ङ) तुम्हारे बाल सुंदर हैं। (च) मेरे पापा आज दिल्ली जाएँगे।
(छ) सत्य हमेशा जीतता है।

5. (क) छाता, (ख) गुरुजनों, (ग) लताएँ, (घ) पत्ता, (ङ) मालाएँ।

● ***खेल-खेल में***

यह स्टेशन का दृश्य है। यहाँ यात्रियों की भीड़ दिखाई दे रही है। टिकट घर पर दो यात्री खड़े हैं। बुक स्टॉल पर व्यक्ति बैठा है। महिलाएँ बैंच पर बैठी हैं। रेलगाड़ी प्लेटफार्म पर खड़ी है । कुली सामान ढो रहा है।

● ***स्वयं कीजिए—***

एकवचन	**बहुवचन**
धूल	फूलों
रूई	सुइयाँ
मैट्रो	पकौड़े
जग	मकबरे
होली	कैमरे, टॉफियाँ, गमले

अध्याय-12 कारक

● *पुस्तक से*

1. (क) **कारक**—जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से जोड़ते हैं, कारक कहलाते हैं।
   (ख) **कारक के भेद**—हिन्दी में कारक के आठ भेद हैं—1. कर्त्ता कारक, 2. कर्मकारक, 3. करण कारक, 4. संप्रदान कारक, 5. अपादान कारक, 6. संबंध कारक, 7. अधिकरण कारक, 8. संबोधन कारक।
   (ग) **करण कारक**—जिस कारक चिह्न से कर्त्ता द्वारा किए गये कार्य करने के साधन ज्ञात हों, उसे करण कारक कहते हैं। जैसे—रमेश कार से जयपुर जा रहा है।
   अपादान कारक—जिस विभक्ति चिह्न से संज्ञा या सर्वनाम से अलगाव या तुलना होने का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे—रूपा कृष्णा से लम्बी है।

2. (क) टेबल **पर** पुस्तकें किसने रखी हैं? (अधिकरण कारक)
   (ख) **हे** ईश्वर ! ये आपने क्या कर दिया? (संबोधन कारक)
   (ग) सुमन ने माँ **के लिए** साड़ी खरीदी। (संप्रदान कारक)
   (घ) रोहन **का** बैग कहीं खो गया है। (संबंध कारक)
   (ङ) मयंक **को** बहुत तेज बुखार है। (कर्म कारक)
   (च) रवि कार होते हुए भी मेट्रो **से** ऑफिस जाता है। (करण कारक)
   (छ) मुझ **से** यह काम नहीं हो पा रहा है। (करण कारक

3.

कारक	**विभक्ति चिह्न**
संप्रदान	को, के लिए
संबोधन	हे ! अरे!
करण	से, के द्वारा
कर्त्ता	ने
सम्बन्ध	का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने
अपादान	से
अधिकरण	पर, में

4.

(क) हे !	हे ! प्रभु रक्षा कीजिए।
(ख) के लिए	सोहन रमेश के लिए पुस्तक लाया है।
(ग) में	रोहित कक्षा छह में पढ़ता है।
(घ) से	पेड़ से पत्ता झड़ गया ।
(ङ) ने	राम ने रावण को मारा।
(च) की	यह राम की कार है।
(छ) को	पिता ने पुत्र को शाबाशी दी।

● *खेल-खेल में*

कारक चिह्न	**सम्बन्धित कारक**
के लिए	संप्रदान कारक
में	अधिकरण कारक
का	संबंध कारण
ने	कर्ता कारक
पर	अधिकरण कारक
से	करण कारक

अध्याय-13 विशेषण

● *पुस्तक से*

1. **विशेषण**—जो शब्द किसी व्यक्ति, प्राणी या वस्तु के गुण, आकार, मात्रा अथवा संख्या की विशेषता बताते हैं; वे सभी विशेषण शब्द कहलाते हैं।

2. **विशेषण**—वे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, विशेषण शब्द कहलाते हैं एवं जिन शब्दों की विशेषता बतायी जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।
   जैसे— बड़ा जमींदार । बुढ़ापा
   बड़ा, बूढ़ा विशेषण शब्द है।
   जमींदार एवं बाप (संज्ञा) — विशेष्य शब्द हैं।

3. **सर्वनाम**—संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे— वह, यह, ये, वे आदि।
   उदाहरण— 1. वह घूमने गया। 2. यह फल है। 3. ये गायिका हैं।
   सार्वनामिक विशेषण—सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताते हैं। जैसे— यह, वह, ये, वे आदि।
   उदाहरण— 1. वह लड़का घूमने गया। 2. यह फल मीठा है। 3. वे लड़कियाँ गायिका हैं।

4. **संख्यावाचक विशेषण**—संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित/अनिश्चित संख्या का ज्ञान। उदाहरण—1. वह दस पेंसिल चाहता है। (निश्चित संख्यावाचक) 2. वह मेले से बहुत सारी पुस्तकें खरीद लाया। (अनिश्चित संख्यावाचक)
   परिमाणवाचक विशेषण—संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित/अनिश्चित नाप-तोल का ज्ञान। उदाहरण—1. वह दस कुंतल गेहूँ गाड़ी पर ले गया। (निश्चित परिमाणवाचक)। 2. मेले का रास्ता कई किलोमीटर लम्बा है। (अनिश्चित परिमाणवाचक।)

5.

(क)	विशेषण शब्द	— हरा-भरा	भेद	— गुणवाचक विशेषण
(ख)	विशेषण शब्द	— कुछ	भेद	— अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(ग)	विशेषण शब्द	— दो किलोग्राम	भेद	— निश्चित परिमाण वाचक विशेषण
(घ)	विशेषण शब्द	— सौ ग्राम	भेद	— निश्चित परिमाण वाचक विशेषण
(ङ)	विशेषण शब्द	— कई किलोमीटर	भेद	— अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
(च)	विशेषण शब्द	— बहुत-सा	भेद	— अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण

6.

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
ऊँची	दीवार	लाल	झंडा
दो	किताबें	बाहरी	हिस्सा
पढ़ाकू	बालक	खट्टा	नींबू
सुगंधित	पुष्प		

7.

		भेद	**वाक्य**
(क)	कुछ	अनिश्चित संख्यावाचक	कुछ छात्र पढ़ रहे हैं।
(ख)	प्रथम	निश्चित संख्यावाचक	राष्ट्रपति भारत का प्रथम नागरिक है।
(ग)	थोड़े से	अनिश्चित संख्यायवाचक	थोड़े-से पक्षी उड़ रहे हैं।
(घ)	दयालु	गुणवाचक	भगवान परम दयालु हैं।
(ङ)	पर्याप्त	अनिश्चित परिमाणवाचक	उसके पास पर्याप्त दूध है।
(च)	पाँच लीटर	निश्चित परिमाणवाचक	सुनयना पाँच लीटर घी लाई।

8.		उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
	(क) उच्च	उच्चतर	उच्चतम
	(ख) अधिक	अधिकतर	अधिकतम
	(ग) तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
	(घ) मधुर	मधुरतर	मधुरतम
	(ङ) सुंदर	सुंदरतर	सुंदतरतम
	(च) श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
9.	(क) बाग	हरा-भरा बाग	घना बाग
	(ख) पक्षी	सफेद पक्षी	काला पक्षी
	(ग) पहाड़	ऊँचा पहाड़	बर्फीला पहाड़
	(घ) युवती	सुंदर युवती	लम्बी युवती
	(ङ) कपड़े	रंगीन कपड़े	सूती कपड़े
	(च) फूल	गुलाबी फूल	पीला फूल

10.	(क) अर्थ	सरल अर्थ	(ख)	गाना	मधुर गाना
	(ग) किताब	मोटी किताब	(घ)	पीना	कड़वा पानी पीना
	(ङ) साल	हर साल	(च)	विज्ञान	भौतिक विज्ञान
	(छ) पालना	छोटा पालना	(छ)	अपना	अपना घर

● *खेल-खेल में*

काली गाय, चितकबरी बिल्ली, सुन्दर फूल, खुला मैदान, हरे वृक्ष, लम्बी औरत, ठिगना आदमी, प्यारा बच्चा, छोटी गुड़िया, चमकती साइकिल।

अध्याय-14 क्रिया

● *पुस्तक से*

1. **क्रिया—** किसी कार्य के होने या किए जाने का संकेत देने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं।

2. 1. सकर्मक क्रिया— आज हम सब घर को जाएँगे। बालिका ने फूलों की माला बनाई।
   यहाँ जाएँगे तथा बनाई का प्रभाव क्रमशः 'घर', 'फूलों की माला' पर पड़ रहा है। 'घर' तथा 'फूलों की माला' कर्म शब्द हैं।
   इन वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म उपस्थित है। अतः ये सकर्मक क्रिया हैं। क्या अथवा किसको शब्दों से बने प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर मिलने पर वाक्य में सकर्मक क्रिया होती है अन्यथा अकर्मक।
   अतः जिस वाक्य में क्रिया का सीधा प्रभाव कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
   2. अकर्मक क्रिया— पक्षी उड़ रहे हैं। मोहन इतनी जल्दी सो गया। उपरोक्त वाक्यों में उपस्थित नहीं है। इसलिए इसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। अतः कर्म के बिना क्रिया अकर्मक क्रिया कहलाती है, जिसका फल क्रिया पर पड़ता है। जैसे—उड़ना, सोचना, जीना, गिरना, रोना, कूदना, तैरना, उछलना, जाना, चढ़ना आदि।

3.		क्रिया रूप	प्रत्यय	वाक्य
	(क)	पढ़	आई	राम पढ़ाई कर रहा है।
	(ख)	गा	ता	वह गीत गाता है।

(ग)	लगा	या	मोहन ने शतक लगाया।
(घ)	चमक	ता	सूरज चमकता है।
(ङ)	सो	ता	रामू सोता है।
(च)	बरस	ता	बादल जोर से बरसता है।
(छ)	तैर	ता	शेर किस नदी में तैरता है।

4.

	कर्ता	कर्म	क्रिया
(क)	मोहन ने	हलवा	खाया
(ख)	मैं	विद्यालय	जाऊँगा
(ग)	हम सब	पेड़ पर	चढ़ गए
(घ)	गाय	घास	नहीं खा रही है
(ङ)	मुझसे	पत्र	लिखा नहीं जा रहा था
(च)	अपना	सामान नीचे	रख दीजिए।

5.

(क)	बरस रहा है।	सकर्मक क्रिया
(ख)	रहे है।	अकर्मक क्रिया
(ग)	करते है	सकर्मक क्रिया
(घ)	होती है	सकर्मक क्रिया
(ङ)	गिर गया	सकर्मक क्रिया
(च)	दी	सकर्मक क्रिया

6. (क) पढ़ना, (ख) भागना, (ग) झपकी, (घ) कूदना, (ङ) सींचा, (च) चिल्लाओ।

● *खेल-खेल में*

एक पेड़ पर चिड़ा और चिड़िया रहते थे। उन्होंने घोंसले में अण्डे दिए। पेड़ के नीचे एक बिल में साँप रहता था। चिड़िया के बाहर जाने पर साँप उनके अंडों को खा जाता। परेशान होकर चिड़िया ने रानी का हार चुरा लिया और उस हार को साँप के बिल में डाल दिया। राजा के सैनिक पीछा करते हुए बिल तक पहुँचे । बिल को खोदकर उन्होंने साँप को मार दिया और हार वापस ले लिया। साँप के मरने के बाद दोनों चिड़ा-चिड़िया सुकून से रहने लगे।

● *स्वयं कीजिए—*

चुराना—	आँख चुराना	तोड़ना	ऐंठ तोड़ना
बातें करना	गाल बजाना	खुलना	कलई खोलना
उड़ जाना	फुर्र हो जाना	मिलना	छप्पर फाड़कर मिलना
अड़े रहना	मोर्चा लेना	लगाना	नमक-मिर्च लगाना
बजाना	अपनी ढपली बजाना		

अध्याय-15 काल

● *पुस्तक से*

1. **काल**—क्रिया के जिस रूप से कार्य करने या होने के समय का ज्ञान प्राप्त हो, उसे काल कहते हैं।
2. **भूतकाल**—क्रिया के जिस रूप से कार्य के अतीत (बीते समय) में होने या करने का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं। जैसे— बारिश हो रही थी। पापा ऑफिस चले गए।

भविष्यत् काल—क्रिया ने जिस रूप से कार्य के आगामी या आने वाले समय में होने की सूचना दी जाती है, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। जैसे—कल सभी विद्यालय बंद रहेंगे। तुम पढ़ोगे तभी समझ पाओगे।

3. गा, गी गे भविष्यत् काल की सहायक क्रियाएँ है।

4. पढ़ना—वर्तमान काल — रामू पुस्तक पढ़ता है।
   भूतकाल — रामू ने पुस्तक पढ़ी थी।
   भविष्यत्काल — रामू पुस्तक पढ़ेगा।
   गाना— वर्तमान काल — लता भजन गा रही है।
   भूतकाल — लता ने भजन गाया।
   भविष्यत्काल — लता भजन गायेगी।
   चढ़ना—वर्तमान काल — मोहन पहाड़ पर चढ़ रहा है।
   भूतकाल — मोहन पहाड़ पर चढ़ा था।
   भविष्यत्काल — मोहन पहाड़ पर चढ़ेगा।
   होना— वर्तमान काल — अल्मोड़ा में बारिश हुई थी।
   भूतकाल — अल्मोड़ा में बारिश हो गई।
   भविष्यत्काल — अल्मोड़ा में बारिश होगी।

5. काल-भेद—(क) वर्तमान काल, (ख) भूतकाल, (ग) भविष्यतकाल, (घ) भूतकाल, (ङ) भूतकाल, (च) भूतकाल, (छ) भूतकाल, (ज) भविष्यत काल।

6. (क) मेरी नानी मुझे कहानी सुनाती हैं।
   (ख) चाचाजी सुबह की गाड़ी से आए थे।
   (ग) हम सब कल जयपुर जाएँगे।
   (घ) हनुमान राम को प्रिय थे। वे उन पर बहुत विश्वास करते थे।
   (ङ) दादाजी बहुत तेज चलेंगे।
   (च) एयर कंडीशनर चल रहा है।

● *खेल-खेल में*

वर्तमान काल की उपलब्धियाँ

1. छात्रों की पढ़ाई सुचारु रूप से चल रही है।
2. सुयोग्य अध्यापकों का मार्गदर्शन छात्रों को निरंतर मिल रहा है।

भूतकाल की उपलब्धियाँ

1. छात्रों के खेल-कूद के लिए खेल के मैदान को व्यवस्थित किया गया था।
2. छात्र-अभिभावक-शिक्षक मीटिंग के लिए एक नए हॉल का निर्माण किया गया।

भविष्यत्काल में संभावित उपलब्धियाँ

1. विज्ञान वर्ग के छात्रों के लिए विज्ञान-प्रयोगशाला को उन्नत किया जाएगा।
2. छात्रों की बढ़ती संख्या को दृष्टिगत रखते हुए अतिरिक्त कक्षों का निर्माण किया जाएगा।

● *स्वयं कीजिए—*

निश्चित वर्तमान

अहिंसा परम धर्म है।
परोपकार अहम् गुण है।
सत्य का रास्ता सर्वश्रेष्ठ है।
मेहनती व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है।

निश्चित भूतकाल

राम आदर्श पुरुष थे।
सीता स्त्रियों में अग्रगण्य थीं।
महाराणा प्रताप देशभक्त थे।
पन्नाधाय का त्याग अनुपम था।

अध्याय-16 विराम चिह्न

● *पुस्तक से*

1. विराम का अर्थ है—ठहराव या रुकना। जिन चिह्नों द्वारा अर्थ की स्पष्टता के लिए वाक्य को भिन्न-भिन्न भागों में बाँटते हैं, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

1. **योजक चिह्न (-)**—योजक का अर्थ है—जोड़ना। योजक चिह्न का प्रयोग दो विपरीतार्थक शब्दों के मध्य किया जाता है। जैसे—लाभ-हानि, जय-पराजय, हार-जीत आदि।
   निर्देश चिह्न (—)—बात पर विशेष बल देने के लिए निर्देश चिह्न का प्रयोग किया जाता है। यह अल्प विराम चिह्न से बड़ा होता है। जैसे—जीवन के दो ही लक्ष्य होने चाहिए—सत्य एवं अहिंसा।
   नाटकों एवं एकांकी में संवाद एवं पात्र के बीच निर्देश चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
   जैसे—राम—रावण तुम अहंकारी हो। रावण — हाँ, मैं अहंकारी हूँ।

3. **कोष्ठक ( )**—शब्द का अर्थ स्पष्ट करने या बात को विस्तार से कहने के लिए कोष्ठक का प्रयोग करते हैं।
   जैसे— ईदगाह (प्रेमचंद की कहानी) बाल-कथा है। मैं आपकी सामर्थ्य (शक्ति) का कायल हूँ।

4. आओ, आओ, बच्चो ! मेरे निकट आओ । मुझसे भयभीत न होओ। मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ। मेरा नाम नीम है। मुझे निंब भी कहते हैं। निंब का अर्थ है— रोगों को दूर भगाने वाला। मैं अनेक रोगों को भगाता हूँ। मैं मनुष्यों के बहुत काम आता हूँ। सबसे पहले तो मैं छाया प्रदान करता हूँ । मेरी छाया में बैठकर पशु-पक्षी तथा थके-हारे मनुष्य आराम करते हैं।

5. (क) बाजार से दाल, चीनी, गुड़ एवं मिर्च ले आना।
   (ख) रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी के प्रमुख कवि हैं।
   (ग) शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया।
   (घ) तुलसीदास ने लिखा- ''पराधीन सपनेहु सुख नाहीं''।
   (ङ) राम-लक्ष्मण वन की ओर जा रहे हैं।
   (च) आप सब उस ओर क्यों जा रहे हैं?
   (छ) रोहन ने सोचा, मोहन को अपना मित्र क्यों न बना लूँ,

6.

(क)	' '	एकल उद्धरण चिह्न	(ख)	;	अर्द्ध विराम
(ग)	?	प्रश्नवाचक चिह्न	(घ)	'' ''	दुहरा उद्धरण चिह्न
(ङ)	!	विस्मयादिक बोधक चिह्न	(च)	.....	संक्षेप चिह्न
(छ)	,	अल्प विराम	(ज)	०	लाघव चिह्न

● *खेल-खेल में*

प्रतीक — अरे उत्कर्ष ! कल जब गुरु जी व्यायाम के बारे में बता रहे थे तो तुम वहाँ पर थे?
उत्कर्ष — हाँ मित्र ! मैं वहीं पर था।
प्रतीक — तुम्हें क्या समझ में आया?

उत्कर्ष — यही कि स्वस्थ एवं नीरोग रहने के लिए व्यायाम अति आवश्यक है।
प्रतीक — सही कहा तुमने! मैंने तो गुरु जी के निर्देशानुसार व्यायाम करना शुरू भी कर दिया है।
उत्कर्ष — मैं भी जल्दी ही शुरू करने वाला हूँ।
प्रतीक — शुभ काम करने में देरी मत करो। कल से ही शुरू कर दो।
उत्कर्ष — ठीक कहते हो प्रतीक ! मैं कल से ही शुरू कर देता हूँ।
प्रतीक — शुरुआत में अधिक कसरत मत करना, नहीं तो शरीर में दर्द हो सकता है।
उत्कर्ष — नहीं, जैसा गुरु जी ने बताया है, वैसा ही करूँगा । शुरू में कम बाद में अधिक कसरत करूँगा।

● *स्वयं कीजिए*

हाँ, मैं इन दिनों कुछ बड़ा-बड़ा यानी उम्र में सयाना महसूस करने लगी हूँ । शायद इसलिए कि पिछली शताब्दी में पैदा हुई थी । मेरे पहनने-ओढ़ने में भी काफी बदलाव आए हैं । पहले मैं रंग-बिरंगे कपड़े पहनती रही हूँ । नीला-जामुनी-ग्रे-काला-चॉकलेटी । अब मन कुछ ऐसा करता है कि सफेद पहनो । गहरे नहीं, हलके रंग । मैंने पिछले दशकों में तरह-तरह की पोशाकें पहनी हैं । पहले फ्रॉक, फिर निकर-वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे और अब चूड़ीदार पाजामा और घेरदार कुर्ते ।

अध्याय-17 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

1. **मुहावरा—** वह वाक्यांश जो सामान्य अर्थ से भिन्न विशिष्ट अर्थ दे, मुहावरा कहलाता है।
2. **लोकोक्ति—** वे वाक्य या वाक्यांश जो लोगों द्वारा विशेष अर्थ में प्रयुक्त किये जाते हैं, लोकोक्तियाँ कहलाते हैं।
3. 1. मुहावरे भाषा के प्रभाव को बढ़ाते हैं। उन्हें अर्थवान बनाते हैं।
   2. मुहावरे सामान्य से विशिष्ट अर्थ देते हैं, जिससे भाषा रोचक एवं सशक्त बनती है।
   3. मुहावरों को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।
   4. मुहावरे वाक्य नहीं अपितु वाक्यांश होते हैं।
   5. मुहावरों का कभी स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

   लोकोक्ति का अर्थ है—लोक + उक्ति = आम लोगों द्वारा बोली जाने वाली बातचीत।
   लोकोक्तियाँ अपने आप में पूर्ण वाक्य होते हैं। इनमें भी मुहावरों की भाँति परिवर्तन नहीं होता है। इनका प्रयोग शिक्षाप्रद उद्देश्य से किया जाता है।
4.

मुहावरा	लोकोक्तियाँ
आँखों का तारा।	थोथा चना बाजे घना।
अक्ल चकराना।	जैसी करनी वैसी भरी।
दाल न गलना।	आ बैल मुझे मार।
घी के दीपक जलाना।	अक्ल बड़ी या भैंस।
मक्खियाँ मारना।	नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

5. (क) **मुँह ताकना** (उम्मीद रखना)— भिखारी घर के सामने खड़ा होकर मकान मालिक का मुँह ताक रहा था।
   (ख) **मुँह की खाना** (पराजित होना)—मोहन ने पहलवानी में रमेश से कई बार मुँह की खाई है।
   (ग) **पानी-पानी होना** (लज्जित होना)—रामू के असभ्य व्यवहार से उसका पिता पानी-पानी हो गया।
   (घ) **पीठ दिखाना** (हारकर भाग जाना)—दुश्मन को पीठ दिखाकर भागने की अपेक्षा वहीं मर जाना कहीं अच्छा है।
   (ङ) **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी** (संकट को जड़ से समाप्त कर देना)—स्मार्ट फोन ने बच्चों को बीमार करना शुरू कर दिया है। इससे अच्छा है कि घर पर साधारण फोन ही रखें। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

(च) **कंगाली में आटा गीला** (संकट पर संकट आना)—घर में वैसे ही अभाव थे और ऊपर से मेहमान और टपक पड़े। ऐसे में कंगाली में आटा गीला होगा ही।

(छ) **मान न मान मैं तेरा मेहमान** (जबरदस्ती गले पड़ना)—घर आकर मुझसे विशेष आत्मीयता दिखाने लगा तो मुझे कहना ही पड़ा—यह तो मान न मान मैं तेरा मेहमान वाली बात हो गयी।

(ज) **जिसकी लाठी उसकी भैंस** (शक्तिवान ही विजयी होता है)—कैसा समय आ गया है, चारों ओर जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

6. (क) **थोथा चना बाजे घना** (गुण कम, दिखावा अधिक)—तीन बार का हाईस्कूल फेल सुभम इण्टर के छात्रों को पढ़ाने की बात करने लगा तो सबने कहा—थोथा चना बाजे घना।

(ख) **आँखें खुलना** (वास्तविकता का पता चलना)—मोहल्ले के लोगों ने राजू की असलियत बताई तो उसके पिता की आँखें खुल गईं।

(ग) **आपे से बाहर होना** (क्रोधित होना) — गिरीश की लापरवाही देखकर उसके पिता आपे से बाहर हो गये।

(घ) **चोर की दाढ़ी में तिनका** (संदिग्ध व्यक्ति का व्यवहार संदिग्ध होता है)—पुस्तक रवि ने चुराई इसीलिए वह कई दिनों तक विद्यालय नहीं आया। सबने कहा-चोर की दाढ़ी में तिनका।

(ङ) **साँप मरे, न लाठी टूटे** (बिना कुछ गँवाए काम का होना)—मैं सोहन को सबक सिखाना चाहता हूँ, परन्तु मेरा नाम नहीं आना चाहिए, कुछ ऐसा हो कि साँप मरे न लाठी टूटे।

(च) **अंधे की लकड़ी** (एकमात्र सहारा)—विधवा माँ के लिए उसका इकलौता पुत्र अंधे की लकड़ी के जैसा है।

7. **आकाश के तारे तोड़ना** (असंभव कार्य करना)—वैज्ञानिकों ने मंगल ग्रह पर पहुँचकर आकाश के तारे तोड़ लिए।

एक अनार सौ बीमार (वस्तु एक चाहने वाले अनेक)—एक पद के लिए आए लाखों आवेदन देखकर एक अधिकारी बोला कि एक अनार सौ बीमार वाली बात चरितार्थ हो रही है।

साँप मरे न लाठी टूटे (बिना कुछ गँवाए काम का होना)—मैं सोहन को सबक सिखाना चाहता हूँ, परन्तु मेरा नाम नहीं आना चाहिए कुछ ऐसा हो कि साँप मरे न लाठी टूटे।

गिरगिट की तरह रंग बदलना (एक मत पर न टिकना)—आजकल लोग स्वार्थ के लिए गिरगिट की तरह रंग बदल रहे हैं।

न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी (संकट को जड़ से समाप्त कर देना)—स्मार्ट फोन ने बच्चों को बीमार करना शुरू कर दिया है। इससे अच्छा है कि घर पर साधारण फोन ही रखें। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

ईंट से ईंट बजाना (समूल नाश करना)—यदि आपने मेरे परिवार पर बुरी दृष्टि डाली तो मैं आपकी ईंट से ईंट बजा दूँगा।

8.

(क)	फूला न समाना	अत्यधिक प्रसन्न होना
(ख)	एक पंथ दो काज	दोहरा लाभ
(ग)	नाच न जाने आँगन टेढ़ा	स्वयं की कमी को दूसरे पर मढ़ना
(घ)	उल्लू बनाना	मूर्ख बनना
(ङ)	खोदा पहाड़ निकली चुहिया	मेहनत ज्यादा फल कम
(च)	ऊँची दुकान फीका पकवान	नाम बड़ा काम छोटा
(छ)	नौ दो ग्यारह होना	भाग जाना

● *खेल-खेल में*

1. **आँखों से गिर जाना** (सम्मान खो देना)- जिस दिन से गिरीश चोरी में पकड़ा गया है, वह सभी की आँखों से गिर गया है ।

2. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना** (अपनी प्रशंसा आप करना) — मुन्ना अपनी प्रशंसा आप ही करता रहता है । एक दिन वीनू ने कहा कि अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना अच्छा नहीं है ।
3. **आँखें चार होना** (एक-दूसरे को देखना)— ज्यों ही सलीम की अनारकली से आँखें चार हुईं, वह अपनी सुध-बुध खो बैठा।
4. **आसमान सिर पर उठाना** (बहुत शोर या उपद्रव करना)— अध्यापक के कक्षा से बाहर जाते ही छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया।
5. **आँखों में धूल झोंकना** (धोखा देना)— मैं तुम्हारी असलियत जान गया हूँ, अब तुम मेरी आँखों में धूल नहीं झोंक सकते हो ।
6. **आँखों का तारा होना** (बहुत प्रिय होना)— आजकल ब्रजेश अपनी आज्ञाकारिता और विनम्रता से माँ-बाप की आँखों का तारा बना हुआ है ।
7. **अँगूठा दिखाना** (निर्धारित समय पर इंकार करना)— महिला ने पड़ोसिन को ऐन वक्त पर रुपया देने के नाम पर अँगूठा दिखा दिया।
8. **आँखें बिछाना** (अति उत्साह से स्वागत करना)— विवेकानन्द के (शिकागो) अमेरिका से लौटने पर देशवासियों ने उनके स्वागत में आँखें बिछा दीं ।
9. **आँखों में खून उतरना** (अत्यधिक क्रोध आना)— शत्रु को देखते ही उसकी आँखों में खून उतर आया ।
10. **अँगुली पर नचाना** (इशारे पर कार्य कराना)— शक्तिशाली लोग शक्तिहीनों को अँगुली पर नचा रहे हैं ।
11. **अँगुली पकड़कर पहुँचा पकड़ना** (थोड़ा मिलने पर धीरे-धीरे सम्पूर्ण पर अधिकार कर लेना)—बच्चों को इतना मुँह न लगाना चाहिए नहीं तो वे अँगुली पकड़कर पहुँचा पकड़ लेंगे ।
12. **एड़ी-चोटी का पसीना एक करना** (बहुत मेहनत करना)— निर्धन व्यक्ति परिवार की उन्नति के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रहे हैं ।
13. **कान में तेल डालना** (किसी की बात न सुनना)—मैंने तुमसे कितना कहा कि परिश्रम करो, किन्तु तुमने कान में तेल डाल रखा था।
14. **गाल बजाना** (बढ़-चढ़कर बातें करना)—भाई, तुम काम कम करते हो, गाल अधिक बजाते हो ।

● *स्वयं कीजिए—*

1. **दाल में काला होना** (सन्देहपूर्ण स्थिति)—उसके पास धन नहीं है, किन्तु वह बहुत बड़ी योजना बनाकर काम कर रहा है । लगता है, दाल में कुछ काला है ।
2. **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे** (अपना अपराध औरों पर मढ़ना)—चोरी करके भी रामदास साहूकार बना घूमता है और दूसरों को चोर कहता है । उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे ।
3. **चोर की दाढ़ी में तिनका** (अपराधी का सशंकित रहना)—आचार्य जी के पूछने पर रमेश के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं । सभी समझ गये, जरूर चोर की दाढ़ी में तिनका है।
4. **चोर-चोर मौसेरे भाई** (समान प्रवृत्ति के लोग शीघ्र ही निकट आ जाते हैं)—रमेश और सुरेश एक जैसी आदतों वाले हैं तभी तो मित्र हैं। चोर-चोर मौसेरे भाई होते हैं ।

रचना

अध्याय-1 संवाद लेखन

समय के महत्त्व के संबंध में माँ-पुत्र के मध्य संवाद

माता – बेटा ! समय अमूल्य है। यह बेकार न जाने पाए।
पुत्र – हाँ माता जी ! गुरु जी भी यही बता रहे थे।
माता – बेटा ! अच्छी बातें सुनकर उन पर अमल करना बहुत जरूरी है नहीं तो उनका कोई महत्व नहीं होता।
पुत्र – जी माता जी !
माता – बेटा ! जिसने समय के महत्व को पहचान लिया वह महान बन गया। जो नहीं पहचाना वह कहीं का नहीं रहा।
पुत्र – माता जी ! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, मैं एक भी पल व्यर्थ नहीं जाने दूँगा।
माता – हाँ बेटा ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।
पुत्र – मैं आपकी उम्मीद पर खरा उतरूँगा।

अध्याय-2 कहानी लेखन

भूखी लोमड़ी

एक लोमड़ी थी । एक दिन उसे जोरों की भूख लगी । वह भोजन की खोज में गयी। वह एक बगीचे में पहुँची । उसने वहाँ अंगूरों का एक गुच्छा देखा । वह उन्हें खाना चाहती
थी । इसलिये वह बार-बार उछली । वह अँगूरों के गुच्छे तक नहीं पहुँच सकी, क्योंकि वह बहुत ऊँचा था । अन्त में लोमड़ी थक गयी । उसने स्वयं से कहा, अंगूर खट्टे हैं। मैं इन्हें पसन्द नहीं करती हूँ । ऐसा कहकर वह दूर चली गयी ।

शिक्षा—हाथ नहीं आने वाले अंगूरों को खट्टा बताया जाता है।

● *स्वयं करके देखिए ?*

धनी व्यक्ति और उसका पुत्र

एक धनी व्यक्ति ने अपने आलसी, लापरवाह और कामचोर लड़के को कुछ कमाकर लाने के लिए कहा। लड़का काम करने के बजाय माँ के पास जाकर रोने लगा और माँ ने तरस खाकर उसे एक रुपया दे दिया। पिता के पूछने पर उसने एक रुपया अपनी कमाई का बताया। पिता अपने बेटे को अच्छी तरह जानता था। अपने बेटे को पाठ पढ़ाने के लिए उसने रुपया कुएँ में डालने को कहा और लड़के ने रुपया कुएँ में डाल दिया। अगली बार यही घटना दुबारा घटी। अबकी बार उसकी बहन ने तरस खाकर एक रुपया दे दिया। पिता ने रुपया कुएँ में फेंकने को कहा और लड़के ने रुपया कुएँ में डाल दिया। अगले दिन पिता ने माँ-बेटी को बाहर भेज दिया और पुत्र को कुछ कमाकर लाने को कहा। विवश होकर अंत में लड़का स्वयं परिश्रम करके एक सेठ का सामान पहुँचाकर चार आने पैसे कमाता है। इस बार पिता ने पैसे कुएँ में डालने को कहा तो लड़के ने इसका विरोध करते हुए कहा कि यह मेरी कमाई है, मैंने बड़ा कष्ट उठाकर ये पैसे कमाए हैं। जब अनुभवी पिता समझ गए कि बेटा मेहनती और समझदार हो गया है तो उन्होंने अपना सारा व्यापार लड़के को सौंप दिया।

अध्याय-4 पत्र-लेखन

अपने भाई को खेल प्रतियोगिता में पदक पाने पर बधाई पत्र लिखिए।

6, पंचवटी, चित्तौड़गढ़
12 जुलाई, 20--

प्रिय भाई विनोद,
हार्दिक बधाई ।
कल समाचार-पत्र में प्रादेशिक तैराकी प्रतियोगिता में तुम्हारी सफलता का समाचार पढ़कर और चित्र में तुम्हें पुरस्कार ग्रहण करते देखकर मन गद्‌गद् हो उठा । आखिर तुम्हारा श्रम और तुम्हारी लगन रंग ले ही आई । तुम प्रदेश के गौरव हो । हम सभी परिवारीजनों व मित्रों के गर्व का आधार हो । इस सुअवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो । मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही तुम राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी सफलता अंकित कराओगे ।
पुन: हार्दिक बधाई । मिलने की आशा के साथ,

तुम्हारा भाई
संजय कुमार

अध्याय-5 निबंध लेखन

राष्ट्रीय एकता

प्रस्तावना— प्राचीनकाल में भारत में अनेक सम्प्रदाय, धर्म तथा गणराज्य होते हुए भी सांस्कृतिक एकता के सूत्र सुदृढ़ थे । लेकिन वर्तमान में राजनैतिक स्वार्थ एवं धर्मिक कट्टरता के कारण हमारी राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ गई है ।

भारत में राष्ट्रीय एकता— अनेकता में एकता के दर्शन भारत की अनूठी विशेषता है । यहाँ प्राचीनकाल से ही ज्ञान, प्रवृत्ति, कर्म, धर्म आदि में पूर्ण समन्वय रहा है । इसी समन्वयी प्रवृत्ति के कारण बाहर से आने वाली सम्पूर्ण संस्कृतियों को भी यहाँ अपनाया गया । वर्तमान में भारत में साम्प्रदायिकता के कारण राष्ट्रीय एकता में कमी आ रही है । भाषावाद तथा क्षेत्रवाद के कारण अलगाव की प्रवृत्ति बढ़ रही है । कश्मीर तथा पूर्वोत्तर राज्यों में अलगाववाद तथा आतंकवाद पनप रहा है । कुछ क्षेत्रों में नक्सलवाद, जातिवाद एवं वर्गवाद भी बढ़ रहा है । फलस्वरूप आज भारत में राष्ट्रीय एकता बनाये रखना कठिन हो गया है ।

वर्तमान में राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता— लोकतन्त्र की स्थिरता, स्वतन्त्रता की रक्षा तथा राष्ट्र के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए राष्ट्रीय एकता की परम आवश्यकता है । जब तक सम्पूर्ण राष्ट्र एकता के सूत्र में नहीं बँधेगा तब तक देश का न तो विकास ही हो सकेगा और न आर्थिक प्रगति हो सकेगी । अतएव प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह राष्ट्र-प्रेम को बढ़ावा दे तथा राष्ट्रीय एकता को दृढ़ करे ।

उपसंहार— आज भारत में एकता का स्वर गूँजने लगा है । उसकी रक्षा के लिए आज राष्ट्रीय भावना की प्रबल आवश्यकता है । अत: हमें जाति, धर्म या क्षेत्रवाद जैसी क्षुद्र विचारधराओं से दूर रहकर विघटनकारी तत्वों का दमन करना चाहिए ।

हिन्दी व्याकरण कक्षा – 7

अध्याय-1 संज्ञा

● *पुस्तक से*

1. **संज्ञा**—किसी भी व्यक्ति, जाति, भाव या स्थान के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। जैसे—राम, बस, दिल्ली, गाय, टेबल आदि।
2. संज्ञा के तीन भेद होते हैं—
   1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा, 3. भाववाचक संज्ञा।
   1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा—** जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का ज्ञान होता है; उन संज्ञा शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द कहते हैं। जैसे—कुतुबमीनार, महात्मा गाँधी, अशोक आदि।
   2. **जातिवाचक संज्ञा**—जिन शब्दों से व्यक्ति, प्राणी, स्थान तथा वस्तु के नाम की अपेक्षा उनकी सम्पूर्ण जाति का बोध ा हो, तो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे— बालक पढ़ रहे हैं, सब्जियाँ सजी हुई हैं, मिठाई ताजी है।
   3. **भाववाचक संज्ञा**—जिन शब्दों से अवस्था, भावों तथा गुणों के नाम की पहचान की जाती है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—उदारता से समाज चलता है, वीरता वीरों का गुण है, क्रोध एक मानवीय दुर्गुण है।
3. जातिवाचक एवं समुदायवाचक संज्ञा में निम्नलिखित अन्तर है—
   जातिवाचक संज्ञा—जिन शब्दों से व्यक्ति, प्राणी, स्थान तथा वस्तु के नाम की अपेक्षा उनकी सम्पूर्ण जाति का बोध हो, तो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—आगरा में अनेक मुगलकालीन इमारतें हैं। लड़कियाँ पढ़ाई में होशियार हैं। खिलाड़ियों में सचिन का बड़ा नाम है।
   समुदायवाचक संज्ञा— जो शब्द व्यक्तियों तथा वस्तुओं के समूहों की सूचना देते है, ऐसे शब्द समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा शब्द कहलाते है। जैसे—पुस्तक मेले में बहुत भीड़ है। मधुमक्खी का झुंड अचानक टूट पड़ा।
4. **द्रव्यवाचक संज्ञा**—वे शब्द जिनसे द्रव्य या पदार्थ के नाम की सूचना मिलती है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द कहते हैं। जैसे—जल ही जीवन है, इसे बचाइए। पैट्रोल के दाम आसमान पर हैं।
5. 'कवित्व' शब्द भाववाचक संज्ञा शब्द है।
6. **भेद**—(क) व्यक्तिवाचक, (ख) जातिवाचक, (ग) जातिवाचक, (घ) जातिवाचक, भाववाचक, (ङ) समूहवाचक, (च) द्रव्यवाचक, (छ) जातिवाचक, भाववाचक।
7. (क) महात्मापन, महात्यता (ख) चौड़ाई, (ग) व्यक्तित्व, (घ) स्वत्व, (ङ) माँग, (च) मधुरता, (छ) लालिमा, (ज) आलस्य।
8. (क) मानवता, (ख) हँसी, (ग) धैर्य, (घ) हरियाली, (ङ) नेतृत्व, (च) खान-पान, (छ) मनाही।
9.

संज्ञा शब्द		**संज्ञा भेद**
मोर	—	जातिवाचक
बच्चे	—	समूहवाचक
ईश्वर	—	व्यक्तिवाचक
नीलकमल	—	जातिवाचक
गुलशन	—	जातिवाचक
पंख	—	जातिवाचक
अंबर	—	व्यक्तिवाचक

● *खेल-खेल में*

व्यक्तिवाचक संज्ञा — मोहन पढ़ता है।
जातिवाचक संज्ञा — डॉक्टर भगवान का दूसरा रूप होते हैं।
भाववाचक संज्ञा — खान-पान से स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
समूहवाचक संज्ञा — मुझे फूलों का गुच्छा बहुत पसन्द है।
द्रव्यवाचक संज्ञा — जल है, तो कल है। इसे बचाइए।

अध्याय-2 सर्वनाम

● *पुस्तक से*

1. **सर्वनाम**—संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द, सर्वनाम शब्द कहलाते हैं। जैसे—उसकी, मुझे, वह, तुम, कोई आदि।
2. सर्वनाम के छह प्रमुख भेद हैं—
   1. पुरुषवाचक सर्वनाम — मुझे
   2. निश्चयवाचक सर्वनाम — यह
   3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम — कुछ
   4. संबंधवाचक सर्वनाम — जिसकी
   5. प्रश्नवाचक सर्वनाम — किसे
   6. निजवाचक सर्वनाम — स्वयं
3. निजवाचक सर्वनाम तथा उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम में निम्न अन्तर है—
   निजवाचक सर्वनाम—वे सर्वनाम शब्द जिनसे कर्त्ता या संज्ञा शब्द के साथ उसके अपनेपन का बोध हो, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—मैं अपना काम स्वयं करूँगा।
   यहाँ स्वयं सर्वनाम शब्द मैं के साथ अपनेपन की जानकारी देता है।
   उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम—वे सर्वनाम शब्द जो वक्ता या बोलने वाले के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे—मुझे नींद आ रही है।
4. (क) जिनको, (ख) मुझसे, (ग) किसकी, (घ) आप में (ङ) तुम्हारे, (च) इनसे।
5. (क) मुझे सफलता प्राप्त करनी है। (ख) उससे नमस्ते करना चाहिए।
   (ग) उसमें कागज रखे हैं। (घ) उसके द्वारा भाषण दिया गया।
   (ङ) वह अजमेर गया था। (च) उनके पिताजी जज हैं।
6. (क) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम (ख) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम
   (ग) प्रश्नवाचक सर्वनाम (घ) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
   (ङ) उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम (च) प्रश्नवाचक सर्वनाम

● *खेल-खेल में*

- उनका — अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- उनके — अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- यह — निश्चयवाचक सर्वनाम
- इस — निश्चयवाचक सर्वनाम
- वे — अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- उन्होंने — अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- मैंने — उत्तम पुरुष सर्वनाम
- मेरा — उत्तम पुरुष सर्वनाम

अध्याय-3 विशेषण

● *पुस्तक से*

1. **विशेषण**—वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।
2. विशेषण एवं विशेष्य में अन्तर है— जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है। जिन शब्दों की विशेषण विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहा जाता है। जैसे—

विशेषण	**विशेष्य**
खट्ठा	नींबू
मधुर	वाणी
ऊँचा	पहाड़

3. (क) **विशेषण—** वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।
   प्रविशेषण — वे शब्द जो विशेषण शब्दों की विशेषता बताते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं।
   (ख) **सर्वनाम**—वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।
   सार्वनामिक विशेषण—जो सर्वनाम शब्द संज्ञा/सर्वनाम के पूर्व आकर उसकी विशेषता बताते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।
   (ग) **संख्यावाचक विशेषण**—वे शब्द जिनसे वस्तुओं अथवा व्यक्तियों की संख्या की जानकारी दी जाती है; उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
   परिमाणवाचक विशेषण—वे शब्द जिनसे वस्तुओं का परिमाण या मात्रा अथवा वजन की सूचना दी जा सकती है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।
   (घ) **मूलावस्था**—यह गुणों की सामान्य अवस्था होती है, जिसमें तुलना नहीं होती।
   उत्तमावस्था—इसमें तुलना के दौरान एक को सबसे अधिक या कम बताया जाता है।
4. (क) कमाऊ — खिलाड़ियों, (ख) दुर्बल — व्यक्ति, (ग) निचला — हिस्सा, (घ) क्रोधी — व्यक्ति, (ङ) अनुभवी — व्यक्ति, (च) पालनहार — भगवान।
5. थोड़ा — (i) थोड़े केले और दे दो। (संख्यावाचक)
   (ii) मुझे थोड़ा दूध चाहिए। (परिमाणवाचक)
   बहुत — (i) मैदान में खिलाड़ियों की संख्या बहुत कम थी। (संख्यावाचक)
   (ii) घर में बहुत अनाज भरा है। (परिमाणवाचक)
   कुछ — (i) कुछ सेव अच्छे और मीठे हैं। (संख्यावाचक)
   (ii) बर्तन में कुछ घी और डाल दो। (परिमाणवाचक)
   जरा — (i) प्रवचन हॉल में जरा से आदमी थे। (संख्यावाचक)
   (ii) शरबत में जरा सी चीनी और डाल दो। (परिमाणवाचक)
6. (क) स्नेहमय, (ख) कुलीन, (ग), ऊपरी, (घ) यौगिक, (ङ) चालू, (च) रंगीन, (छ) कौन-सी, (ज) बाहरी, (झ) आनंदित, (ञ) नीतिज्ञ, (ट) पूजनीय, (ठ), व्यावहारिक।
7. (क) गुरु गुरुतर गुरुतम
   (ख) तीव्र तीव्रतर तीव्रतम
   (ग) कोमल कोमलतर कोमलतम
   (घ) न्यून न्यूनतर न्यूनतम

(ङ) दीर्घ दीर्घतर दीर्घतम
(च) मंद मंदतर मंदतम

8. (क) वह गाय उसकी है। यह गाय है।
(ख) ये नींबू खट्टे हैं। ये नींबू हैं।
(ग) वे फल अच्छे हैं। ये फल हैं।
(घ) वह गाड़ी उनकी है। वह गाड़ी है।

9. सांस्कृतिक, (ख) मरियल, (ग) स्वर्णिम, (घ) सहायक, (ङ) सपेरा, (च) जोशीला।

● *स्वयं कीजिए*

आमतौर पर दैनिक जीवन में हम विशेषणों का प्रयोग करते हैं। जिससे बोलचाल, भावों को प्रकट करने व लेखन में सजीवता व सुन्दरता आती है। अगर हम विशेषणों का प्रयोग दैनिक जीवन में नहीं करेंगे तो दुनिया रूखी, नीरस, बेजान लगेगी तथा अपने मनोभाव पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं कर पाएँगे।

अध्याय–4 लिंग

● *पुस्तक से*

1. **लिंग**—जिन शब्दों से उनके स्त्री या पुरुष जाति के होने की जानकारी मिले, उन्हें लिंग कहते हैं।
2. लिंग के दो भेद होते हैं—
   (i) **पुल्लिग**—जिन शब्द रूपों से पुरुष जाति के होने की सूचना मिले, उन्हें पुल्लिग कहते हैं। जैसे— छात्र, अध्यापक, घी।
   (ii) **स्त्रीलिंग**—जिन शब्द रूपों से स्त्री जाति के होने की सूचना मिले, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे—छात्रा, शालू, शिक्षिका, जेठानी आदि।
3. (i) मछली, (ii) छिपकली
4. (क) हलवाइन, (ख) बाघिन, (ग) नायक, (घ) घोड़ा, (ङ) बेगम, (च) वर।
5. (क) पुल्लिग उबले हुए चावल खाने चाहिए।
   (ख) स्त्रीलिंग हरियाणा के व्यक्ति खड़ी बोली बोलते हैं।
   (ग) स्त्रीलिंग भक्त मण्डली बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रही है।
   (घ) पुल्लिग मन की शांति के लिए हवन हो रहा है।
   (ङ) स्त्रीलिंग यह कुर्सी मेरी है।
   (च) पुल्लिग पलाश के फूल साहित्यकारों के प्रिय वर्ण्य विषय हैं।
6. (क) मालिन, (ख) चिड़िया, (ग) तपस्विनी, (घ) पंडिताइन, (ङ) श्रीमती, (च) सेविका, (छ) जुलाबी, (ज) कवयित्री, (झ) वीरांगना, (ञ) साम्राज्ञी)।
7. **स्त्रीलिंग**—हिन्दी, कलम, डिबिया, पहाड़ी, सिलाई, चिनाब, जेल।
   पुल्लिग—सागर, थैला, कमरा, चना, आम, भादों, बुधवार, पैसा, छिपाव, रस।
8. (क) स्त्रीलिंग, (ख) पुल्लिग, (ग) पुल्लिग, (घ) स्त्रीलिंग, (ङ) पुल्लिग, (च) पुल्लिग।

● *खेल-खेल में*

स्त्रीलिंग	पुल्लिग	उभयलिंग
टोपी	लेखक	राष्ट्रपति
नानी	भगवान	डॉक्टर
शेरनी	सेठ	पत्रकार
प्रिया	पिता	प्रोफेसर
धोबिन	घोड़ा	इन्जीनियर

● *स्वयं करिए—*

उठो लाल अब आँखें खोलो
पानी लाई हूँ मुँह धो लो
बीती रात कमल-दल फूले
उनके ऊपर भौंरे झूले।

पुल्लिग—लाल, पानी, मुँह, कमल-दल, भौंरे।
स्त्रीलिंग—आँखें, रात।

अध्याय-5 वचन

● *पुस्तक से*

1. **वचन**—जिन शब्द रूपों से उनकी संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

जैसे—	**एकवचन**	**बहुवचन**
	किताब	किताबें
	घोड़ा	घोड़े
	बहन	बहनें

2. वचन के दो भेद हैं— (1) एकवचन (2) बहुवचन
   (1) एकवचन - पंखा (2) बहुवचन - पंखे

3.

सदैव एकवचन	**सदैव बहुवचन**
जनता	प्राण
सत्य	आँसू
वर्षा	दाम
पानी	

4. (क) युवा (ख) गौएँ (ग) ऋतुएँ (घ) मेज (ङ) विधि (च) राहें
   (छ) बुढ़ियाँ (ज) पक्षी (झ) कुरतों (ञ) बस्ता।
5. (क) रचनाएँ (ख) रानियाँ (ग) गाय (घ) जूते (ङ) दीवारें (च) लेखकगण
6. (क) चिड़ियाँ अपने घोंसलों में वापस आ रही हैं।
   (ख) सड़कें खाली पड़ी हैं।
   (ग) बेटियाँ अनमोल उपहार होती हैं।
   (घ) चाबियाँ घर पर ही रह गईं।

(ङ) बच्चे सड़क पार नहीं कर पा रहे हैं।

(च) हाथी अपनी चाल चल रहे हैं। कुत्ते भौंक रहे हैं।

7. (क) रोते समय आँसू निकलते हैं। (बहुवचन)

(ख) रोजाना 6 से 7 गिलास पानी पीना चाहिए। (बहुवचन)

(ग) टीम का एक दल रवाना हो चुका है। (एकवचन)

(घ) कृपया हस्ताक्षर कर दीजिए। (बहुवचन)

8. (क) मेरा कुर्ता पहन रहे हैं। (ख) भेड़ें दौड़ती जा रही हैं।

(ग) गुरुजन हमें बहुत अच्छी सीख देते हैं। (घ) आकाश कितना लाल हो रहा है।

(ङ) चाय बड़ी अच्छी बनाई है। (च) आकाश में पतंगें उड़ रही हैं।

● *खेल-खेल में*

1.	चतुर	(एकवचन)	2.	रातें	(बहुवचन)
3.	तराजू	(एकवचन)	4.	जहाज	(एकवचन)
5.	जगत	(एकवचन)			

● *स्वयं करिए—*

1. आज — आज खाना खा लिया। (एकवचन)
   — आज बहिनें आ गईं । (बहुवचन
2. बादल — बादल छाया हुआ है। (एकवचन)
   — बादल छा रहे हैं। (बहुवचन)
3. बालक — बालक खेल रहा है। (एकवचन)
   — बालक दौड़ रहे हैं। (बहुवचन)
4. कबूतर — कबूतर दाना चुग रहा है। (एकवचन)
   — कबूतर पेड़ पर बैठे हैं। (बहुवचन)
5. बैल — बैल घास चर रहा है। (एकवचन)
   — बैल खेत जोत रहे हैं। (बहुवचन)

अध्याय-6 कारक

● *पुस्तक से*

1. **कारक**—वे शब्द या शब्दांश जो संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के शेष भाग से जोड़ते हैं, कारक कहलाते हैं।
   जैसे— पिताजी दिल्ली <u>को</u> जाएँगे।
   राम श्याम <u>का</u> दोस्त है।
   को, का शब्द जोड़ने से वाक्य पूर्ण हो जाता है, ये शब्द ही कारक कहलाते हैं।
2. कारक के आठ भेद होते हैं—
   (i) कर्ता कारक — बस ड्राइवर <u>ने</u> ब्रेक लगाए।
   (ii) कर्म कारक — गन्दगी <u>को</u> साफ करना चाहिए।
   (iii) करण कारक — मैं बस <u>से</u> आगरा गया।
   (iv) संप्रदान कारक — आज पिताजी <u>के</u> लिए गाड़ी खरीदूँगा।

(v) अपादान कारक – बुरी संगति से दूर रहना चाहिए।
(vi) सम्बन्ध कारक – यह राहुल की किताब है।
(vii) अधिकरण कारक – सीता पार्क में खेल रही है।
(viii) संबोधन कारक – अरे ! तुम यहीं रह गये।

3. (क) **कर्म कारक** – वाक्य में क्रिया का प्रभाव जिस पर होता है, वह 'कर्म' कहलाता है।
संप्रदान कारक – जिस कारक से किसी को कुछ देने का भाव प्रकट हो, उसे संप्रदान कारक कहते हैं।
(ख) **करण कारक** – कारक के जिस रूप से क्रिया के कारण या साधन का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं।
अपादान कारक – जिस कारक चिह्न से किसी व्यक्ति या वस्तु से अलग होने का भाव प्रकट हो रहा हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

4. (क) से (द्वारा)– करण कारक (ख) में – अधिकरण कारक
(ग) से (अलग होना) – अपादान (घ) के लिए – संप्रदान कारक
(ङ) की – संबंध कारक (च) अरे ! – संबोधन कारक
(छ) से – अपादान कारक

5. से– 1. मैं मोहन से अलग रहता हूँ।
2. दूध पीने से ताकत आती है।
को– 1. राहगीर को जल पिलाना मानवता का काम है।
2. यह किताब मैं पीयूष को दूँगा।

6. (क) में – कर्ता कारक
(ख) पर – अधिकरण कारक
(ग) से – करण कारक
(घ) को – कर्म कारक, ने – कर्ता कारक, से – करण कारक
(ङ) ने – कर्ता कारक, को – कर्म कारक, में – अधिकरण कारक
(च) से – करण कारक

● *खेल-खेल में*

1. मैं गया । मुझको जाना चाहिए।
2. तुम जाओ । तुमको जाना चाहिए।
3. वह खाए। उसको खाना चाहिए।

● *स्वयं कीजिए*

कारक चिह्न संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के शेष भाग से जोड़ते है। अगर हम लिखने या बोलने में कारकों का प्रयोग नहीं करेंगे तो वाक्य पूर्ण नहीं होगा। अर्थ समझने में बाधा उत्पन्न होगी। अत: कारक का हमारे जीवन व बोलचाल में अत्यंत महत्व है।

अध्याय-7 उपसर्ग

● *पुस्तक से*

1. **उपसर्ग**–वे शब्दांश जो मूल शब्द के पूर्व आकर जुड़ते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।
2. उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं–

(i) संस्कृत के उपसर्ग — अनु — अनुकूल
अभि — अभिमान
(ii) हिन्दी के उपसर्ग — अ — अलग
अन — अनमोल
(iii) उर्दू के उपसर्ग — कम — कमजोर
हर — हरदिल
(iv) संस्कृत के अव्यय — अधः — अधः पतन
स्व — स्वदेश

3. 1. बेखबर, 2. सरपंच, 3. गैरजरूरी, 4. बाइज़्ज़त

4.

उपसर्ग	**मूल शब्द**	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
उप	ग्रह	परि	वहन
अति	आचार	सह	पाठी
प्र	ताप	कम	जोर
अव	मानना	प्रति	क्षण

5.

उपसर्ग	**शब्द**	**अर्थ**
होनी — अन	अनहोनी	जो पहले से निश्चित न हो।
पता — ला	लापता	गायब
शासन — अनु	अनुशासन	नियंत्रण
जय — परा	पराजय	हार
देशी — वि	विदेशी	देश से बाहर का

6. 1. अधिक, विशेष 2. बिना 3. निषेध 4. एक कम 5. सामने
6. अगली या पिछली पीढ़ी का 7. नया 8. बुरा 9. पूरी 10. साथ

● *खेल-खेल में*

1. सत्कार	1. कुविचार
2. सहकार	2. कुकर्म
3. सदाचार	3. कुदृष्टि
4. सहधर्मी	4. कुकृत्य
5. सहयोग	5. कुपुत्र

अध्याय-8 प्रत्यय

● *पुस्तक से*

1. **प्रत्यय**—कुछ शब्दांश शब्दों के अन्त में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं। ऐसे शब्दांशों को प्रत्यय कहा जाता है।

2. प्रत्यय के मुख्यतः दो भेद होते हैं— (i) कृत् प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय।

3. जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।
जैसे—आर + लोध = लोहार, वाला + गाड़ी = गाड़ी वाला।

4. जब प्रत्यय क्रियाओं या धातुओं के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं तो कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।
जैसे—पालन + हान = पालनहार । सज + आवट = सजावट

5.	**शब्द**	**प्रत्यय**	**मूल शब्द**	**शब्द**	**प्रत्यय**	**मूल शब्द**
	चढ़ावा	आवा	चढ़	लुटेरा	ऐरा	लुट
	लड़ाका	आका	लड़	भुलक्कड़	अक्कड़	भुल
	कृपालु	आलु	कृपा			
6.	ई	अभिमानी	मोहिनी	आलु	कृपालु	दयालु
	अना	देवांगना	दौड़ना	एरा	चचेरा	खचेरा
	आवट	सजावट	लिखावट	तम	लघुतम	दीर्घतम
	आन	उड़ान	थकान	हार	पालनहार	देखनहार
7.	आई	—	अच्छाई	=	राम की अच्छाई की सभी तारीफ करते हैं।	
	ऊ	—	पेटू	=	कुश बहुत पेटू है।	
	ईय	—	दर्शनीय	=	मथुरा एक दर्शनीय स्थल है।	
	आलु	—	दयालु	=	दयालु होना एक अच्छा गुण है।	
8.		**उपसर्ग**	**प्रत्यय**		**उपसर्ग**	**प्रत्यय**
	कमजोरी	कम	ई	बेरहमी	बे	ई
	बदसूरती	बद	ई	निर्दयता	निर्	ता

9. (क) अड़ियल, (ख) रमणीय, (ग) थाली, (घ) बिछौना, (ङ) मनौती (च) बिकाऊ

● *खेल-खेल में*

1. कलाकार — कला - कार । 2. खिलौना — औना + खेल।

● *स्वयं करिए*

उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का ही प्रयोग नए शब्दों के निर्माण के लिए किया जाता है। परंतु दोनों में अंतर है। उपसर्गों का प्रयोग शब्दों के प्रारम्भ में किया जाता है, जबकि प्रत्ययों का प्रयोग शब्दों के अंत में जैसे—अपमान शब्द में 'अप' उपसर्ग है। मानवता शब्द में 'ता' प्रत्यय है।

अध्याय-9 क्रिया

● *पुस्तक से*

1. **क्रिया**—वे शब्द जिसने किसी कार्य के किए जाने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं।
2. क्रिया के दो भेद होते हैं— (1) कर्म के आधार पर (2) संरचना/बनावट के आधार पर।
   जैसे—आज मैं दिनभर सोता रहा। सूर्य पूरब से निकल रहा है।
3. पूर्वकालिक क्रिया तथा कृदंत क्रिया में निम्न अंतर है—
   पूर्वकालिक क्रिया—वे क्रिया रूप जो मुख्य क्रिया से पूर्व आकर मुख्य क्रिया को विस्तार देते हैं, उन्हें पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। जैसे— रवीना आकर सो गई।
   कृदंत क्रिया—वे क्रिया जो कृत् प्रत्यय के योग से बनते हैं। वे कृदंत क्रिया कहलाती हैं। जैसे— चल + आ = चला।
4. (क) **अकर्मक क्रिया**—जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म उपस्थित न हो, अकर्मक क्रिया कहते हैं।
   सकर्मक क्रिया—वह क्रिया जिसमें कर्म उपस्थित हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
   (ख) **एककर्मक क्रिया**—जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक ही कर्म उपस्थित हो, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं।
   द्विकर्मक क्रिया—जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म एक साथ उपस्थित हों, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

(ग) **प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया**—जिस क्रिया में कर्ता स्वयं उपस्थित होकर कार्य की प्रेरणा दे, उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया—जब कर्ता कार्य में स्वयं न सम्मिलित होकर किसी और को कार्य करने की प्रेरणा देता है, उसे द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

5.

	प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	**वाक्य**
(क)	रुलाना	बच्चों को रुलाना नहीं चाहिए।
(ख)	पढ़ाना	राम को पढ़ाना आवश्यक है।
(ग)	जिताना	श्याम को यह मैच जिताना होगा।
(घ)	सुलाना	माँ बच्चे को सुलाना चाहती है।
(ङ)	रहवाना	रमेश अपनी माँ को अपने साथ रहवा रहा है।
(च)	जिलाना	डाक्टर उचित दवा देकर मरीज को जिलाता है।
(छ)	दौड़ाना	घोड़े को दौड़ाना होगा।

6. (क) बनाती (ख) सिखाया (ग) पढ़ना (घ) कर (ङ) टकरा (च) गिरने (छ) आकर

7. (क) दनदनाना (ख) ललचाना (ग) खरीदना (घ) हिनहिनाना (ङ) नरमाना (च) शर्माना (छ) धकियाना (ज) टपकाना (झ) हथियाना (ञ) गाँठना (त) दौड़ाना (थ) लतियाना

8. (क) भाग (ख) कूद (ग) खेलते-खेलते (घ) लेटते ही (ङ) गिरते-गिरते (च) आए (छ) रुक-रुककर

9. (क) पढ़ (ख) चढ़ (ग) रुला (घ) समझ (ङ) खेल (च) चल (छ) काट (ज) नाच (झ) देख (ञ) रो (च) धो (छ) बो

10. (क) वह जाकर सोया। (ख) तुम उठकर चलो।
(ग) मैं अभी जाकर आया। (घ) कहाँ चले गये।
(ङ) इधर चलकर आओ। (च) यहाँ उठकर बैठो।

● *खेल-खेल में*

1. मुग्धा खिला रही है।
2. अनुज पिला रहा है।
3. वह खाकर टहलने चला गया।
4. बच्चा पीकर सो गया।
5. अभिनव खा चुका था।

● *स्वयं करिए*

1. चाँद निकल आया।	डॉक्टर कमरे से निकल आया।
2. आज बारिश हो रही है।	गीता रो रही है।
3. जोर की हवा चल रही है।	कार तेजी से चल रही है।
4. पहाड़ों पर बर्फ गिर रही है।	मेज से किताब गिर रही है।
5. आसमान लाल हो गया।	क्रोध से राजेश लाल हो गया।

अध्याय-10 काल

● *पुस्तक से*

1. **काल**—क्रिया के जिस रूप से उसके घटित होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।
2. किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं। यह क्रिया जिस समय में होती है वह उसका काल कहलाता है।
3. **हेतु हेतुमद भूतकाल**—क्रिया के जिस रूप से भूतकाल में होने वाला कार्य किसी और क्रिया पर निर्भर हो, उसे हेतु हेतुमद भूतकाल कहते हैं। जैसे—सूरज निकल आता तो ठण्ड कम हो जाती।
   हेतु हेतुमद भविष्यकाल—क्रिया के जिस रूप से भविष्य में होने वाला कार्य किसी अन्य कार्य के होने पर निर्भर हो, उसे हेतु हेतुमद भविष्यकाल कहते है। जैसे—समय पर बारिश न हुई तो फसल सूख जाएगी।
4. (क) अर्जुन ने बाण बरसाए थे। (ख) तुम तुरंत निकल गए थे।
   (ग) सुहानी स्कूल नहीं जाती है। (घ) मयंक खाना खा रहा है।
   (ङ) सोहन पढ़ता तो उत्तीर्ण हो जाता।
5. (क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया (ग) अकर्मक क्रिया (घ) सकर्मक क्रिया (ङ) सकर्मक क्रिया
   (च) सकर्मक/अकर्मक क्रिया (छ) सकर्मक क्रिया (ज) सकर्मक क्रिया
6. (क) राम, श्याम घूमते होंगे। (ख) तुम खेलते तो जीत जाते।
   (ग) शायद आज बुआ जी आएँगी। (घ) रोहन पत्र लिख रहा है।
   (ङ) गजल समाप्त हो गयी।
7. **होना—** (i) बारिश हो रही है। (ii) कल परीक्षा परिणाम घोषित हुआ।
   जाना— (i) राम आगरा जाएगा। (ii) संजय अजमेर जाता है।
   मिलना— (i) मेले में बालक मिल गया था। (ii) दोनों भाई गले मिलते हैं।
   (iii) मैं कल भाई से मिलूँगा।
   देखना— (i) मैंने प्रकृति का मनोरम दृश्य देखा था। (ii) मोहन चित्तौड़ का किला देखेगा।
   (iii) सीता चित्र देखती है।

● *खेल-खेल में*

संदिग्ध वर्तमान काल	**भविष्यत् काल**
1. राज जाता होगा।	राज जाएगा।
2. बच्चे फुटबॉल खेलते होंगे।	बच्चे फुटबॉल खेलेंगे।
3. रघु पढ़ता होगा।	रघु पढ़ेगा।

● *स्वयं करिए*

1. पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है।
2. बादलों में इन्द्रधनुष चमकता है।
3. पहाड़ों पर बर्फ पड़ रही है।
4. अमावस्या को चाँद छिप जाता है।
5. पूर्णिमा को चाँद चाँदनी बिखेरता है।

अध्याय-11 संधि

● *पुस्तक से*

1. **संधि**– दो समान या भिन्न ध्वनियों के मेल से होने वाले विकार या परिवर्तन को संधि कहते हैं।
2. **संधि के तीन भेद होते हैं**–(1) स्वर संधि (2) व्यंजन संधि (3) विसर्ग संधि।
3. **स्वर संधि**–जब दो स्वरों का मेल होता है तो उसे स्वर संधि कहते हैं।
   जैसे– वेद + अंत = वेदांत, उमा + ईश = उमेश।
4. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं–
   (i) दीर्घ संधि – परम + अर्थ = परमार्थ। (ii) गुण संधि – नर + इंद्र = नरेन्द्र
   (iii) वृद्धि संधि – सदा + एव = सदैव। (iv) यण् संधि – वि + आकुल = व्याकुल
   (v) अयादि संधि – नै + अक = नायक।
5. व्यंजन ध्वनि का किसी अन्य स्वर या व्यंजन से मेल होता है, तब उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
   जैसे– जगत् + ईश = जगदीश।
6. व्यंजन संधि के नियम–
   नियम-1. वर्ग के पहले (1) वर्ण का तीसरे (3) वर्ण में बदलाव होना। जैसे– दिक् + अंबर = दिगंबर।
   नियम-2. वर्ग के पहले (1) वर्ण का पाँचवें (5) वर्ण में बदलाव होना। जैसे– सत् + मार्ग = सन्मार्ग।
   नियम-3. 'त' संबंधी नियम–यदि पहले शब्द के अंत में त् आए और दूसरे शब्द के आरंभ में च, छ, ज, ट, र तथा ल आए तो त् क्रमशः च् छ् न् ट् ड् तथा व् में बदल जाता है, परंतु त् के बादयदि श् हो तो वे च् में तथा श् छ में बदल जाता है। उसी प्रकार त् के बाद न् हो, तो त् द् में तथा ह् व में बदल जाता है। जैसे– उत् + चारण = उच्चारण।
   नियम-4. 'छ' संबंधी नियम–अगर किसी स्वर में पहले 'छ' आ जाए तो 'छ' से पहले 'च' वर्ण आ जाता है। जैसे– अनु + छेद = अनुच्छेद।
   नियम-5. 'म' संबंधी नियम–यदि 'म' के बाद से म तक कोई व्यंजक आए तो 'म्' उस व्यंजन के पंचम वर्ण में बदल जाता है। जैसे– सम् + तोष = संतोष।
7. **विसर्ग संधि**– विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर जो परिवर्तन (विकार) उत्पन्न होता है, तो वह विसर्ग संधि कहलाता है; जैसे– निः + चय = निश्चय । अतः + एव = अतएव।
8. **स्वर संधि**–जब दो स्वरों का मेल होता है तो उसे स्वर संधि कहते हैं; जैसे– उमा + ईश = उमेश।
   व्यंजन संधि–व्यंजन ध्वनि का किसी अन्य स्वर या व्यंजन से मेल होता है, तब उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
   जैसे– उत् + ज्वल = उज्ज्वल।
9. (क) सूर्योदय (ख) महेन्द्र (ग) विद्यार्थी (घ) प्रत्युपकार (ङ) गजेन्द्र
   (च) निष्फल (छ) उल्लेख (ज) सत्वाणी/सद्वाणी (झ) प्रातःकाल (ञ) संतोष
   (च) स्वागत (छ) उल्लास (ज) भोजनालय (ण) सम्पूर्ण
10. (क) स्वर सन्धि (अयादि संधि)
11. (ग) प्रत्युपकार
12. (क) निस्सार
13. (i) (ख) [✓] यद्यपि (ii) (क) [✓] उपर्युक्त
    (iii) (क) [✓] 5 (iv) (क) [✓] व्यंजन-स्वर

14. **स्वरसंधि भेद** **उदाहरण**

(i)	दीर्घ संधि	पर + अधीन = पराधीन
(ii)	गुण संधि	महा + ऋषि = महर्षि
(iii)	वृद्धि संधि	एक + एक = एकैक
(iv)	यण् संधि	प्रति + एक = प्रत्येक
(v)	अयादि संधि	पो + अन = पवन

15. (i) मनः + रथ = मनोरथ (ii) निः + गुण = निर्गुण (iii) नमः + ते = नमस्ते।

16. (i) रजनीश, (ii) रवीश, (iii) मुनींद्र (iv) हिमालय।

● ***खेल-खेल में***

नदी + ईश = नदीश गिरि + ईश = गिरीश वाक् + ईश = वागीश

दिवा + ईश = दिवेश रमा + ईश = रमेश विद्या + आलय = विद्यालय

भोजन + आलय = भोजनालय औषध + आलय = औषधालय शिक्षा + आलय = शिक्षालय

शिव + आलय = शिवालय

● ***स्वयं करिए***

प्रत्येक शब्द का संधि विच्छेद नहीं किया जा सकता, क्योंकि कुछ शब्द अपने आप में संपूर्ण होते हैं। उनका वर्ण-विच्छेद तो किया जा सकता है, लेकिन संधि नहीं की जा सकती है। जैसे—राम, मोहन आदि। जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से बने होते हैं, उनका संधि विच्छेद किया जा सकता है।

जैसे— देवालय = देव + आलय। महर्षि = महा + ऋषि।

अध्याय–12 शब्द विचार

● ***पुस्तक से***

1. **शब्द**—वर्णों के सार्थक सामूहिक मेल को शब्द कहते हैं। वर्ण एवं शब्द में अन्तर—वर्ण का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता है, जबकि शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है। वर्णों के मेल से शब्द बनते है, जबकि शब्दों के अर्थ के समूह से वाक्य बनते है।

2. शब्द के पाँच भेद होते हैं—

1. उत्पत्ति के आधार पर जैसे—भाई कंटक, मच्छर आदि।
2. रचना या बनावट के आधार पर जैसे—गाय, घुड़साल, नीलकंठ आदि।
3. अर्थ के आधार पर जैसे—आँख, सहपाठी, आचार्य, गरीब आदि।
4. प्रयोग के आधार पर जैसे—पहाड़ी, न्यायालय, भौतिकी आदि।
5. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर जैसे—अथवा, अरे!, बाहर, बड़ा, घोड़ा आदि।

3. (क) **अनेकार्थी शब्द**— वे शब्द जो अनेक अर्थ देते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।
जैसे— अनंत = आकाश, अविनाशी, विष्णु।
एकार्थी शब्द—वे शब्द जिनके अर्थ समान हों, उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं।
जैसे— द्वेष = शत्रुता का भाव। ईर्ष्या = जलन का भाव।

(ख) **तत्सम शब्द**—संस्कृत भाषा से बिना किसी परिवर्तन के आए हुए शब्द तत्सम शब्द कहलाते हैं।
जैसे—भ्राता, दुग्ध, स्वर्ण आदि।

तद्भव शब्द—वे शब्द जो संस्कृत भाषा से उत्पन्न तो हैं परन्तु हिन्दी में परिवर्तित रूप में सम्मिलित हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे—पौधा, कौवा, आग आदि।

(ग) **यौगिक शब्द**—वे शब्द जो दूसरे शब्दों के योग से बनते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं।
जैसे—राष्ट्रपिता, रसोईघर, पीलापन आदि।
योगरूढ़ शब्द—वे शब्द जो योग या जोड़ से बने हों, परन्तु उनका अर्थ अत्यंत प्रचलित होता है, ऐसे शब्द योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे—दशानन, नीलकंठ, पंकज आदि।

(घ) **विकारी शब्द**—ऐसे शब्द जिसमें निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। ये शब्द प्रायः लिंग, वचन, काल एवं कारक के आधार पर परिवर्तित होते हैं। ऐसे शब्द विकारी शब्द कहलाते हैं।
जैसे— बड़ा, बड़े, बड़ी, आता, आते, आती।
अविकारी शब्द—ये शब्द विकारी शब्द के विपरीत होते हैं अर्थात वे शब्द जिनमें किसी भी अवस्था में परिवर्तन नहीं होता, अविकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे—बाहर, जल्दी, धीरे-धीरे।

4. (क) आँख, नेत्र, लोचन।
(ख) ऊपर - नीचे
(ग) आचार - व्यवहार। अचार - खाने वाला पदार्थ

5. (क) मुसक (ख) दोस्त (ग) कुआँ (घ) हाथ (ङ) काँटा
(च) गाँव (छ) घोड़ा (ज) सौ (झ) खेत (ञ) ओठ।

6. तत्सम — दंड, घट, ग्रंथि, काक, अग्नि।
तद्भव — सोना, साग, पौधा, नींद, दाँत।
देशज — घटिया, चट, धड़ाम, फटाफट, लुटिया।
विदेशी — स्कूल, दरोगा, दफ्तर, पेन्सिल, इंजन।

7. रूढ़ — हवा, कलम, घर, पुस्तक।
यौगिक —विद्यार्थी, प्रयोगशाला, मेल-जोल।
योगरूढ़—तपोवन, निशाचर, हंसवाहिनी, जलज।

8. (क) धोखा (ख) कर्तव्य (ग) वृत्तांत (घ) हृदय (ङ) भाग्य
(च) पेय पदार्थ (छ) समिति (ज) निन्दा (झ) प्रतिकृति (ञ) पृथ्वी

9. (क) अंग्रेजी (ख) फारसी शब्द (ग) अरबी शब्द (घ) अरबी शब्द (ङ) अरबी शब्द
(च) फ्रांसीसी शब्द (छ) जापानी शब्द (ज) चीनी शब्द (झ) रूसी शब्द (ञ) तुर्की शब्द
(ट) फारसी शब्द (ठ) अरबी शब्द (ड) अंग्रेजी शब्द (ढ) अरबी शब्द

● *खेल-खेल में*

अर्ध तत्सम	**संकर शब्द**
अग्या	कामधंधा
कारज	रेलगाड़ी
अगिन	लाठीचार्ज
बृच्छ	वर्षगाँठ
अच्छर	हवादार

अध्याय–13 पर्यायवाची शब्द

● *पुस्तक से*

1. **पर्यायवाची शब्द**—जिन शब्दों के अर्थों में समानता पाई जाती है, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।
2. भ्रमर = भँवरा, मधुप, मधुकर
   देवता = देव, अमर, सुर
   आँख = नेत्र, नयन, अक्षि
   कमल = जलज, नीरज, पंकज
   पुत्री = बेटी, सुता, वत्सा
   आदमी = नर, इंसान, मानव
   आग = अनल, अग्नि, पावक
3. (क) वस्त्र (ख) कमल (ग) रात (घ) पुष्प (ङ) दिन (च) भँवरा
4. (क) मूल्य (ख) औरत (ग) बगीचा (घ) जगत (ङ) स्रोत
5. (क) सखा (ख) केहरि (ग) पुजारी (घ) विहग

● *खेल-खेल में*

(क) धनुष, चाप, शरासन, कोदंड
(ख) अश्व, घोड़ा, तुरंग, घोटक
(ग) तलवार, असि, करवाल, खड्ग
(घ) पेड़, वृक्ष, तरु, विटप

अध्याय–14 विलोम शब्द

● *पुस्तक से*

1. **विलोम शब्द**—ऐसे शब्द जो एक-दूसरे के विपरीत अर्थ देते हैं, विलोम शब्द कहलाते हैं।
2. विलोम शब्द विपरीत अर्थ की प्रतीति कराते हैं। भाषा की क्षमता व भाव-अभिव्यक्ति में विलोम शब्दों का अत्यधिक महत्व है। प्रायः गुण, भावव अवस्था के विलोम शब्द होते हैं।
3. (क) पराया (ख) वाचाल (ग) अस्त (घ) अनेकता (ङ) मृत्यु (च) समर्थन (छ) पुण्य (ज) सहयोग।
4. (क) निराशा (ख) पुरातन (ग) वियोग (घ) दयालु (ङ) विग्रह (च) निरर्थक।
5. (क) व्यय (ख) हिंसा (ग) निंदा (घ) निर्यात (ङ) असत्यवादी (च) बायीं।

● *खेल-खेल में*

राजा – रंक
गरीब – अमीर
बालक – बालिका
आकाश – पृथ्वी
दानी – भिखारी।

अध्याय–15 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

● *पुस्तक से*

1. (क) निरर्थक (ख) अनादि (ग) शुभचिंतक (घ) दम्पत्ति (ङ) आस्तिक (च) सर्वज्ञ (छ) दर्शनीय।

2. (क) जो सब कुछ जानता हो। (ख) जिसका कोई अर्थ न हो।
(ग) जो पहले किसी पद पर रह चुका हो। (घ) जो दूर तक की सोचता हो।
(ङ) हित करने वाला। (च) नीचे लिखा हुआ।
(छ) जो कभी बूढ़ा न हो।

● *खेल-खेल में*

1. दुर्लभ 2. शाश्वत, 3. अल्पज्ञ 4. मितव्ययी 5. रेखांकित
6. पठनीय।

● *स्वयं करिए*

गागर में सागर भरना वाक्यांश से आशय है कि बहुत सी सामग्री का संक्षिप्त में प्रस्तुतीकरण। अनेक शब्दों के लिए एक शब्द भी भाषा विज्ञान की विधा है। जिसमें अनेक शब्द-समूहों के लिए एक सार्थक शब्द दिया जाता है, अत: व्यापक अर्थ में न सही लेकिन सामान्यत: यह उक्ति यहाँ सटीक बैठती है।

अध्याय-16 समरूप भिन्नार्थक शब्द

● *पुस्तक से*

1. **आशय**—वे शब्द जो उच्चारण या सुनने में समान प्रतीत होते हैं, परन्तु अर्थ में भिन्नता होती है, समरूप भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

2. (क) (i) चिह्न — आशु के माथे पर चोट का निशान है।
(ii) कुर्बान — महाराणा प्रताप ने मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए प्राण निसार कर दिऐ।
(ख) (i) कठोर — ऐसी परुष बातें शोभा नहीं देती।
(ii) आदमी — पुरुष होकर डर रहे हो।
(ग) (i) अनाज — पेट में अन्न पड़े तो चेहरे पर चमक आए।
(ii) दूसरा — तुम अन्य की बातों पर ध्यान मत दिया करो।
(घ) (i) पहाड़ — ये नग बहुत ऊँचा है।
(ii) सर्प — नाग को परेशान नहीं करना चाहिए।
(ङ) (i) शिव — हर बहुत दयालु स्वभाव के हैं।
(ii) विष्णु — कृष्ण हरि के अवतार हैं।

3. (क) बराबर — सामग्री,
(ख) ओर — अवस्था
(ग) दु:ख — चाव
(घ) पका- पकने का भाव, पक्का - कच्चा का उल्टा, पका हुआ
(ङ) दूरी का माप — खजाना (च) जैन भिक्षु - सुनना।

4. (क) बाघ (ख) सूर (ग) पथ्य (घ) दिन (ङ) काठ

● *खेल-खेल में*

जामन - दूध जमाने की खटाई, जामुन - एक फल। कटि - कमर, कीट - कीड़ा। वदन - मुख, वदन - शरीर। मूल - जड़, मूल्य - कीमत। शुल्क - फीस, शुक्ल - सफेद। दिन - दिवस, दीन - गरीब। मातृ - माता, मात्र - केवल । शंकर - महादेव, संकर - मिश्रित । प्रसाद - कृपा, प्रासाद - महल। जात - पुत्र, जाति - गोत्र।

● *स्वयं करिए—*

कान - सुनने का अंग, कानि - मर्यादा। गुर - उपाय, गुरु - शिक्षक। गृह - घर, ग्रह - तारे। अपकार - बुराई, उपकार - भलाई। अनल - आकि । अनिल - वायु।

अध्याय-17 अनेकार्थक शब्द

● *पुस्तक से*

1. **अनेकार्थक शब्द**—ऐसा एक शब्द जिसके कई अर्थ हों, अनेकार्थक शब्द कहलाते हैं। जैसे—हरि - विष्णु, बन्दर, शेर।
2. **अनेकार्थी शब्द**—ऐसा एक शब्द जिसके कई अर्थ हों, अनेकार्थी कहलाते हैं।
   जैसे—हार - माला, पराजय, पतंग - सूर्य, पक्षी।
   पर्यायवाची शब्द—जिन शब्दों के अर्थों में समानता पाई जाती है, पर्यायवाची कहलाते हैं।
   जैसे—कमल - जलज, नीरज। देवता - अमर, सुर।
3. (क) सिक्का, आसन (ख) विष्णु, बन्दर (ग) चाल, मोक्ष (घ) कुशल, जल
   (ङ) रंग, अक्षर (च) लक्ष्मी, शोभा (छ) शहद, मीठा (ज) प्रकार, रहस्य।
4. (क) गुरु हमें पढ़ाते व सिखाते हैं। रोहन सोहन से गुरु है।
   (ख) हम पाँच वर्ष पूर्व यहाँ आए थे। सूर्योदय पूर्व में होता है।
   (ग) रतन टाटा के पास बहुत अर्थ है। तुम्हारी बात का कोई अर्थ नहीं है।
   (घ) चलो ! उत्तर की ओर चलते हैं। समझदार व्यक्ति, सोच-विचार कर उत्तर देते हैं।
   (ङ) कलियुग में व्यक्तियों के कई वर्ण हैं। राम के लिखे वर्ण बहुत साफ हैं।
   (च) भारत के तीनों दल सम्मानीय हैं। पतझड़ में पेड़ से दल गिरने लगते हैं।
5. (क) रेत (ख) घोड़ा (ग) कोयल (घ) धूल (ङ) पहचान
   (च) हेतु

अध्याय-18 विराम-चिह्न

● *पुस्तक से*

1. **विराम चिह्न**—लिखते समय विराम अवस्था को प्रकट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, विराम चिह्न कहलाते हैं।
2. **योजक चिह्न**—वाक्यों में जब समान या विपरीत शब्द एक साथ आते हैं तो उन शब्दों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है। जैसे— माता - पिता, छोटा - बड़ा।
   निर्देशक चिह्न—वाक्य पूरा होने के पश्चात् जब उससे संबंधित उदाहरणों की ओर संकेत या निर्देश किया जाता है, तब निर्देशक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे— महात्मा गाँधी ने कहा - अहिंसा परम धर्म है।
3. (क) ? (ख) —, " ।" (ग) ! , । (घ) -, " ।" (ङ) ; ?
4. (क) विस्मयादिबोधक चिह्न (ख) एकल उद्धरण चिह्न
   (ग) प्रश्नवाचक चिह्न (घ) विवरण चिह्न
   (ङ) योजक चिह्न (च) निर्देशक चिह्न

5. बरसात की एक अँधेरी रात थी। एक आदमी साधारण कपड़े पहने, नगर के तंग रास्तों में से चौकन्ना होकर आगे बढ़ रहा था। घोड़े पर सवार वह जैसे ही एक गली में मुड़ा कि पीछे से ये शब्द उसके कानों में पड़े– ''रुक जा।'' वह बिना कुछ सुने, रुके, अपनी चाल चलता रहा। आगे पलभर में दस-बारह डाकुओं ने उसे घेर लिया। मोटा-तगड़ा उनका सरदार गरजकर बोला- ''अबे सुनाई नहीं देता। उतर घोड़े से ।'' फिर दो डाकुओं ने उसे खींचकर नीचे उतार दिया। तभी बिजली चमकी तो उसका सफेद रंग का सुंदर घोड़ा देखकर बोला– ''मालदार लगता है।''

● *खेल-खेल में*

चाचा 'नेहरू' 'बापू' 'नेताजी' 'मिसाइलमैन'

● *स्वयं करिए–*

उद्धरण चिह्न : (" ") (' ')– उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं–

(क) एकल उद्धरण चिह्न (' ') (ख) दोहरा उद्धरण चिह्न (" ")

(क) **एकल उद्धरण चिह्न**–किसी विशेष व्यक्ति, पुस्तक, वस्तु का नाम अथवा उपनाम के साथ एकल उद्धरण चिह्न लगाया जाता है।

जैसे– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 'रामचरित मानस'
महात्मा गाँधी को देश 'बापू' के नाम से पुकारता था।

(ख) **दोहरा उद्धरण चिह्न**–किसी कथन या वाक्य को बिना किसी परिवर्तन के लिखने पर दोहरा उद्धरण चिह्न लगाया जाता है।

जैसे– लाल बहादुर शास्त्री ने कहा, ''जय जवान, जय किसान''।
तुलसीदास ने लिखा ''आपत काल परखिए चारी।
धीरज, धरम, मित्र अरु नारी।''

अध्याय-19 मुहावरे

● *पुस्तक से*

1. (क) पछताना – समय पर पढ़ लेते तो हाथ मलना नहीं पड़ता।
(ख) जान की परवाह न करना – सैनिक सीमा की रक्षा के लिए जान पर खेलते हैं।
(ग) हार मानना – वीर पुरुष के सामने दुश्मन पीठ दिखाकर भाग गया।
(घ) बहुत कठिन काम – आजकल सरकारी नौकरी पाना टेढ़ी खीर है।
(ङ) पराजित होना – भारतीय वीरों के सामने चीनी सैनिकों के पाँव उखड़ गए।
(च) नींद न आना – साल भर पढ़ाई नहीं की, अब अंशुल परीक्षा के समय तारे गिन रहा है।
(छ) कार्य पूर्ण होना – बेटी की शादी करके माँ-बाप गंगा नहा लिए।
(ज) बहुत प्रिय होना – इकलौता पुत्र शुभम अपने माँ-बाप के आँखों का तारा है।

2. (क) कीचड़ उछालना। (ख) हथेली का आँवला होना।
(ग) फूटी आँख न सुहाना। (घ) दाँत काटी रोटी होना।
(ङ) टाँग अड़ाना। (च) टका-सा जवाब देना।
(छ) हाथ सिकोड़ना।

3. (क) एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं। (ख) उँगलियों पर नचाते हैं।
(ग) गला काटते हैं। (घ) टका सा जवाब दे दिया।

(ङ) मुँह में पानी आ गया। (च) टेढ़ी खीर है।

(छ) दाँत काटी रोटी है।

4. (क) मोहन अभी दसवीं पास भी नहीं हुआ और हवाई किले बनाने लगा है।

(ख) नरेन्द्र मोदी की राजनीति का सामना करना सूरज को दिया दिखाना है।

(ग) सतीश के सफल होने पर उसके पिताजी सिर उठाकर चलते हैं।

(घ) रेखा ने बात करके मीनू का दिमाग चाट लिया।

(ङ) मेरा दोस्त बहुत छुपा रूस्तम है।

(च) राजेश ने अपने पड़ोसी की सबके सामने पगड़ी उछाल दी।

(छ) परीक्षा में प्रश्न-पत्र को देखकर रोहन बगलें झाँकने लगा है।

● *खेल-खेल में*

(क) आटे दाल का भाव मालूम होना। (ख) आँखों का तारा होना।

(ग) गुड़ गोबर करना। (घ) अँगुली पर नचाना।

(ङ) नमक मिर्च लगाना।

अध्याय-20 लोकोक्ति

● *पुस्तक से*

1. आम जनता के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गयी उक्तियाँ, लोकोक्तियाँ कहलाती है। जैसे– अंधों में काना राजा।
2. विशिष्ट अर्थ देने वाले वाक्यांशों को मुहावरा कहते हैं। ये वाक्य में आकर उनका अर्थ बदल देते हैं जबकि, लोकोक्ति का अर्थ है– आम जनता के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गई। लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण वाक्य होते हैं। इनका प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप से होता है।
3. (क) अनपढ़ होना (ख) योगयता से अधिक बोलना

(ग) शक्तिशाली की जीत होना (घ) अपना अच्छा व्यवहार हो तो अन्य लोगों का भी व्यवहार अच्छा होता है।

4. (क) कालाबाजारी करने वाले गिरफ्तार हो गए। सही है– जैसी करनी वैसी भरनी।

(ख) खाली तिजोरी देखकर चोरों ने कहा, खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

(ग) रमन का काम निकलने के बाद उसने संतोष के साथ ओछे की प्रीत बालू की भीत जैसा कर दिया।

(घ) अज्ञानी आदमी सभी के सामने बोलकर थोथा चना बाजे घना जैसा कार्य करता है।

(ङ) हरिद्वार न जाकर शिवालय में गंगाजल चढ़ाकर भक्त बोला– मन चंगा तो कठौती में गंगा जैसा होता है।

(च) कम अंक लाने पर भी दीपक अपनी प्रशंसा करता रहता है। इसी को कहते हैं अधजल गगरी छलकत गाए।

● *खेल-खेल में*

आम – आम के आम गुठलियों के दाम।

चना – थोथा चना बाजे घना।

दाढ़ी – चोर की दाढ़ी में तिनका।

चूहा – खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

रचना

अध्याय-1 संवाद लेखन

अपने आस—पास की स्वच्छता बनाए रखने के लिए छात्रों में परस्पर संवाद।

कबीर – हमारे देश में इतनी ज्यादा गंदगी क्यों है ?

कमल – हम भारत को स्वच्छ रखने पर समुचित ध्यान नहीं देते हैं।

कबीर – मैं एक नागरिक के रूप में क्या कर सकता हूँ?

कमल – हमें घरेलू कचरे को सड़क के किनारे रखे हुए कचरा पात्रों में डालना चाहिये। हमें अपने घर के सामने के सार्वजनिक मार्ग (सड़क) को साफ रखना चाहिये। हमें प्रत्येक रविवार या अन्य अवकाश के दिन एक घण्टा सामुदायिक सफाई के लिये अर्पित करना चाहिये। हमें सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी करने से बचना चाहिये। हमें दीवारों, पगडंडियों और सड़कों पर थूकने से अपने आप को रोकना चाहिये। हमें खुली जगह में मूत्र व मल त्याग करने से बचना चाहिये।

कबीर – एक नागरिक के रूप में मुझे क्या नहीं करना चाहिये?

कमल – हमें सड़कों पर कूड़ा-करकट नहीं फेंकना चाहिये। हमें बस व रेल के डिब्बों में छिलके व अन्य कचरे से गंदगी नहीं फैलानी चाहिए। हमें प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। हमें दीवारों पर पोस्टर नहीं चिपकाने चाहिये। हमें बचा हुआ भोजन (झूठन) नहीं फेंकना चाहिये।

कबीर – क्या भारत सरकार ने स्वच्छ भारत के लिए कोई कार्य-योजना शुरू नहीं की है ?

कमल – अरे ! हाँ, भारत सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया है। ग्रामीण व शहरी भारत को आने वाले पाँच वर्षों में साफ बनाना है।

कबीर – यदि हम सब नागरिक इन नियमों का पालन करें तो हम स्वच्छ भारत के लिये योगदान कर सकते हैं।

कमल – हाँ, मैं आशा करता हूँ विद्यार्थी और नागरिक भारत की स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।

अध्याय-2 कहानी लेखन

खरगोश और कछुआ

किसी जंगल में तालाब के किनारे एक खरगोश और कछुआ निवास करते थे। इन दोनों में अच्छी मित्रता थी। खरगोश अपनी तेज चाल एवं कछुआ अपनी धीमी चाल के लिए प्रसिद्ध था। खरगोश को अपनी तेज चाल पर अभिमान था। इसी कारण एक दिन वह कछुए की धीमी चाल का मजाक उड़ाने लगा। खरगोश की बात कछुए को बुरी लगी। उसने कहा कि " भले ही तुम्हारी चाल तेज है किन्तु यदि दौड़ हुई तो मैं तुम्हें हरा दूँगा।" शीघ्र ही दौड़ प्रारम्भ हो गई। खरगोश बहुत कम समय में बहुत दूर निकल गया। इधर कछुआ अपनी धीमी चाल से चलता रहा। लगभग एक किलोमीटर की दूरी तय कर खरगोश रुका और पीछे मुड़कर देखा। कछुए का कहीं अता-पता नहीं था। जब खरगोश को कछुआ दिखाई नहीं दिया तो उसने सोचा कि कुछ देर आराम कर लिया जाय। उसके मन में यह बात थी कि जब कछुआ दिखाई देगा तो वह उठकर तेजी से दौड़ लेगा। इस प्रकार आराम करने के चक्कर में उसे नींद आ गई। इधर कछुआ लगातार चलता रहा। खरगोश देर तक सोता रहा। जब उसकी नींद खुली तो कछुआ फिर दूर तक नजर नहीं आया। वह अचानक उठा एवं तेजी से मंजिल की ओर बढ़ने लगा किन्तु वहाँ पहुँचने पर उसके होश उड़ गए। यह क्या कछुआ तो वहाँ पहले से ही मौजूद था। खरगोश हार चुका था। उस दिन से उसने कछुए का मजाक उड़ाना बंद कर दिया।

अध्याय-4 पत्र-लेखन

अपने कॉलोनी की नालियों की सफाई हेतु नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को शिकायती पत्र।

सेवा में

श्रीमान् स्वास्थ्य अधिकारी

जयपुर नगर निगम, जयपुर

विषय—कॉलोनी की उचित सफाई के संबंध में।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि सुभाष नगर की गली नं. 15 में नालियों की सफाई के लिए जिस कर्मचारी को आपने नियुक्त किया है, वह प्रतिदिन नालियों की सफाई न करके सप्ताह में एक दिन सफाई करने आता है। इससे नालियों की कीचड़ एवं गंदगी सड़क पर आ जाती है। गंदगी फैलने से कभी भी बीमारी फैल सकती है। आपसे अनुरोध है कि उक्त सफाई कर्मचारी को बदलकर किसी अन्य जिम्मेदार कर्मचारी को लगाने की कृपा करें।

हम आपके आभारी रहेंगे। धन्यवाद।

निवेदक

रामप्रसाद डागुर

सुभाष नगर, गली नं. 15

जयपुर

दिनांक- 20-3-20.....

अध्याय-5 निबंध-लेखन

सर्व शिक्षा अभियान

प्रस्तावना—हमारा देश लम्बे समय तक पराधीन रहने के कारण यहाँ समुचित शिक्षा व्यवस्था का विकास नहीं हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारी सरकार ने अशिक्षा और निरक्षरता को दूर करने के लिए प्रयास किए हैं। जगह-जगह विद्यालय खोले जा रहे हैं। सभी को अक्षर-ज्ञान हो, इसके लिए हमारे देश में सर्व शिक्षा अभियान चलाया जा रहा है।

सर्व शिक्षा अभियान का स्वरूप—स्वतन्त्रता मिलने के बाद साक्षरता का प्रतिशत बढ़ाने के लिए सबसे पहले बुनियादी शिक्षा प्रारम्भ की गई। इसके बाद सारे देश में प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम राष्ट्रीय नीति के रूप में प्रारम्भ किया गया। इसके लिए जगह-जगह पाठशालाएँ खोली गईं ओर जनजातियों, हरिजनों तथा कृषक-श्रमिकों को साक्षर बनाने का पूरा प्रयास किया गया। इस तरह के अभियान से निरक्षरता घट रही है और साक्षरता का प्रतिशत बढ़ रहा है।

सर्व शिक्षा अभियान से लाभ—इस अभियान से जन-जागरण हुआ है। हमारे प्रदेश राजस्थान में निरक्षरता का प्रतिशत पहले अधिक था, परन्तु अब साक्षरता का प्रतिशत काफी बढ़ गया है। छोटे गाँवों और ढाणियों में हजारों विद्यालय खोले गये हैं। उनमें निम्न वर्ग व गरीब लोगों के बच्चों को दिन में भोजन भी दिया जाता है। रात्रि में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चलाये जा रहे हैं, इससे भी सर्व शिक्षा अभियान काफी सफल हो रहा है।

उपसंहार—सर्व शिक्षा अभियान में धन की कमी एक बड़ी बाधा है। जन-सहयोग से शिक्षा का प्रसार हो रहा है। निरक्षरता हमारे समाज पर एक काला दाग है, उसे सर्व शिक्षा अभियान से ही मिटाया जा सकता है।

हिन्दी व्याकरण, कक्षा – 8

अध्याय–1 शब्द विचार

● *पुस्तक से*

1. वर्णों के सार्थक सामूहिक मेल को शब्द कहते हैं। वर्णों के सार्थक मेल से शब्द का निर्माण होता है। वर्ण का स्वतंत्र रूप से कोई अर्थ नहीं होता। जबकि शब्द का अर्थ होता है। शब्दों के सार्थक समूह से वाक्य बनता है।
2. शब्द के निम्नलिखित आधारों पर पाँच भेद हैं—
   1. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर (जैसे—घोड़ा, घोड़े, बाहर)। 2. प्रयोग के आधार पर (जैसे—पूजा, पहाड़ी, भौतिकी)। 3. उत्पत्ति के आधार पर (जैसे—भ्राता, भाई, खटखटाना, टिकट)। 4. रचना या बनावट के आधार पर (जैसे—कमल, पीलापन, दशानन)। 5. अर्थ के आधार पर (जैसे—सहपाठी, आचार-अचार, नेत्र-लोचन, गरीब-अमीर, हाथ-किरण-टैक्स, द्वेष-ईर्ष्या)।
3. **(क)** **अनेकार्थी व एकार्थी शब्द—**जिस शब्द के अर्थ अलग-अलग हों और शब्द एक ही होता है, वे अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। जिस शब्द के अर्थ व शब्द में समानता हो वे एकार्थी शब्द कहलाते हैं।

   (ख) **तत्सम एवं तद्‌भव शब्द—**हिन्दी में कई ऐसे शब्द हैं जो सीधे संस्कृत भाषा से आते हैं। ऐसे शब्द तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे—भ्राता, दुग्ध आदि। हिन्दी में कई शब्द संस्कृत भाषा से आए हैं, परंतु हिन्दी में आकर उनमें परिवर्तन हो जाता है। ऐसे शब्द तद्‌भव शब्द कहलाते हैं। जैसे— भाई, दूध आदि।

   (ग) **यौगिक एवं योगरूढ़ शब्द—**

   यौगिक शब्द—यौगिक का अर्थ है—योग या जोड़ से बना। वे शब्द जो दूसरे शब्दों के योग से बनते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं। इनमें सामासिक शब्दों का योग होता है।

   जैसे— पीलापन— पीला + पन = पीला रंग लिया हुआ

   पीला ↓ रंग   पन ↓ लिया   पीला रंग लिया हुआ ↓ हुआ

   योगरूढ़ शब्द— योग का अर्थ है— जोड़
   रूढ़ का अर्थ है—प्रचलित

   अर्थात् वे शब्द जो योग या जोड़ से बने हों, परन्तु उनका अर्थ अत्यन्त प्रचलित होता है। ऐसे शब्द योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे— दशानन = दस + आनन अर्थात् दस सिर वाला 'रावण'

   (घ) **विकारी एवं अविकारी शब्द—**

   विकारी शब्द—ऐसे शब्द जिनमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है। ये शब्द प्रायः लिंग, वचन, काल एवं कारक के आधार पर परिवर्तित होते हैं। ऐसे शब्द विकारी शब्द कहलाते हैं।

   अविकारी शब्द—ये शब्द विकारी शब्द के विपरीत होते हैं अर्थात् वे शब्द जिसमें किसी भी अवस्था में परिवर्तन नहीं होता, अविकारी शब्द कहलाते हैं।
4. (क) सूर्य = रवि, भानु, दिनकर, दिवाकर (ख) दिन-रात (ग) सूर (अंधा) – शूर (वीर)।
5. (क) मच्छर   (ख) मीत   (ग) कुआँ   (घ) हाथ   (ङ) काँटा
   (च) गाँव   (छ) घोड़ा   (ज) सौ   (झ) खेत   (ञ) ओठ
6. तत्सम — दंड, काक, ग्रंथि, अग्नि
   तद्‌भव — साग, पौधा, नींद, सोना, दाँत

देशज — घट-पट, वधू, धड़ाम, लुटिया
विदेशी — दारोगा, दफ्तर, स्कूल, पेंसिल, इंजन

7. रूढ़ — हवा, कलम, घर, पुस्तक
यौगिक — तपोवन, निशाचर, मेल-जोल
योगरूढ़—विद्यार्थी, हंसवाहिनी, प्रयोगशाला

8. (क) धोखा (ख) कर्तव्य (ग) कथा (घ) हृदय (ङ) किस्मत
(च) रस (छ) समिति (ज) बुराई (झ) ढाँचा (ञ) धरती

9. (क) अंग्रेजी (ख) देशज (ग) देशज (घ) देशज (ङ) अरबी
(च) फ्रांसीसी (छ) जापानी (ज) चीनी (झ) रूसी (ञ) तुर्की
(ट) अंग्रेजी

● *खेल-खेल में*

अर्द्ध तत्सम— अग्याँ, कारण, अगिन, बच्छ, अच्छर
संकर शब्द—कामधंधा, रेलगाड़ी, वर्षगाँठ, हवादार, बेमेल

अध्याय-2 संधि

● *पुस्तक से*

1. **संधि**—दो समान या भिन्न ध्वनियों के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं। जैसे—महान् + आत्मा = महात्मा।
2. **दीर्घ संधि**—जब दो समान या असमान स्वर ध्वनियाँ आपस में मिलकर दीर्घ हो जाएँ तो उसे दीर्घ सन्धि कहते हैं।
जैसे— अ + अ = आ अ + आ = आ
शिक्षा + अर्थी = शिक्षार्थी चर + अचर = चराचर
गुण संधि—जब अ तथा आ से क्रमशः उ/ई, उ/ऊ तथा ऋ का मेल हो तो वे क्रमशः ए, ओ तथा अर् हो जाता है।
जैसे— रमा + ईश = रमेश महा + ऋषि = महर्षि
3. नियम 1. वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन।
नियम 2. पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन।
4. **विसर्ग संधि**—विसर्ग के पश्चात् स्वर अथवा व्यंजन के मेल से आने वाला विकार या परिवर्तन विसर्ग संधि कहलाता है। जैसे— मनः + रथ = मनोरथ। नमः + ते = नमस्ते।

5. राजाज्ञा दीर्घ सन्धि पवन अयादि सन्धि
निश्चय विसर्ग सन्धि संकल्प व्यंजन सन्धि
उच्छिन्न व्यंजन सन्धि राजर्षि गुण सन्धि
प्रातःकाल विसर्ग सन्धि अन्वेषण यण् सन्धि

6. (क) निर् + रस (छ) उत् + श्वास
(ख) मनः + रंजन (ज) निः + फल
(ग) दुर् + गुण (झ) वाक् + मय
(घ) सम् + मान (ञ) दिक् + अम्बर
(ङ) सम् + तोष (ट) प्रति + एक
(च) उत् + ज्वल (ठ) धौ + अक

7. (क) दशानन (ख) संरक्षण (ग) दुष्कर (घ) षटमास (ङ) दिग्गज

(च) राजैश्वर्य (छ) यथेष्ट (ज) सेवार्थ (झ) इत्यादि (ञ) श्रद्धालु
(ट) महर्षि (ठ) सूक्ति (ण) पुरुषोत्तम (त) देवेश (थ) हितैषी
(द) नवोढ़ा (ध) मात्रादेश (न) महौषध (प) धावक

8. (क) (1) नि: + तेज = निश्तेज (2) नि: + फल = निष्फल
(ख) (1) सम् + कल्प = संकल्प (2) सम् + भाषण = संभाषण
(ग) (1) सत् + चरित्र = सच्चरित्र (2) उत् + चारण = उच्चारण
(घ) (1) नग + इन्द्र = नगेन्द्र (2) दिन + ईश = दिनेश
(ङ) (1) तत् + लीन = तल्लीन (2) हत् + लीक = हल्लीक

● *खेल खेल में—*

दीक्षांत, मनोहर, लंबोदर, निशाचर, कृतांत।

● **स्वयं कीजिए—**

संधि—दो समान या भिन्न ध्वनियों के मेल से होने वाले विकार या परिवर्तन को संधि कहते हैं।
जैसे—देव + आलय = देवालय। महा + ऋषि = महर्षि।
समास—विभक्ति विहीन दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक योग को समास कहते हैं। स्वर्गप्राप्त = स्वर्ग को प्राप्त। गगनचुंबी = गगन को चूमने वाली।

अध्याय-3 शब्द भंडार

● *पुस्तक से*

1. **एकार्थी**—हिन्दी में कई ऐसे शब्द हैं जो एक समान अर्थ देने वाले प्रतीत होने के पश्चात् भी उनके अर्थ में अंतर होता है। एकार्थी शब्द कहलाते हैं।
अनेकार्थी शब्द—जिस शब्द के अलग-अलग अर्थ हों परन्तु शब्द एक ही होता है; अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।
2. ऐसे शब्द जो अनेक शब्दों के स्थान पर आकर उनके अर्थ को प्रकट करते हैं, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहलाते हैं। अत: इसे 'गागर में सागर भरने' के समान माना गया है।
3. अवधि = समय। भगवान राम चौदह वर्ष की अवधि के लिए वनवास गए थे।
अवधी = एक बोली का नाम। रामचरितमानस अवधी भाषा में लिखा गया है।
4. **पर्यायवाची शब्द**

(क) 1. शशि	2. निशाकर	3. राकेश	
(ख) 1. चक्षु	2. नेत्र	3. नयन	
(ग) 1. ईश	2. प्रभु	3. भगवान	
(घ) 1. भागीरथी	2. मंदाकिनी	3. देवनदी	
(ङ) 1. पानी	2. नीर	3. अंबु	
(च) 1. तटनी	2. सरि	3. सरिता	
(छ) 1. अनोखा	2. विचित्र	3. विशेष	
(ज) 1. दिनकर	2. रवि	3. भानु	
(झ) 1. सुत	2. बेटा	3. आत्मज	

5. अनमेल पर्यायवाची शब्द पर घेरा (0) लगाइए—

(क) (नीलवदन)	(ख) (मयंक)	(ग) (भूमि)	(घ) (सैंधव)
(ङ) (अर्क)	(च) (कानन)	(छ) (निशाचर)	(ज) (जलज)

6. (क) 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ लेकिन अभी भी आर्थिक रूप से परतंत्र है।
(ख) ईमानदार व्यक्ति का सदैव पक्ष लेना चाहिए बुराई के विपक्ष में रहना चाहिए।
(ग) आज के समय में रक्षक ही भक्षक बन गए हैं।
(घ) कठिन परिश्रम करके वह विपन्न से संपन्न बन गया।
(ङ) सज्जन की संगति करनी चाहिए, दुर्जन का साथ छोड़ देना चाहिए।
(च) दुष्ट व्यक्ति कृतघ्न होता है, जबकि सज्जन लोग कृतज्ञ होते हैं।
(छ) कई दिन निराहार रहकर उसे आज आहार मिला।
(ज) अध्ययन करने से अल्पज्ञ भी सर्वज्ञ बन जाता है।

7. (क) असामान्य (ख) राग (ग) अचल (घ) बंधन (ङ) विषम
(च) शाश्वत (छ) सूक्ष्म (ज) दुर्गम (झ) अक्षम (ञ) निर्गुण

8. (क) अप्रत्यक्ष (ख) अवगुण (ग) दुर्भाग्य (घ) अपशकुन (ङ) निर्विकल्प
(च) प्रतिवादी (छ) अनीश्वर (ज) आगमन (झ) विराग (ञ) अनेकता

9. अनेकार्थी शब्द
(क) रसाल, आम्र (ख) मोहर, सिक्का (ग) वर्ण, राधा (घ) विष्णु, बंदर
(ङ) दिशा, बायाँ (च) हाथ, सूँड़ (छ) हिस्सा, भेद (ज) संख्या, गोद

10. मिलान करो–
(क) वर्ण, (ख) गौ, (ग) नाग, (घ) मत, (ङ) गौ, (च) जलज।

11. (क) स्नेह – माता-पिता को अपने पुत्र से बहुत स्नेह है।
वात्सल्य– माता को अपने बच्चों से वात्सल्य होता है।
(ख) ग्रंथ – महाभारत एक सम्पूर्ण ग्रंथ है।
पुस्तक – मोहन ने मेरी पुस्तक ले ली है।
(ग) आदेश– न्यायाधीश ने अपराधी को दंडित करने का आदेश दिया।
आज्ञा – गुरु ने जल लाने की आज्ञा दी।
(घ) दया – मुझे उसकी गरीबी देखकर दया आ गयी।
कृपा – हमें भगवान की कृपा चाहिए।
(ङ) अभिमान – मोहन को अपने धन पर अभिमान है।
अहंकार – रावण को अहंकार था।
(च) श्रद्धा – हमें विद्वानों के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए।
भक्ति– भक्ति ही मुक्ति का आधार है।
(छ) उपहार – रामू के जन्म पर उसे अनेक उपहार मिले।
भेंट – सुदामा श्रीकृष्ण के लिए भेंट में चावल ले गए।

12. (क) ओर – (दिशा) - रामू को उस ओर जाना चाहिए।
और – कुछ अधिक – कविता को और खाना चाहिए।
(ख) ग्रह (नक्षत्र) – हमारे सौरमंडल में नौ ग्रह हैं।
गृह (घर) – गृहिणी से गृह व्यवस्थित होता है।
(ग) अपेक्षा (उम्मीद) – मुझे श्यामू से यह अपेक्षा नहीं थी।
उपेक्षा (ध्यान न देना) – व्यक्ति को अपने कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

(घ) चिर (प्रारंभ) – मानव का चिरकाल से ही प्रकृति से नाता रहा है।
चीर (कपड़े का टुकड़ा)– उँगली में चोट लग गई है, चीर बाँध दो।

(ङ) वदन (मुँह) – क्रोध से पहलवान का वदन लाल हो गया।
बदन (शरीर) – सुरेश का बदन गठीला है।

(च) सुत (पुत्र) – राजा दशरथ के चार सुत थे।
सूत्र (धागा)– कपास के सूत्र से बड़ी-बड़ी रस्सियाँ बनाई जाती हैं।

(छ) प्रकार (किस्म)– संज्ञा प्रमुखत: तीन प्रकार की होती है।
प्राकार (परकोटा)–चित्तौड़गढ़ के किले का प्राकार अति विशाल व ऊँचा है।

13. (क) मात्र (ख) मूल (ग) परिणाम (घ) दीन (ङ) अन्न
(च) नीड़

14. (क) जहाँ दवाएँ मिलती हैं। (ख) खेती करने वाला।
(ग) फल बेचने वाला। (घ) कपड़े सिलने वाला।

15. (क) सहपाठी (ख) अजातशत्रु (ग) कृतज्ञ (घ) सर्वप्रिय (ङ) जन्मांध
(च) मितभाषी (छ) प्रियवादी

● *स्वयं करिए–*

पर्यायवाची शब्द–

1. अंधकार – तम, तिमिर, तमिस्र, अँधेरा। 2. उन्नति – प्रगति, विकास, उत्कर्ष, अभ्युदय, तरक्की।
3. केला – कदली, रंभा, गजवसा। 4. संसार – जगती, भव, विश्व, जगत, दुनिया।
5. घोड़ा – अश्व, घोटक, वाजि, तुरंग, हय, कांतार।

अनेक शब्दों के एक शब्द–

1. जिसकी कल्पना न की जा सके – अकल्पनीय
2. जिसकी तुलना न की जा सके – अतुलनीय
3. जिसकी आयु लम्बी हो – दीर्घायु
4. नीचे खिंची रेखा – रेखांकित
5. जो स्वयं सेवा करता है – स्वयंसेवक

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द (वाक्य प्रयोग)

1. अंक – एक से सौ तक के अंक लिखो।
   अंग – रोगी के प्रत्येक अंग में पीड़ा है।
2. चिर – चिरकाल से सहयोग की भावना जीवित है।
   चीर – कटी उँगली पर चीर बाँध दो।
3. अपमान – सभा में लक्ष्मण ने परशुराम का अपमान किया।
   उपमान – भगवान के चरणों का उपमान कमल है।
4. अंस – पिता बालक को अंश पर बिठाकर घूम रहा है।
   अंश – धन का एक अंश दान करना चाहिए।
5. क्रम – सभी प्रश्नों का उत्तर क्रम से लिखना है।
   कर्म – अच्छे कर्म यश दिलाते हैं।

अध्याय-4 संज्ञा

● *पुस्तक से*

1. **संज्ञा**—किसी प्राणी, वस्तु, स्थान तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं। उदाहरण—राम, श्याम, आगरा आदि।
2. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति वस्तु या स्थान का ज्ञान होता है, उन शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—कुतुबमीनार, क्रिकेट, महात्मा गाँधी।
   जातिवाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान की सामूहिकता या वर्ग का बोध होता है, वे जातिवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं।
   1. शहरों की गंदगी बढ़ती जा रही है। 2. कलम मेज पर है।
3. **महात्मा गाँधी**
   व्यक्तिवाचक संज्ञा—महात्मा गाँधी राष्ट्रपिता हैं।
   जातिवाचक संज्ञा — सत्य-अहिंसा के पथ पर चलने वाले अनेक गाँधी आज भी मिलते हैं।
   जयचंद — जयचंद एक शिक्षक है।
   आज जगह-जगह जयचंद दिखाई देते हैं।
   राजा हरिश्चंद्र — राजा हरिश्चंद्र एक महान राजा थे।
   हरिश्चंद्र की औलाद मत बनो।
   नेताजी — नेताजी सुभाष चन्द्र बोस एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे।
   टोपी लगाए नेताजी सब ओर दिख रहे हैं।
4. (क) बचपन (ख) थकावट (ग) घबराहट (घ) ऊँचाई (ङ) चमक
   (च) कुशलता (छ) शीघ्रता (ज) गुरुता (झ) प्रभुता (ञ) पिछवाई
   (ट) शीघ्रता (ठ) दक्षता (ड) भलाई (ढ) सफाई
5. (क) चढ़ाई (ख) थकावट (ग) हँसी/हँसाई (घ) गरमी/गरमाहट (ङ) सजावट
   (च) खुदाई (छ) बनावट/बनाई (ज) पिटाई (झ) नियुक्ति (ञ) धुलाई
6. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—रामेश्वर, भौतिक विज्ञान, मद्रास।
   जातिवाचक संज्ञा—पक्षियों, अध्याय, विज्ञान, विषय, अध्यापक, रॉकेट, इंजीनियर, एरोप्लेन
   भाववाचक संज्ञा—मन, गहराई, पढ़ाई, अध्ययन विधि, उड़ान।
7. तालाब, भौंरा, न्यूटन, पढ़ाई, गाँव, वैज्ञानिक, मुखिया, मंदिर, रणथंभौर आदि।

● *स्वयं कीजिए*

फुटबॉल	गोलकीपर	—	संज्ञा शब्द
	गोल	—	क्रिया शब्द

अध्याय-5 सर्वनाम

● *पुस्तक से*

1. **सर्वनाम**—संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द, सर्वनाम शब्द कहलाते हैं। जैसे—उसकी, मुझे, वह, तुम, कोई आदि।

2. सर्वनाम के छह प्रमुख भेद हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम	– मुझे	2. निश्चयवाचक सर्वनाम	– यह
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम	– कुछ	4. संबंधवाचक सर्वनाम	– जिसकी
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम	– किसे	6. निजवाचक सर्वनाम	– स्वयं

3. आप को हम पुरुषवाचक सर्वनाम के मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम में लिखेंगे।

4. (क) मुझे नींद आ रही है। (ख) तुम यहाँ पर क्यों आए हो?
(ग) उसने आज मिठाई बनायी है।

5. मिलान करो–

अनिश्चय वाचक	–	ये
उत्तम पुरुष वाचक	–	मैं
संबंध वाचक	–	जिसको
प्रश्न वाचक	–	कौन
निज वाचक	–	स्वयं

6. उनका, उन्होंने, उनका, उन्होंने, वह, उन्हें, उन्हें।

7.

(क)	यह, जो	निश्चयवाचक
(ख)	स्वयं	निजवाचक
(ग)	वह	निश्चयवाचक
(घ)	बहुत	निश्चयवाचक
(ङ)	मुझे	उत्तम पुरुषवाचक
(च)	वह	निश्चयवाचक
(छ)	वो	निश्चयवाचक

8. **निश्चयवाचक सर्वनाम**–वे सर्वनाम शब्द जो किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निश्चित संकेत करते हैं उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–वह मेरी माता है।

अनिश्चयवाचक–वे सर्वनाम शब्द जो किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निश्चित तौर पर संकेत नहीं करते हैं। उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–बाहर कोई खड़ा है।

● *खेल-खेल में*

1.	क्या तुम बाजार जाओगे?	(प्रश्नवाचक वाक्य)
	तुम बाजार क्यों नहीं जाते?	(प्रश्नवाचक सर्वनाम)
2.	क्या तुम समौसा खाओगे?	(प्रश्नवाचक वाक्य)
	तुम समौसा क्यों नहीं खाते?	(प्रश्नवाचक सर्वनाम)
3.	क्या तुम फिल्म देखने जाओगे?	(प्रश्नवाचक वाक्य)
	तुम फिल्म देखने क्यों नहीं जाते?	(प्रश्नवाचक सर्वनाम)
4.	क्या तुम रोहन के घर जाओगे?	(प्रश्नवाचक वाक्य)
	तुम रोहन के घर क्यों नहीं जाते?	(प्रश्नवाचक सर्वनाम)
5.	क्या वह मंदिर जायेगी?	(प्रश्नवाचक वाक्य)
	वह मंदिर क्यों नहीं जाती?	(प्रश्नवाचक सर्वनाम)

● *स्वयं कीजिए*

सर्वनाम का महत्व भाषा में अत्यधिक है। बिना सर्वनाम के लिखी गई कोई भी भाषा बेढंगी, असंतुलित व अशुद्ध होगी। पढ़ने-समझने में भी वह कठिन व दुरूह होगी। अत: भाषा में सर्वनाम का बहुत महत्व है।

अध्याय-6 विशेषण

● *पुस्तक से*

1. **विशेषण**—वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।
2. **विशेषण एवं विशेष्य में अन्तर**— जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है। जिन शब्दों की विशेषण विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहा जाता है। जैसे—

विशेषण	**विशेष्य**
खट्ठा	नींबू
मधुर	वाणी
ऊँचा	पहाड़

3. (क) **विशेषण—** वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।
   प्रविशेषण — वे शब्द जो विशेषण शब्दों की विशेषता बताते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं।
   (ख) **सर्वनाम एवं सार्वनामिक विशेषण**—वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं, तथा जो सर्वनाम शब्द संज्ञा के पूर्व आकर उसकी विशेषता बताते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
यह बिल्ली है।	यह उसकी बिल्ली है।

   (ग) **संख्यावाचक विशेषण एवं परिमाणवाचक विशेषण**—वे शब्द जिनसे वस्तुओं का परिमाण या मात्रा अथवा वजन की सूचना दी जा सकती है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जबकि वे शब्द जिनसे वस्तुओं, व्यक्तियों की संख्या की जानकारी दी जाती है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
मुझे दो लीटर दूध चाहिए।	मेरा घर दो कमरों का है।

   (घ) **मूलावस्था** —यह गुणों की सामान्य अवस्था है जिसमें तुलना नहीं होती । राम सुंदर है।
   उत्तमावस्था—यह गुणों की सबसे उत्तम अवस्था है। इसमें तुलना के दौरान एक को सबसे अधिक या कम बताया जाता है।
   मूलावस्था— 1. कठोर 2. उच्च **उत्तमावस्था—**1. कठोरतम 2. उच्चतम।
4. (क) कमाऊ — खिलाड़ियों, (ख) दुर्बल — व्यक्ति, (ग) निचला — हिस्सा, (घ) क्रोधी — व्यक्ति, (ङ) अनुभवी — व्यक्ति, (च) पालनहार — भगवान।
5. थोड़ा — (i) थोड़े केले और दे दो। (संख्यावाचक)
   (ii) मुझे थोड़ा दूध चाहिए। (परिमाणवाचक)
   बहुत — (i) मैदान में खिलाड़ियों की संख्या बहुत कम थी। (संख्यावाचक)
   (ii) घर में बहुत अनाज भरा है। (परिमाणवाचक)
   कुछ — (i) इन सेवों में कुछ सेव अच्छे और मीठे हैं। (संख्यावाचक)
   (ii) बर्तन में कुछ घी और डाल दो। (परिमाणवाचक)
   जरा — (i) प्रवचन हॉल में जरा से आदमी थे। (संख्यावाचक)
   (ii) शरबत में जरा सी चीनी और डाल दो। (परिमाणवाचक)
6. (क) स्नेहमय, (ख) कुलीन, (ग), ऊपरी, (घ) यौगिक, (ङ) बालपन, (च) रंगीन, (छ) कौन-सी, (ज) बाहरी, (झ) आनंदित, (ञ) नीतिज्ञ, (ट) पूजनीय, (ठ), व्यावहारिक।

7. (क) गुरु गुरुतर गुरुतम
   (ख) तीव्र तीव्रतर तीव्रतम
   (ग) कोमल कोमलतर कोमलतम
   (घ) न्यून न्यूनतर न्यूनतम
   (ङ) दीर्घ दीर्घतर दीर्घतम
   (च) कम कमतर कमतम
8. (क) यह उसकी गाय है। यह गाय है।
   (ख) यह खट्ठा नींबू है। यह नींबू है।
   (ग) वे अच्छे फल हैं। ये फल हैं।
   (घ) वह उनकी गाड़ी है। वह गाड़ी है।
9. (क) सांस्कृतिक, (ख) मरियल, (ग) स्वर्णिम, (घ) सहायक, (ङ) सपेरा, (च) जोशीला।

● *स्वयं कीजिए*

आमतौर पर दैनिक जीवन में हम विशेषणों का प्रयोग करते हैं। जिससे बोलचाल, भावाभिव्यक्ति व लेखन में सजीवता व सुन्दरता आती है। विशेषणों के प्रयोग से भावाभिव्यक्ति सक्षम हो जाती है। अगर हम विशेषणों का प्रयोग दैनिक जीवन में नहीं करेंगे तो भाषा की दुनिया रूखी, नीरस, बेजान लगेगी तथा हम अपने मनोभाव पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं कर पाएँगे।

अध्याय–7 उपसर्ग

● *पुस्तक से*

1. **उपसर्ग**—वे शब्दांश जो मूल शब्द के पूर्व आकर जुड़ते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।
2. उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं—
   (i) संस्कृत के उपसर्ग — अनु — अनुकूल
   अभि — अभिमान
   (ii) हिन्दी के उपसर्ग — अ — अलगाव
   अन — अनमोल
   (iii) उर्दू के उपसर्ग — कम — कमजोर
   हर — हरदिल
   (iv) संस्कृत के अव्यय — अध: — अध:पतन
   स्व — स्वदेश
3. सब — अधीन, नीचे = सब इंस्पेक्टर, सब कमेटी, सब एडीटर। (अंग्रेजी के उपसर्ग)
   कम — हीन, थोड़ा = कम उम्र, कमसिन, कम अक्ल। (अरबी-फारसी उपसर्ग)
   अध — आधे के अर्थ में = अधुभुना, अधमरा, अधबूढ़ा। (हिन्दी उपसर्ग)
4.

	उपसर्ग	मूलशब्द		उपसर्ग	मूलशब्द
(क)	बा	कायदा	(ख)	दु:	चरित्र
(ग)	अनु	करण	(घ)	सत्	कर्म
(ङ)	अव	रोह	(च)	पुरा	तन

(छ) अंतर् राष्ट्रीय (ज) अति प्रिय
(झ) नि योग (ञ) गैर हाजिर
(ट) स्व शासन (ठ) उन तीस
(ड) पुनः कथन (ढ) सब एडीटर

5. (क) बिनबोया बिनखाया (ख) दरकार दरमियान
(ग) स्वनाम स्वदेश (घ) पराजय पराक्रम
(ङ) संकल्प संग्राम (च) सरपरस्त सरहद
(छ) अंतर्राष्ट्रीय अंतर्मन (ज) हरदम हरसाल
(झ) कुकर्म कुपात्र (ञ) सपत्नीक सबल
(ट) उपवन उपकुल (ठ) डिप्टी मिनिस्टर डिप्टी कमिश्नर

6. (क) जयपुर गोपुर (ख) सिलाई मास्टर सर्कस मास्टर
(ग) पराजय विजय (घ) जगन्नाथ प्राणनाथ
(ङ) सहयोग वियोग (च) राजधन परधन
(छ) काबू बाबू (ज) प्राणतत्व जलतत्व
(झ) अरिक्त अतिरिक्त (ञ) धनयुक्त प्रयुक्त
(ट) चौपाया दोपाया (ठ) सुक्रिया अक्रिया
(ड) बदनाम सरनाम

● *खेल-खेल में—*

(क) [✓] (ख) [✗] (ग) [✗] (घ) [✗] (ङ) [✓]
(च) [✓] (छ) [✓] (ज) [✓] (झ) [✓] (ञ) [✓]
(ट) [✓] (ठ) [✓] (ड) [✓] (ढ) [✓]

● *स्वयं कीजिए—*

नाम	उपसर्ग	नया शब्द/अर्थ
शाला	दु	दुशाला
अंश	देव	देवांश
ईश	देव	देवेश
ईश	सोम	सोमेश
राट	वि	विराट

अध्याय-8 प्रत्यय

● *पुस्तक से*

1. **प्रत्यय**—कुछ शब्दांश शब्दों के अन्त में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं। ऐसे शब्दों को प्रत्यय कहा जाता है। जैसे— पढ़ + आई = पढ़ाई।
2. **कृत् प्रत्यय**— वे प्रत्यय जो धातुओं के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।
जैसे— पढ़ + आई = पढ़ाई
(धातु) (प्रत्यय)

हँस + ई = हँसी
(धातु) (प्रत्यय)

तद्धित प्रत्यय—जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे— सब्जी + वाला = सब्जीवाला
(धातु) (प्रत्यय)

लूट + एरा = लुटेरा
(धातु) (प्रत्यय)

3. **भाववाचक कृत् प्रत्यय**—जो कृत् प्रत्यय धातु के अंत में जुड़कर भाववाचक शब्दों की रचना करते हैं, उन्हें भाववाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं।

उदाहरण— जोत + आई = जोताई
(धातु) (भाववाचक कृत् प्रत्यय)

भाववाचक तद्धित प्रत्यय—जिन तद्धित प्रत्यय के प्रयोग से भाववाचक शब्दों का बोध होता है, उन्हें भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

उदाहरण— गुरु + मा = गरिमा
(धातु) (भाववाचक तद्धित प्रत्यय)

4. **उपसर्ग**—वे शब्दांश जो मूल शब्द के पूर्व आकर जुड़ते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं; उपसर्ग कहलाते हैं। जैसे— अ + मल = अमल।

प्रत्यय—वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—पढ़ + आकू = पढ़ाकू।

5. (क) लिखावट बनावट (ख) लुटेरा सपेरा
(ग) सोया खोया (घ) बुढ़ापा पुजापा
(ङ) मथनी चटनी (च) चालाक तैराक
(छ) हलवाइन पंडिताइन (ज) पशुत्व मनुष्यत्व
(झ) नीलगिरि विंध्यगिरि (ञ) दुमैला विषैला
(ट) सरदार ईमानदार (ठ) तोपची गोलची
(ड) शर्मनाक दर्दनाक (ढ) बेटियाँ चिड़ियाँ

6. (क) खट्टा आस (ख) सात वाँ
(ग) नायक इका (घ) लूट एरा
(ङ) हर्ष इत (च) बच पन
(छ) आवारा गी (ज) चिंत इत
(झ) ससुर आल (ञ) धर्म इक
(ट) लघु ता (ठ) चिकना आहट
(ङ) सोना हरा (ढ) नीति इक
(स) भूल अक्कड़ (त) पढ़ ऐया

7. (क) ददिहाल (ख) चटाइयाँ (ग) गायिका (घ) पुजापा (ङ) लुटिया
(च) लोहार (छ) खटास (ज) खटोला (झ) चिंतित (ञ) मिलाप

8. (क) सभागार मददगार (ख) जालसाज जिल्दसाज
(ग) पानदान पीकदान (घ) दवाखाना मयखाना
(ङ) परदादी बगदादी (च) शर्मनाक दर्दनाक
(छ) जरूरतमंद अक्लमंद (ज) मनखोट दिलखोट
(झ) तोपची गोलची (ञ) मेहनताना, सालाना

● *खेल-खेल में—*

गुण = वान = गुणवान		ता = गुणता	त्व = गुणत्व
खेल = ना = खेलना		आड़ी = खिलाड़ी	पन = खेलपन
शिक्षा = वान = शिक्षावान		इका = शिक्षिका	अक = शिक्षक
हँस = ई = हँसी		ना = हँसना	मुख = हँसमुख
अर्थ = पूर्ण = अर्थपूर्ण		ता = अर्थता	वत = अर्थवत
जय = कार = जयकार		देव = जयदेव	माला = जयमाला

● *स्वयं कीजिए—*

1. मधुर + ता = मधुरता
2. लघु + ता = लघुता
3. कठोर + ता = कठोरता
4. निर्मल + ता = निर्मलता
5. प्रभु + ता = प्रभुता

अध्याय-9 लिंग

● *पुस्तक से*

1. **लिंग**—जिन शब्दों से उनके स्त्री या पुरुष जाति के होने की जानकारी मिले, उन्हें लिंग कहते हैं।

2. लिंग के दो भेद होते हैं—

(i) **पुल्लिग**—जिन शब्द रूपों से पुरुष जाति के होने की सूचना मिले, उन्हें पुल्लिग कहते हैं।
जैसे— छात्र, अध्यापक, घी।

(ii) **स्त्रीलिंग**—जिन शब्द रूपों से स्त्री जाति के होने की सूचना मिले, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।
जैसे—छात्रा, शालू, शिक्षिका, जेठानी आदि।

3. सभापति 'शब्द का लिंग क्रिया के आधार पर निश्चित होता है।

4. (क) पुल्लिग (ख) स्त्रीलिंग (ग) पुल्लिग (घ) पुल्लिग (ङ) स्त्रीलिंग
(च) पुल्लिग (छ) स्त्रीलिंग (ज) स्त्रीलिंग (झ) पुल्लिग (ञ) स्त्रीलिंग।

5. (क) **जीवन** – उसका जीवन सुखमय है। **भेद**—पुल्लिग।
मृत्यु – मृत्यु एक दिन आनी है। **भेद**— स्त्रीलिंग।

(ख) **सलाह** – मेरे पिता ने मुझे हमेशा सही सलाह दी है। **भेद**—स्त्रीलिंग।
परामर्श – उसका परामर्श उचित है। **भेद**—पुल्लिग।

(ग) **तैराक** – तैराक पानी में उतर चुका था। **भेद**—पुल्लिग।
नदी – सामने नदी बह रही है। **भेद**—स्त्रीलिंग।

(घ) **अखबार** – अखबार हमें देश-दुनिया की खबर देता है। **भेद**—पुल्लिग।
पत्रिका – पत्रिका हमारे लिए ज्ञानवर्धक होती है। **भेद**—स्त्रीलिंग।

(ङ) **पूजा** – हमें नित्य पूजा करनी चाहिए। **भेद**–स्त्रीलिंग।
पुजारी – पुजारी रोज मंदिर जाता है। **भेद**–पुल्लिग।

7. (क) दैविक दैनिक (ख) पंडिताइन हलवाइन
(ग) कठोरता मधुरता (घ) नौकरानी मेहतरानी
(ङ) रानी दानी (च) लुटिया चिड़िया
(छ) कवयित्री सावित्री (ज) गायिका नायिका
(झ) फाँसी रेती

8. विदुषी साध्वी बहिन
युवती वीरांगना साम्राज्ञी
नारी कवयित्री वधू
भगवती

9. **पुल्लिग** – परिवार, मार्ग, फूल, स्वागत, शीशा, बम, पर्दा।
स्त्रीलिंग – मोमबत्ती, तस्वीर, आन, रचना, प्रगति, लाइट, बोतल।

10. (क) पुजारिन ने मंदिर का दरवाजा खोल दिया।
(ख) शेर पेड़ के नीचे आराम कर रहा है।
(ग) युवतियों ने राजनीतिक अराजकता के विरोध में जुलूस निकाला।
(घ) मालिन ने फूल तोड़कर किनारे रख दिये।
(ङ) कवयित्री की कविता ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।
(च) अध्यक्षा के निर्णय को सभी ने स्वीकार कर लिया।

● *खेल-खेल में–*

पुल्लिग	**स्त्रीलिंग**
जग	कटोरी
सोफा	मेज
कूलर	सब्जी
दरवाजा	खिड़की
पेंट	शर्ट

अध्याय-10 वचन

● *पुस्तक से*

1. **वचन**–जिन शब्द रूपों से उनकी संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

जैसे– एकवचन	बहुवचन
किताब	किताबें
घोड़ा	घोड़े
बहन	बहनें

2. वचन के दो भेद हैं– (1) एकवचन (2) बहुवचन
(1) एकवचन - पंखा (2) बहुवचन - पंखे

3. (क) चिड़िया रोज शाम को अपने घोंसले की ओर लौट पड़ती है।
(ख) अमीर और अमीर हो रहा है और गरीब और गरीब हो रहा है।
(ग) लताओं पर सुंदर फूल खिले हैं।
(घ) माताएँ अपने बच्चों का पक्ष लेती हैं।
(ङ) नानियाँ मुझे रोज किस्से सुनाती हैं।
(च) दवाइयों की दुकानें बंद पड़ी हैं।
(छ) उन्होंने चोर को पकड़ लिया।

4. (क) प्रजाजन (ख) चींटियाँ (ग) वधूएँ (घ) गरीबों (ङ) कुटियाएँ
(च) पंखों (छ) विद्याएँ (ज) जूएँ (झ) घड़ियाँ (ञ) छात्रों।

5. (क) बिल्ली ने चूहों को पकड़कर खा लिया।
(ख) छात्रगण! कृपया ध्यान दें।
(ग) हमारे सैनिक बड़ी वीरता से लड़े।
(घ) भगवान के दर्शन हो गए।
(ङ) सत्य बोलना हमेशा ठीक होता है।
(च) हमारे देश की जनता समझदार है।
(छ) बालू धीरे-धीरे गिर रही है।
(ज) मेरे तो होश ही उड़ गये।

6. (क) बालों (ख) बेटियाँ (ग) मिठाइयों, कपड़े (घ) रचनाकारों (ङ) राजनेताओं

● *खेल-खेल में—*

तेल, पानी, दूध, चीनी, सोना

● *स्वयं कीजिए—*

नित्य एकवचन	**नित्य बहुवचन**
सूरज	दर्शन
चंद्रमा	होश
गंगा	हस्ताक्षर
यमुना	दाम
पृथ्वी	प्राण

अध्याय-11 कारक

● *पुस्तक से*

1. **कारक**—वे शब्द या शब्दांश जो संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के शेष भाग से जोड़ते हैं, कारक कहलाते हैं।
जैसे— पिताजी दिल्ली को जाएँगे।
राम श्याम का दोस्त है।
को, का शब्द जोड़ने से वाक्य पूर्ण हो जाता है, ये शब्द ही कारक कहलाते हैं।

2. कारक के आठ भेद होते हैं—
(i) कर्ताकारक — बस ड्राइवर ने ब्रेक लगाए।

(ii) कर्म कारक — गन्दगी को साफ करना चाहिए।
(iii) करण कारक — मैं दिल्ली से आगरा गया।
(iv) संप्रदान कारक — आज पिताजी के लिए गाड़ी खरीदूँगा।
(v) अपादान कारक — बुरी संगति से दूर रहना चाहिए।
(vi) सम्बन्ध कारक — यह राहुल की किताब है।
(vii) अधिकरण कारक — सीता पार्क में खेल रही है।
(viii) संबोधन कारक — अरे ! तुम यहीं रह गये।

3. (क) **कर्म कारक** — कारक के जिस रूप से जिस पर कार्य हो रहा है, उसका बोध हो, तो उसे कर्म कारक कहते हैं।
संप्रदान कारक — जिस कारक से किसी को कुछ देने का भाव प्रकट हो, उसे संप्रदान कारक कहते हैं।

(ख) **करण कारक** — कारक के जिस रूप से क्रिया के कारण या साधन का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं। प्रमुख विभक्तियाँ हैं— से, के साथ, के द्वारा।
अपादान कारक—जिस कारक चिह्न से किसी वस्तु या व्यक्ति से अलग होने का भाव प्रकट हो रहा हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। प्रमुख विभक्ति हैं— से/से यहाँ अलग होने के अर्थ में प्रयुक्त होता है।
उदाहरण— पेड़ से एक पत्ता अभी-अभी टूटकर गिरा है।

4. (क) से (कारण कारक) (ख) में (अधिकरण कारक)
(ग) से (करण कारक) (घ) के लिए (संप्रदान कारक)
(ङ) की (संबंध कारक) (च) अरे ! (संबोधन कारक)
(छ) से (अपादान कारक)

5. से — 1. मैं मोहन से अलग रहता हूँ। को— 1. राहगीर को जल पिलाना मानवता का काम है।
2. दूध पीने से ताकत आती है। 2. यह किताब मैं पीयूष को दूँगा।

6. (क) ने — कर्ता कारक (ख) पर — अधिकरण कारक
(ग) से — कर्ता कारक (घ) को — कर्म कारक, ने — कर्ताकारक, से — करण कारक
(ङ) ने — कर्ता कारक, को - कर्म कारक, मैं — अधिकरण कारक
(च) से — करण कारक

● *खेल-खेल में—*

1. खाना लाओ। मेरे लिए खाना ले आओ।
2. पढ़ाई करो। तुमको पढ़ाई करनी चाहिए।
3. दवाई खाओ। तुमको दवाई खा लेनी चाहिए।

● *स्वयं कीजिए—*

कारक चिह्न संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के शेष भाग से जोड़ते हैं। अगर हम लिखने या बोलने में कारकों का प्रयोग नहीं करेंगे तो वाक्य पूर्ण नहीं होगा, अर्थ समझने में बाधा उत्पन्न होगी, भाव ठीक प्रकार से नहीं समझ सकेंगे। अत: कारकों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है।

अध्याय-12 क्रिया

● *पुस्तक से*

1. **क्रिया**—वे शब्द जिससे किसी कार्य के किए जाने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं।

2. क्रिया के दो भेद होते हैं— (1) कर्म के आधार पर (2) संरचना/बनावट के आधार पर।
जैसे—आज मैं दिनभर सोता रहा। सूर्य पूरब से निकल रहा है।

3. पूर्वकालिक क्रिया तथा कृदंत क्रिया में निम्न अंतर है—
पूर्वकालिक क्रिया—वे क्रिया रूप जो मुख्य क्रिया से पूर्व आकर मुख्य क्रिया को विस्तार देते हैं, उन्हें पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। जैसे— रवीना आकर सो गई।
कृदंत क्रिया—वे क्रिया रूप जो कृत् प्रत्यय के योग से बनते हैं; कृदंत क्रिया कहलाते हैं। जैसे— चल + आ = चला।

4. (क) **अकर्मक क्रिया**—जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म उपस्थित न हो, अकर्मक क्रिया कहते हैं।
सकर्मक क्रिया—वह क्रिया जिसमें कर्म उपस्थित हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
(ख) **एककर्मक क्रिया**—जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक ही कर्म उपस्थित हो, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं।
द्विकर्मक क्रिया—जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म एक साथ उपस्थित हों द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।
(ग) **प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया**—जिस क्रिया में कर्ता स्वयं उपस्थित होकर कार्य की प्रेरणा दें, उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।
द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया—जब कर्ता कार्य में स्वयं न सम्मिलित होकर किसी और को कार्य करने की प्रेरणा देता है, उसे द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

5.

	प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	**वाक्य**
(क)	रुलाना	बच्चों को रुलाना नहीं चाहिए।
(ख)	पढ़ाना	राम को पढ़ाना आवश्यक है।
(ग)	जिताना	श्याम को यह मैच जिताना होगा।
(घ)	सुलाना	माँ बच्चे को सुलाना चाहती है।
(ङ)	रहता	रमेश अपनी माँ के साथ रहता है।
(च)	जीना	मरीज जीना चाहता है।
(छ)	दौड़ाना	घोड़े को दौड़ाना होगा।

6. (क) बनाती (ख) सिखाया (ग) पढ़ना (घ) कर (ङ) टकरा (च) गिरने (छ) आकर

7. (क) दनदनाना (ख) ललचाना (ग) खरीदना (घ) हिनहिनाना (ङ) नरमाना (च) शर्माना (छ) मुटियाना (ज) टिमटिमाना (झ) हथियाना (ञ) गँठीला (ट) दोहराना (ठ) लतियाना

8. (क) भाग (ख) अभी-अभी (ग) खेलते-खेलते (घ) लेटते ही (ङ) गिरते-गिरते (च) आए (छ) रुक-रुककर

9. (क) पढ़ (ख) चढ़ (ग) रो (घ) समझ (ङ) खेल (च) चल (छ) काट (ज) नाच (झ) देख (ञ) रो (ट) धो (ठ) बो

10. (क) वह जाकर सोया। (ख) तुम उठकर चलो। (ग) मैं अभी जाकर आया।
(घ) कहाँ चले गये। (ङ) इधर चलकर आओ। (च) यहाँ आकर बैठो।

● *खेल-खेल में*

1. मुग्धा खिला रही है। 2. अनुज पिला रहा है। 3. वह खाकर गया।
4. बच्चा पीकर सो गया। 5. अभिनव खा चुका था।

● *स्वयं कीजिए—*

1. पृथ्वी घूम रही है। कार घूम रही है।
2. हवा चल रही है। साइकिल चल रही है।

3. बारिश हो रही है। रामलीला हो रही है।
4. चन्द्रमा छिप गया। राजू छिप गया।
5. तारे चमक रहे हैं। टॉर्च चमक रही है।

अध्याय-13 काल

● *पुस्तक से*

1. **काल**—क्रिया के जिस रूप से उसके घटित होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।
2. किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं। यह क्रिया जिस समय में होती है वह उसका काल कहलाता है।
3. **हेतु हेतुमद भूतकाल**—क्रिया के जिस रूप से भूतकाल में होने वाला कार्य किसी और क्रिया पर निर्भर हो, उसे हेतु हेतुमद भूतकाल कहते हैं। जैसे—सूरज निकल आता तो ठण्ड कम हो जाती है।
   हेतु हेतुमद भविष्यकाल—क्रिया के जिस रूप से जब भविष्य में होने वाला कार्य किसी अन्य कार्य के होने पर निर्भर करता हो, उसे हेतु हेतुमद भविष्यकाल कहते हैं। जैसे—समय पर बारिश न हुई तो फसल सूख जाएगी।
4. (क) अर्जुन ने बाण बरसाए थे। (ख) तुम तुरंत निकल गए थे।
   (ग) सुहानी स्कूल नहीं जाती है। (घ) मयंक खाना खा रहा है।
   (ङ) सोहन पढ़ता तो उत्तीर्ण हो गया होता।
5. (क) जाएँगे सकर्मक क्रिया (ख) कर दिया सकर्मक क्रिया (ग) आएगी अकर्मक क्रिया
   (घ) रखा है सकर्मक क्रिया (ङ) हो गये सकर्मक क्रिया (च) पहुँचते अकर्मक क्रिया
   (छ) खा लिया सकर्मक क्रिया (ज) हुई अकर्मक क्रिया
6. (क) राम, श्याम घूमते होंगे। (ख) तुम खेलते तो जीत जाते।
   (ग) शायद आज बुआ जी आएँगी। (घ) रोहन पत्र लिख रहा है।
   (ङ) गजल समाप्त हो गयी।
7. होना — (i) बारिश हो रही है। (ii) कल परीक्षा परिणाम घोषित हुआ।
   जाना — (i) राम आगरा जाएगा। (ii) संजय अजमेर जाता है।
   मिलना — (i) मेले में बालक मिल गया था। (ii) दोनों भाई गले मिलते हैं।
   (iii) मैं कल भाई से मिलूँगा।
   देखना — (i) मैंने प्रकृति का मनोरम दृश्य देखा था। (ii) मोहन चित्तौड़ का किला देखेगा।
   (iii) सीता चित्र देखती है।

● *खेल-खेल में*

संदिग्ध वर्तमान काल	भविष्यत् काल
1. राज जाता होगा।	राज जाएगा।
2. बच्चे फुटबॉल खेलते होंगे।	बच्चे फुटबॉल खेलेंगे।
3. रघु पढ़ता होगा।	रघु पढ़ेगा।

● *स्वयं करिए*

1. पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है। 2. बादलों में इन्द्रधनुष चमकता है।
3. पहाड़ों पर बर्फ पड़ रही है। 4. अमावस्या को चाँद छिप जाता है।
5. पूर्णिमा को चाँद चाँदनी बिखेरता है।

अध्याय-14 वाच्य

● *पुस्तक से*

1. **वाच्य**—क्रिया का वह रूप जो कर्त्ता, कर्म, भाव के अनुसार परिवर्तित होता है, वाच्य कहलाता है।
   जैसे— राम पढ़ाई करता है। इस वाक्य में क्रिया कर्त्ता के अनुसार परिवर्तित होती है।
   राम के द्वारा पढ़ाई की जाती है। इस वाक्य में क्रिया कर्म के अनुसार परिवर्तित होती है।
   राम से पढ़ाई नहीं की जाती है। इस वाक्य में क्रिया भाव के अनुसार परिवर्तित होती है।
2. वाच्य के तीन भेद होते हैं— कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य।
   1. **कर्तृवाच्य**—क्रिया के जिस रूप से पता चले कि वह (क्रिया) कर्ता के अनुसार परिवर्तित होती है कर्तृवाच्य कहलाती है।
   2. **कर्मवाच्य**—कर्म के लिंग एवं वचन के अनुसार क्रिया में होने वाले परिवर्तन को कर्मवाच्य कहते हैं।
   3. **भाववाच्य**—भाव के अनुसार क्रिया में होने वाले परिवर्तन को भाववाच्य कहते हैं।
3. (क) माँ के द्वारा रोटी बनाई जाती है।
   (ख) रोहन के द्वारा रोया जाता है।
   (ग) मयंक के द्वारा बैडमिंटन खेला जाता है।
   (घ) बंदर के द्वारा अमरूद खाया जा रहा है।
   (ङ) माली के द्वारा फूल तोड़े गये।
   (च) सोहन के द्वारा चित्र बनाया जाता है।
   (छ) हमारे द्वारा गाना गाया जा रहा है।
4. (क) बच्चों से लड़ा जाता है।
   (ख) सबसे खेला जा रहा है।
   (ग) बूढ़ी औरत से चला नहीं जाता है।
   (घ) मुझसे पढ़ाई नहीं हो पाती है।
   (ङ) समीर कक्षा में शांत रह पाता है।
   (च) मोहन कार चला पाता है।
   (छ) महात्मा गाँधी अहिंसा का पाठ पढ़ा पाते है।
   (ज) रोहन मोबाइल में गेम खेल पाता है।
5. (क) भाववाच्य (ख) कर्तृवाच्य (ग) भाववाच्य (घ) कर्मवाच्य (ङ) कर्तवाच्य
   (च) भाववाच्य (छ) भाववाच्य

● *स्वयं कीजिए*

कर्तृवाच्य— 1. मम्मी ने खाना बना दिया।
2. माली ने फूल तोड़ लिये।

कर्मवाच्य— 1. चालक के द्वारा बस चलायी जाती है।
2. दूध वाले के द्वारा दूध दिया जाता है।

भाववाच्य— 1. मम्मी, मैं खाना नहीं खा पाऊँगा।
2. भइया बाजार नहीं जा पाएँगे।

अध्याय-15 वाक्य विचार

● *पुस्तक से*

1. **वाक्य**—शब्दों के सार्थक मेल को वाक्य कहते हैं।

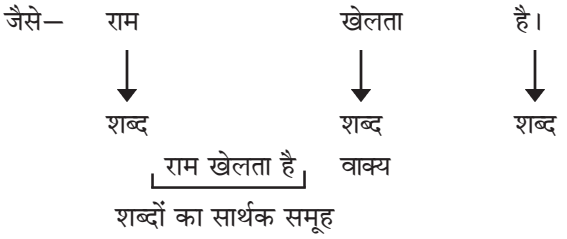

2. वाक्य के दो भेद होते हैं—

1. **रचना के आधार पर वाक्य भेद**—रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं—
   (क) सरल/साधारण वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) मिश्र वाक्य।
2. **अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद**—अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं—
   (क) विधानवाचक वाक्य (ङ) संदेहवाचक वाक्य
   (ख) निषेधवाचक वाक्य (च) संकेतवाचक वाक्य
   (ग) प्रश्नवाचक वाक्य (छ) इच्छावाचक वाक्य
   (घ) आज्ञावाचक वाक्य (ज) विस्मयादिबोधक वाक्य

3. (क) संकेत वाचक वाक्य (ख) सरल वाक्य (ग) मिश्र वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य (ङ) मिश्र वाक्य (च) सरल वाक्य (छ) मिश्र वाक्य।

4. (क) उद्देश्य – बच्चे विधेय— जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं।
   (ख) उद्देश्य – दूध वाला विधेय— आज थोड़ी देर से आया।
   (ग) उद्देश्य – अखबार वाला विधेय— पैसे ले गया पर अखबार नहीं डाला।
   (ङ) उद्देश्य – बच्चों विधेय— के गिरने का डर है।
   (च) उद्देश्य – हवा विधेय— बड़ी जोर से चल रही है।
   (छ) उद्देश्य – दिल्ली विधेय— कड़ाके की ठंड पड़ रही है।

5. (क) क्या बाहर रिक्शा खड़ा है?
   (ख) क्या बस को निकलते हुए देर हो गयी?
   (ग) उम्मीद है आज पहाड़ों पर बर्फ गिरेगी।
   (घ) मैना रोती हुई बाहर आ रही है।
   (ङ) किताब पढ़कर अलमारी में रख दो।
   (च) उठ जाओ और नहा लो।

6. (क) उद्देश्य (ख) प्रश्न (ग) आठ (घ) सरल (ङ) वाक्य

● *खेल-खेल में*

1. रसोई में खाना बना रही है।
   उद्देश्य – खाना विधेय— रसोई में बना रही है।

2. कमरे में पढ़ाई कर रहा है।
   उद्देश्य – पढ़ाई विधेय– कमरे में कर रहा है।
3. बाहर खेलने गई है।
   उद्देश्य – खेलने विधेय– बाहर गई है।
4. समाज कार्य में भाग ले रहा है।
   उद्देश्य – भाग विधेय– समाज कार्य में ले रहा है।

अध्याय–16 अशुद्ध–शुद्ध वाक्य

● *पुस्तक से*

1. (क) मुझे एक संतरा छीलकर देना। (ख) आपकी बीमारी एक समस्या है।
   (ग) सभी यहाँ आये थे। (घ) उसने कहा, चलो उठो।
   (ङ) मशीन तेज चल रही है। (च) उसकी आवाज बहुत मधुर है।
   (छ) मैंने और मनन ने किताब पढ़ी।
2. (क) 1. बादल भयानक से गरजने लगे। बादल जोर–जोर से गरजने लगे।
   2. कूड़ा यहाँ नहीं फेंका। कूड़ा यहाँ मत फेंको।
   (ख) 1. शुद्ध गाय का दूध लाना। गाय का शुद्ध दूध लाना।
   2. वह पागल आदमी हो गया है। वह आदमी पागल हो गया है।
   (ग) 1. हम अभी जाता हूँ। हम अभी जाते हैं।
   2. मेरे तो प्राण ही सूख गया। मेरे तो प्राण ही सूख गये।

● *खेल-खेल में*

अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**
साइकिल में बैठो	साइकिल पर बैठो।
मोहन को गरम करके खाना खिलाओ	मोहन को खाना गरम करके खिलाओ।
तुमने कौन सी पुस्तक पढ़ा	तुमने कौन सी पुस्तक पढ़ी।
आप अवश्य सुने होंगे	आपने अवश्य सुना होगा।

● *स्वयं कीजिए*

शूर – वीर, सूर – अंधा। ग्रह – नक्षत्र, गृह – घट । अंश – भाग, अंस – कंधा।

अध्याय–17 पदबंध और उपवाक्य

● *पुस्तक से*

1. **पदबंध**—पदों का वह मेल जो व्याकरणिक रूप से पद की भाँति कार्य करें, पदबंध कहलाता है।

उदाहरण—	शब्द	पद	पदबंध
	तोता	तोता मिर्ची खाता है।	हरे रंग का तोता मिर्ची खाता है।

2. आश्रित वाक्यों को उपवाक्य कहा जाता है। उपवाक्य के दो भेद होते हैं–
   1. प्रधान उपवाक्य 2. आश्रित उपवाक्य

3. **क्रिया विशेषण उपवाक्य**—जो उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण उपवाक्य कहते हैं। उदाहरण— मैं तैयार हो रहा था कि कुछ लोग घर आ गये। मैं चलते-चलते थक गया तब बैठ गया। प्रधान वाक्य में तैयार हो रहा था तथा जब मैं चलते-चलते थक गया में क्रिया तैयार होना तथा चलते-चलते थकना क्रिया की विशेषता बता रहे हैं।

4. (क) दिन-रात मेहनत करने वाले के भी कभी-कभी कम अंक आ जाते हैं। — संज्ञा पदबंध
(ख) वह आया और चला गया। — क्रिया पदबंध
(ग) दूसरों की सहायता करने वाला रोहन आज बिल्कुल अकेला है। — विशेषण पदबंध
(घ) कल की बजाय आप आज ही आ जाइए। — क्रिया पदबंध
(ङ) जो बहादुर होते हैं वे कभी हार नहीं मानते। — क्रिया पदबंध
(च) पत्ते-हिलकर हवा तेज होने का संकेत कर रहे हैं। — क्रिया पदबंध
(छ) दिनभर लोगों को हँसाने वाला मोहन आज कितना शांत है। — विशेषण पदबंध
(ज) समाचार पढ़ते ही सबके चेहरे सफेद पड़ गये। — क्रिया पदबंध

5. (क) 1. अध्यक्ष जी से अनुरोध करूँगा कि वे आएँ और दो शब्द कहें।
2. महात्मा गाँधी ने कहा, ''करो या मरो''।
(ख) 1. वह लड़का जो सामने खड़ा है, बहुत बुद्धिमान है।
2. पकड़ा गया आदमी, इस इलाके का गुंडा है।
(ग) 1. मैं तैयार हो रहा था कि कुछ लोग घर आ गये।
2. जब मैं चलते-चलते थक गया, तब बैठ गया।

● *खेल-खेल में*

अंतर—वे शब्द जिससे किसी कार्य के किए जाने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं, जबकि क्रिया शब्द की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

क्रिया पदबंध—वे पदबंध जिनमें क्रिया के रूपों का प्रयोग मुख्य रूप से किया गया हो, उसे क्रिया पदबंध कहते हैं। जैसे—बच्चा दौड़ते-दौड़ते थक गया।

क्रिया विशेषण पदबंध—जो उपवाक्य मुख्य उपवाक्य क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे— जब मैं चलते-चलते थक गया, तब बैठ गया।

अध्याय-18 विराम-चिह्न

● *पुस्तक से*

1. **विराम चिह्न**—लिखते समय विराम अवस्था को प्रकट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, विराम चिह्न कहलाते हैं।
2. **योजक चिह्न (-)**—वाक्यों में जब समान या विपरीत शब्द एक साथ आते हैं तो उन शब्दों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है। जैसे— माता - पिता, छोटा - बड़ा।
निर्देशक चिह्न (—)—वाक्य पूरा होने के पश्चात् जब उससे संबंधित उदाहरणों की ओर संकेत या निर्देश किया जाता है, तब निर्देशक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे— महात्मा गाँधी ने कहा— अहिंसा परम धर्म है।
3. (क) आज हम घर वापस क्यों नहीं चल सकते ?
(ख) सुभाषचंद्र बोस ने कहा—''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

(ग) अरे ! आज ही निकल पड़े तुम।

(घ) बच्चा बोला—''आज हम-आप बैडमिंटन खेलेंगे।''

(ङ) तुम एल० एल० बी० क्यों नहीं कर लेते?

4. (क) विस्मयादिबोधक चिह्न (ख) एकल उद्धरण चिह्न
(ग) प्रश्नवाचक चिह्न (घ) विवरण चिह्न
(ङ) योजक चिह्न (च) निर्देशक चिह्न

5. बरसात की एक अँधेरी रात थी। एक आदमी साधारण कपड़े पहने, नगर के तंग रास्तों में से चौकन्ना होकर आगे बढ़ रहा था। घोड़े पर सवार वह जैसे ही एक गली में मुड़ा कि पीछे से ये शब्द उसके कानों में पड़े— ''रुक जा।'' वह बिना कुछ सुने, रुके, अपनी चाल चलता रहा। आगे पलभर में दस-बारह डाकुओं ने उसे घेर लिया। मोटा-तगड़ा उनका सरदार गरजकर बोला- ''अबे सुनाई नहीं देता। उतर घोड़े से ।'' फिर दो डाकुओं ने उसे खींचकर नीचे उतार दिया। तभी बिजली चमकी तो उसका सफेद रंग का सुंदर घोड़ा देखकर बोला— ''मालदार लगता है।''

- 'चाचा नेहरू', 'नेताजी' 'मिसाइल मैन'

● *स्वयं कीजिए*

किसी कथन या वाक्य को बिना किसी परिवर्तन के लिखने पर दुहरा उद्धरण चिह्न लगाया जाता है । किसी विशेष व्यक्ति, पुस्तक, वस्तु का नाम या उपनाम के साथ एकल उद्धरण चिह्न लगाया जाता है।

उदाहरण— लाल बहादुर शास्त्री ने कहा—''जय जवान, जय किसान''। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', 'रामचरित मानस'।

अध्याय-19 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

मुहावरे

● *पुस्तक से*

1. (क) पछताना — समय पर पढ़ लेते तो आज हाथ मलना नहीं पड़ता।
(ख) जान की परवाह न करना — वीर सैनिक देशहित के लिए जान की परवाह नहीं करते।
(ग) हार मानना — वीर पुरुष के सामने दुश्मन पीठ दिखा गया।
(घ) बहुत कठिन काम — आजकल सरकारी नौकरी पाना टेढ़ी खीर है।
(ङ) पराजित होना — भारतीय वीरों के सामने चीनी सैनिकों के पाँव उखड़ गए।
(च) नींद न आना — कठिन परिस्थितियों में तारे गिनना स्वाभाविक ही है।
(छ) कार्य पूर्ण होना — बेटी की शादी करके माँ-बाप गंगा नहा लिए।
(ज) बहुत प्रिय होना — बच्चे माँ की आँखों के तारा होते हैं।

2. (क) कीचड़ उछालना। (ख) हथेली का आँवला होना।
(ग) फूटी आँख न सुहाना। (घ) दाँत काटी रोटी होना।
(ङ) टाँग अड़ाना। (च) टका-सा जवाब देना।
(छ) हाथ सिकोड़ना।

3. (क) एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं। (ख) उँगलियों पर नचाते हैं।
(ग) गला काटते हैं। (घ) टका सा जवाब दे दिया।
(ङ) मुँह में पानी आ गया। (च) टेढ़ी खीर है।
(छ) दाँत काटी रोटी है।

4. (क) मोहन अभी दसवीं पास भी नहीं हुआ और हवाई किले बनाने लगा है।
   (ख) नेताजी को राजनीति समझाना सूरज को दिया दिखाना है।
   (ग) सतीश के अधिकारी बनने से उसके पिताजी सिर उठाकर चलते हैं।
   (घ) रेखा ने बात करके मीनू का दिमाग चाट लिया।
   (ङ) मेरा दोस्त बहुत छुपा रुस्तम है।
   (च) प्रधान ने सबके सामने महेश की पगड़ी उछाल दी।
   (छ) रोहन परीक्षा के समय बगलें झाँकने लगा।

● *खेल-खेल में—*

(क) आटे दाल का भाव मालूम होना। (ख) आँखों का तारा।
(ग) गुड़ गोबर कर देना। (घ) अँगुलियों पर नचाना।
(ङ) जले पर नमक-मिर्च छिड़कना।

लोकोक्तियाँ

● *पुस्तक से —*

1. लोकोक्तियाँ आम जनता के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गयी उक्तियाँ, लोकोक्तियाँ कहलाती हैं। जैसे— अंधों में काना राजा।
2. विशिष्ट अर्थ देने वाले वाक्यांशों को मुहावरा कहते हैं। ये वाक्य में आकर उनका अर्थ बदल देते हैं, जबकि लोकोक्ति का अर्थ है— आम जनता के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गई। लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण वाक्य होते हैं। इसका प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप से होता है।
3. (क) अनपढ़ होना (ख) योग्यता से अधिक बोलना
   (ग) शक्तिशाली की जीत होना (घ) स्वयं अच्छा तो संसार अच्छा।
4. (क) कालाबाजारी करने वाले सोचते हैं कि वे हमेशा बचे रहेंगे, गिरफ्तारी से यह सिद्ध हुआ जैसी करनी वैसी भरनी।
   (ख) तिजोरी चोरी करके चोरों ने खोला तो देखा तो वह खाली निकली, खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
   (ग) काम निकलने के बाद उसने संतोष को अँगूठा दिखा दिया। सही है, ओछे की प्रीत बालू की भीत।
   (घ) अज्ञानी आदमी सभी के सामने अधिक बोल रहा था, तभी किसी ने टोका— थोथा चना बाजे घना।
   (ङ) घर पर पूजा करके महेश बोला— मन चंगा तो कठौती में गंगा।
   (च) अनपढ़ दीपक हर जगह डींगें मारता-फिरता है, सच ही है अधजल गगरी छलकत जाए।

● *खेल-खेल में—*

(क) आम के आम गुठलियों के दाम। (ख) नाकों चना चबाना।
(ग) चोर की दाढ़ी में तिनका। (घ) खोदा पहाड़ निकला चूहा।

रचना

अध्याय–1 संवाद लेखन

अपने आस—पास की स्वच्छता बनाए रखने के लिए छात्रों में परस्पर संवाद।

कबीर – हमारे देश में इतनी ज्यादा गंदगी क्यों है ?

कमल – हम भारत को स्वच्छ रखने पर समुचित ध्यान नहीं देते हैं।

कबीर – मैं एक नागरिक के रूप में क्या कर सकता हूँ?

कमल – हमें घरेलू कचरे को सड़क के किनारे रखे हुए कचरा पात्रों में डालना चाहिये। हमें अपने घर के सामने के सार्वजनिक मार्ग (सड़क) को साफ रखना चाहिये। हमें प्रत्येक रविवार या अन्य अवकाश के दिन एक घण्टा सामुदायिक सफाई के लिये अर्पित करना चाहिये। हमें सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी करने से बचना चाहिये। हमें दीवारों, पगडंडियों और सड़कों पर थूकने से अपने आप को रोकना चाहिये। हमें खुली जगह में मूत्र व मल त्याग करने से बचना चाहिये।

कबीर – एक नागरिक के रूप में मुझे क्या नहीं करना चाहिये?

कमल – हमें सड़कों पर कूड़ा–करकट नहीं फेंकना चाहिये। हमें बस व रेल के डिब्बों में छिलके व अन्य कचरे से गंदगी नहीं फैलानी चाहिए। हमें प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। हमें दीवारों पर पोस्टर नहीं चिपकाने चाहिये। हमें बचा हुआ भोजन (झूठन) नहीं फेंकना चाहिये।

कबीर – क्या भारत सरकार ने स्वच्छ भारत के लिए कोई कार्य–योजना शुरू नहीं की है ?

कमल – अरे ! हाँ, भारत सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया है। ग्रामीण व शहरी भारत को आने वाले पाँच वर्षों में साफ बनाना है।

कबीर – यदि हम सब नागरिक इन नियमों का पालन करें तो हम स्वच्छ भारत के लिये योगदान कर सकते हैं।

कमल – हाँ, मैं आशा करता हूँ विद्यार्थी और नागरिक भारत की स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।

अध्याय–2 कहानी लेखन

खरगोश और कछुआ

किसी जंगल में तालाब के किनारे एक खरगोश और कछुआ निवास करते थे। इन दोनों में अच्छी मित्रता थी। खरगोश अपनी तेज चाल एवं कछुआ अपनी धीमी चाल के लिए प्रसिद्ध था। खरगोश को अपनी तेज चाल पर अभिमान था। इसी कारण एक दिन वह कछुए की धीमी चाल का मजाक उड़ाने लगा। खरगोश की बात कछुए को बुरी लगी। उसने कहा कि " भले ही तुम्हारी चाल तेज है किन्तु यदि दौड़ हुई तो मैं तुम्हें हरा दूँगा।" शीघ्र ही दौड़ प्रारम्भ हो गई। खरगोश बहुत कम समय में बहुत दूर निकल गया। इधर कछुआ अपनी धीमी चाल से चलता रहा। लगभग एक किलोमीटर की दूरी तय कर खरगोश रुका और पीछे मुड़कर देखा। कछुए का कहीं अता–पता नहीं था। जब खरगोश को कछुआ दिखाई नहीं दिया तो उसने सोचा कि कुछ देर आराम कर लिया जाय। उसके मन में यह बात थी कि जब कछुआ दिखाई देगा तो वह उठकर तेजी से दौड़ लेगा। इस प्रकार आराम करने के चक्कर में उसे नींद आ गई। इधर

कछुआ लगातार चलता रहा। खरगोश देर तक सोता रहा। जब उसकी नींद खुली तो कछुआ फिर दूर तक नजर नहीं आया। वह अचानक उठा एवं तेजी से मंजिल की ओर बढ़ने लगा किन्तु वहाँ पहुँचने पर उसके होश उड़ गए। यह क्या कछुआ तो वहाँ पहले से ही मौजूद था। खरगोश हार चुका था। उस दिन से उसने कछुए का मजाक उड़ाना बंद कर दिया।

अध्याय–4 पत्र लेखन

विद्यालय छोड़ने के प्रमाण पत्र हेतु प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र।

सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उ. मा. विद्यालय, सूरतगढ़ ।
विषय – स्थानांतरण प्रमाण–पत्र (टी.सी.) के संबंध में।
मान्यवर,
विनम्र निवेदन है कि मेरे पिताजी न्याय–विभाग में कार्यरत हैं । उनका स्थानांतरण सूरतगढ़ से जयपुर हो गया है । मुझे भी अपने पिताजी के साथ जयपुर जाना है । अत: श्रीमानजी से अनुरोध है कि मुझे अपने विद्यालय से स्थानांतरण प्रमाण–पत्र दिलवाने की कृपा करें, ताकि मैं जयपुर के राजकीय विद्यालय में प्रवेश लेकर अपना अध्ययन जारी रख सकूँ ।
इस कृपा के लिए मैं सदैव आपका आभारी रहूँगा ।
दिनांक –25 दिसंबर, 20––

आपका आज्ञाकारी शिष्य
रोहित नंदन
कक्षा 8 अ

अध्याय–5 निबन्ध लेखन

खुला शौच मुक्त गाँव

'खुला शौच मुक्त' से आशय– 'खुला शौच मुक्त' को सरल भाषा में कहें तो 'खुले में शौच क्रिया से मुक्त होना' इसका आशय है। ऐसा गाँव जहाँ लोग बाहर खेतों या जंगलों में शौच के लिए न जाते हों, घरों में ही शौचालय हों, 'खुला शौच' मुक्त गाँव कहा जाता है। गाँवों में खुले में शौच के लिए जाने की प्रथा शताब्दियों पुरानी है। जनसंख्या सीमित होने तथा सामाजिक मर्यादाओं का सम्मान किए जाने के कारण इस परंपरा से कई लाभ जुड़े हुए थे। गाँव से दूर शौच क्रिया किए जाने से 'मैला ढोने' के काम से मुक्ति तथा स्वच्छता दोनों का संधान होता था। मल स्वत: विकिरित होकर खेतों में खाद का काम करता था। पर आज की परिस्थितियों में खुले में शौच, रोगों को खुला आमंत्रण बन गया है। साथ ही इससे उत्पन्न महिलाओं की असुरक्षा ने इसे विकट समस्या बना दिया है। अत: इस परंपरा का स्वच्छता, स्वास्थ्य और महिला सुरक्षा की दृष्टि से यथाशीघ्र समाधान परम आवश्यक हो गया है।

सरकारी प्रयास–कुछ वर्ष पहले तक इस दिशा में सरकारी प्रयास शून्य के बराबर ही थे। गाँवों में कुछ सम्पन्न और सुरुचि युक्त परिवारों के घरों में ही शौचालय का प्रबन्ध होता था। वह भी केवल महिला सदस्यों के लिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने

जब ग्रामीण महिलाओं और विशेषकर किशोरियों के साथ होने वाली लज्जाजनक घटनाओं पर ध्यान दिया तो स्वच्छता अभियान के साथ 'खुला शौच मुक्त गाँव अभियान' को भी जोड़ दिया। इस दिशा में सरकारी प्रयास निरंतर चल रहे हैं। घरों में शौचालय बनाने वालों को सरकार की ओर से आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। समाचार पत्रों तथा टी.वी. विज्ञापनों में प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से घरों में शौचालय बनाने की प्रेरणा दी जा रही है।

जन जागरण– किसी प्राचीन कुप्रथा से मुक्त होने में भारतीय ग्रामीण समुदाय को बहुत हिचक होती है। उन पर सरकारी प्रयासों की अपेक्षा, अपने बीच के प्रभावशाली व्यक्तियों, धार्मचार्यों तथा मनोवैज्ञानिक प्रेरणाओं का प्रभाव अधिक पड़ता है। अत: 'खुले में शौच' की समाप्ति के लिए जन जागरण परम आवश्यक है। इसके लिए कुछ स्वयंसेवी संस्थाएँ भी प्रयास कर रही हैं। इसके साथ ही धार्मिक आयोजन में प्रवक्ताओं द्वारा इस प्रथा के परिणाम से अवगत कराया जाना चाहिए। शिक्षक, छात्र–छात्राओं को रैलियों का सहारा लेना चाहिए। गाँव के शिक्षित युवाओं को इस प्रयास में हाथ बँटाना चाहिए। ऐसे जन जागरण के प्रयास मीडिया द्वारा तथा गाँव के सक्रिय किशोरों और युवाओं द्वारा किए भी जा रहे हैं। खुले में शौच करते व्यक्ति को देखकर सीटी बजाना ऐसा ही रोचक प्रयास है।

हमारा योगदान– 'हमारा योगदान' शब्दों में 'हमारा' के अंतर्गत छात्र–छात्राओं, शिक्षक, राजनेता, व्यवसायी, जागरूक नागरिक आदि सभी लोग सम्मिलित हैं। सभी के सामूहिक प्रयास से बुराई को समाप्त किया जा सकता है। ग्रामीण जनता को खुले में शौच से होने वाली हानियों के बारे में समझाना चाहिए। उन्हें बताया जाना चाहिए कि इससे रोग फैलते हैं और धन तथा समय की बरबादी होती है। साथ ही यह एक अशोभनीय आदत है। यह महिलाओं के लिए अनेक समस्याएँ और संकट खड़ी कर देती है। घरों में छात्र–छात्राएँ अपने माता–पिता आदि को इससे छुटकारा पाने के लिए प्रेरित करें।

उपसंहार– खुले में शौच मुक्त गाँवों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। सरकारी प्रयासों के अतिरिक्त ग्राम–प्रधानों तथा स्थानीय प्रबुद्ध और प्रभावशाली लोगों को आगे आकर इस अभियान में रुचि लेनी चाहिए। इससे न केवल ग्रामीण भारत को रोगों, बीमारियों पर होने वाले व्यय से मुक्ति मिलेगी बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की छवि भी सुधेरगी।